

RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

महानगर मेट्रो
राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें
सरबजीत माकन
+91-9638877700
mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष :16 । अंक: 84 । पेज:12। mahanagarmetro7@gmail.com || अहमदाबाद, 24 नवम्बर 2026 (मंगलवार) || सम्पादक - सरबजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.-/

पुलिसकर्मियों पर चाकू से हमला करने वाला आरोपी मुठभेड़ में घायल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली के जामा मस्जिद थाने में पुलिसकर्मियों पर चाकू से हमला करने वाले आरोपी नबील को सोमवार शाम पुलिस ने मुठभेड़ के बाद पकड़ लिया। पुलिस की गोली आरोपी के पैर में लगी, जिसके बाद उसे उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। जानकारी के अनुसार, पारिवारिक विवाद के चलते नबील की मां और बहन ने पुलिस से शिकायत की थी। इसके बाद उसे पूछताछ के लिए थाने बुलाया गया। दोपहर करीब ढाई बजे वह चाकू लेकर पहुंचा और अचानक पुलिसकर्मियों पर हमला कर दिया। इस दौरान उसने जवानों के चेहरे और गले पर वार किए तथा बाइक लेकर फरार हो गया। बाद में चितली कब्र इलाके में पुलिस ने उसे पकड़ने की कोशिश की तो उसने फिर चाकू से हमला कर दिया। इस पूरी घटना में नौ पुलिसकर्मी घायल हुए हैं, जिनमें तीन की हालत गंभीर बताई जा रही है। उन्हें सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार, आरोपी के खिलाफ पहले भी मामला दर्ज है। अब उसके विरुद्ध जामा मस्जिद और चांदनी महल थानों में भी मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं।



2027 के चुनाव की आहट: भाजपा में पुराने चेहरों की वापसी की चर्चा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद/गांधीनगर। गुजरात में वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर अभी से राजनीतिक हलचल तेज होने लगी है। भारतीय जनता पार्टी में टिकट वितरण और नए-पुराने चेहरों को अवसर देने को लेकर चर्चाएं शुरू हो गई हैं। वर्ष 2022 के चुनाव में जिन पुराने नेताओं के टिकट काटे गए थे या जो लंबे समय से राजनीति में निष्क्रिय थे, उनमें से कुछ के दोबारा सक्रिय होने की चर्चा है। इस बीच कार्यकर्ताओं के एक वर्ग में ऐसे नेताओं से सावधान रहने की अपील की जा रही है, जिन्हें जनता के बीच अपना प्रभाव खो चुके चेहरे माना जाता है। उनका कहना है कि जो नेता पांच साल तक जनता की समस्याओं से दूर रहे और केवल चुनाव नजदीक आने पर सक्रिय हुए, उन्हें दोबारा अवसर देने से पहले उनके कामकाज का आकलन जरूरी है। वर्ष 2022 में भाजपा ने बड़ी संख्या में नए चेहरों को मौका देकर ऐतिहासिक जीत हासिल की थी। हालांकि, पार्टी में अनुभवी नेताओं की भूमिका को लेकर भी अलग-अलग मत हैं। कुछ लोग नए और युवा चेहरों को आगे बढ़ाने के पक्ष में हैं, जबकि दूसरा वर्ग अनुभवी नेताओं की वापसी को जरूरी मानता है। फिलहाल इस पूरी बहस का मुख्य संदेश यही है कि टिकट का आधार नेता की पुरानी पहचान या पद नहीं, बल्कि उसका काम होना चाहिए। जनता के बीच सक्रियता, विकास कार्य और मुश्किल समय में लोगों के साथ खड़े रहने वाले नेताओं को ही प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

दाणीलीमड़ा में महिला 1.37 लाख रुपये के एमडी मादक पदार्थ के साथ गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। शहर में मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध बिक्री के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत अपराध शाखा ने दाणीलीमड़ा क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए एक महिला को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने संतोषनगर इलाके से हसीना शेख नाम की महिला को 45.980 ग्राम मेफेड्रोन (एमडी) के साथ पकड़ा है। जब्त मादक पदार्थ की कीमत करीब 1 लाख 37 हजार रुपये बताई गई है। महिला की गिरफ्तारी के बाद पुलिस अब इस कारोबार से जुड़े अन्य लोगों और आपूर्ति के पूरे तंत्र का पता लगाने में जुटी है। पुलिस को दाणीलीमड़ा क्षेत्र में प्रतिबंधित मादक पदार्थ की अवैध बिक्री होने की सूचना मिली थी। इस सूचना के आधार पर अपराध शाखा की टीम ने संतोषनगर इलाके में दबिश दी। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने हसीना शेख को संदिग्ध अवस्था में पकड़ा। तलाशी लेने पर उसके पास से पाउडर जैसा पदार्थ बरामद हुआ। प्रारंभिक जांच में इसकी पहचान मेफेड्रोन के रूप में हुई।

45.980 ग्राम मादक पदार्थ जब्त

पुलिस के अनुसार, महिला के कब्जे से कुल 45.980 ग्राम एमडी मादक पदार्थ बरामद किया गया है। इसकी अनुमानित कीमत 1 लाख 37 हजार रुपये आंकी गई है। पुलिस ने मादक पदार्थ जब्त कर महिला के खिलाफ स्वापक औषधि एवं मनःप्रभावी पदार्थ अधिनियम (एनडीपीएस) के तहत मामला दर्ज किया है। पूछताछ में पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि महिला मादक पदार्थ कहां से लेकर आई थी और शहर में किन लोगों तक इसकी आपूर्ति की जाती थी।

नशे की गिरफ्त में आने से बिखर जाते हैं परिवारों के सपने: प्रधानमंत्री मोदी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कहा कि जब कोई युवा नशे की गिरफ्त में आता है तो उसके साथ पूरे परिवार के सपने बिखर जाते हैं। देश का हर युवा नशे से दूर रहकर अपने सपनों को पूरा करे और जीवन में आगे बढ़े। इस प्रयास में परिवारों, गुरुद्वारों और संगत की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रधानमंत्री ने यह बात दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू के आवास पर आयोजित प्रकाश पर्व समारोह में कही। इस दौरान उन्होंने शबद कीर्तन में हिस्सा लिया और गुरबानी सुनी।

मोदी ने कहा कि गुरु नानक देव जी कीर्तन को साधना और ज्ञान का सागर मानते थे। गुरुद्वारों में मत्था टेकना, लंगर ग्रहण करना और सिख संतों की संगत उनके जीवन का हिस्सा रहा है। उन्होंने गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान के 350 वर्ष पूरे होने का उल्लेख करते हुए कहा कि सिख परंपरा राष्ट्र और संस्कृति के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देती है।

करजण में अवैध रेत खनन पर घमासान: लीज रद्द होने के बावजूद नर्मदा में धड़ल्ले से चल रही हैं मशीनें, स्थानीय प्रशासन और खनिज विभाग की कार्यप्रणाली पर उठे सवाल

नियमों की अनदेखी: प्रतिबंधित 'बार्ज' मशीनों से अवैध खनन और रॉयल्टी पास से दोगुना ओवरलोड परिवहन किए जाने के गंभीर आरोप

प्रशासनिक निष्क्रियता: वडोदरा खान एवं खनिज विभाग के अधिकारी गामित और गांधीनगर फ्लाइंग स्क्वाड को बार-बार शिकायत के बावजूद कार्रवाई न होने से बढ़ा आक्रोश

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

वडोदरा / करजण। वडोदरा जिले के करजण पेंथक में नर्मदा नदी के तट से हो रहे कथित अवैध रेत और मिट्टी खनन का मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का आरोप है कि राज्य सरकार द्वारा क्षेत्र में रेत और मिट्टी की तमाम लीज रद्द किए जाने के बावजूद, खनन गतिविधियां बिना किसी रोक-टोक के जारी हैं। इस पूरे प्रकरण में स्थानीय राजनीतिक संरक्षण और प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

प्रतिबंधित मशीनों का उपयोग और ओवरलोडिंग के आरोप

स्थानीय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, नदी के पात्र में खनन के लिए प्रतिबंधित मानी जाने वाली 'बार्ज' और भारी हाइड्रोलिक मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। आरोप है कि दिन-रात चलने वाले इस खनन से हजारों टन रेत निकाली जा रही है। इसके अलावा, परिवहन नियमों का उल्लंघन करते हुए 23 टन की क्षमता वाले रॉयल्टी पास पर 54 टन से अधिक रेत भरकर ओवरलोड ट्रक चलाए जा रहे हैं। यह भी कहा जा रहा है कि एक ही रॉयल्टी पास की आड़ में कई ट्रकों का संचालन कर सरकारी राजस्व को भारी नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

'बापजी' ब्रांडेड वाहनों और सिंडिकेट की चर्चा

क्षेत्र में चल रहे इस कथित सिंडिकेट को लेकर स्थानीय स्तर पर कई तरह की चर्चाएं गर्म हैं। सूत्रों का दावा है कि करजण इलाके में घुघो भरवाड़ और गोकुल भरवाड़ नामक व्यक्तियों द्वारा इस पूरे नेटवर्क को संचालित किया जा रहा है। स्थानीय लोगों और ट्रांसपोर्टरों के बीच यह आरोप चर्चा का विषय बना हुआ है कि जिन वाहनों पर 'बापजी' लिखा होता है, उन्हें जांच से कथित तौर पर छूट मिल जाती है। चर्चा यह भी है कि करजण के विधायक अक्षय पटेल के नाम का हवाला देकर और इस विशेष पहचान ('बापजी') के उपयोग के बदले अन्य वाहन मालिकों से कथित तौर पर 60,000 रुपये प्रतिमाह तक की वसूली की जाती है।

खनिज विभाग के अधिकारी और प्रशासन की चुप्पी पर सवाल

इस पूरे मामले में सबसे अधिक नाराजगी वडोदरा खान एवं खनिज विभाग की कार्यप्रणाली को लेकर देखी जा रही है।



विधायक अक्षय पटेल

स्थानीय शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि वडोदरा खनिज विभाग के अधिकारी श्री गामित को इस अवैध खनन और ओवरलोडिंग के संबंध में बार-बार लिखित और मौखिक शिकायतें दी गईं, लेकिन इसके बावजूद धरातल पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। लोगों का आरोप है कि खनन माफियाओं द्वारा कथित रूप से आर्थिक लेन-देन के जरिए निचले से लेकर ऊपरी स्तर तक के तंत्र को 'मैनेज' कर लिया गया है। यही कारण है कि कलेक्टर कार्यालय, एसडीएम, स्थानीय पुलिस, भूविज्ञान एवं खनन विभाग के कमिश्नर धवल पटेल और गांधीनगर की फ्लाइंग स्क्वाड की ओर से भी इस मामले में अभी तक कोई बड़ी दंडात्मक कार्रवाई देखने को नहीं मिली है।



घुघो भरवाड़

निष्पक्ष जांच और सख्त कार्रवाई की मांग

क्षेत्र के जागरूक नागरिकों और सामाजिक संगठनों ने मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और राज्य के खनन विभाग से इस पूरे प्रकरण में हस्तक्षेप करने की मांग की है। प्रमुख मांगें निम्नलिखित हैं:

1. **उच्च स्तरीय जांच: करजण में हो रहे अवैध खनन, ओवरलोडिंग और कथित वसूली नेटवर्क की किसी स्वतंत्र एजेंसी या एसआईटी से निष्पक्ष जांच कराई जाए।**

2. **जवाबदेही तय हो: बार-बार शिकायत मिलने के बावजूद कार्रवाई न करने वाले वडोदरा खनिज विभाग के संबंधित अधिकारियों (जिनमें अधिकारी गामित भी शामिल हैं) की भूमिका की जांच कर उनकी जवाबदेही तय की जाए।**

3. **अवैध मशीनों की जब्ती: नदी के पात्र में चल रही प्रतिबंधित बार्ज मशीनों और बिना वैध पास के चल रहे ओवरलोड वाहनों को तत्काल प्रभाव से जब्त किया जाए।**

4. **संरक्षण देने वालों पर कार्रवाई: इस अवैध कारोबार में संलिप्त संचालकों और उन्हें कथित राजनीतिक या प्रशासनिक संरक्षण देने वाले चेहरों को बेनकाब कर कानून के दायरे में लाया जाए।**



गोधरा कांड के दोषी इरफान सिराज पाड़ा को सुप्रीम कोर्ट से राहत, सजा पर रोक के साथ मिली जमानत

चिकित्सा आधार पर शीर्ष अदालत का आदेश; 2002 के साबरमती एक्सप्रेस अग्निकांड में 59 लोगों की मौत के मामले में दोषी की रिहाई को लेकर पीड़ित परिवारों की चिंता और न्यायिक फैसले पर बहस

महानगर मेट्रो ब्यूरो



गांधीनगर/अहमदाबाद। वर्ष 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड के दोषी इरफान सिराज पाड़ा को उच्चतम न्यायालय से चिकित्सा आधार पर राहत मिली है। अदालत ने उसकी आजीवन कारावास की सजा पर रोक लगाते हुए जमानत मंजूर कर दी है। इस फैसले के बाद मामले के पीड़ित परिवारों और आम लोगों के बीच चर्चा शुरू हो गई है। हालांकि, जमानत का आधार चिकित्सा संबंधी परिस्थितियां हैं और इसे दोषसिद्धि रद्द किए जाने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। 27 फरवरी 2002 को गोधरा रेलवे स्टेशन के पास साबरमती एक्सप्रेस के एस-6 डिब्बे में आग लगा दी गई थी। इस घटना में 59 लोगों की मौत हुई थी। मामले की लंबी सुनवाई के बाद अदालतों ने कई आरोपियों को दोषी ठहराया था और उन्हें अलग-अलग सजाएं सुनाई थीं। इरफान सिराज पाड़ा भी इस मामले में दोषी ठहराए गए लोगों में शामिल है और उसे आजीवन कारावास की सजा मिली थी।प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, पाड़ा की ओर से स्वास्थ्य संबंधी आधार पर राहत की मांग की गई थी। उच्चतम न्यायालय ने चिकित्सा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उसकी सजा स्थगित करने और जमानत देने का आदेश दिया। इस फैसले के बाद यह सवाल भी उठ रहा है कि गंभीर अपराधों में दोषी ठहराए गए कैदियों को स्वास्थ्य संबंधी आधार पर राहत देते समय किन परिस्थितियों और शर्तों पर विचार किया जाता है। इस मामले में यह स्पष्ट रहना जरूरी है कि जमानत मिलने का अर्थ दोषी को बरी करना नहीं है। उसकी दोषसिद्धि और मामले में सुनाई गई सजा का कानूनी आधार इससे समाप्त नहीं होता। अदालत का आदेश चिकित्सा आधार पर दी गई राहत से संबंधित है। गोधरा अग्निकांड में अपने परिजनों को खो चुके परिवारों के लिए यह फैसला भावनात्मक रूप से संवेदनशील है। ऐसे मामलों में पीड़ित परिवारों की पीड़ा, दोषियों के कानूनी अधिकार और चिकित्सा जरूरतों के बीच संतुलन बनाए रखना न्यायिक प्रक्रिया की महत्वपूर्ण चुनौती है।

शर्मनाक लापरवाही: प्रसूता के शल्य प्रसव का वीडियो किया प्रसारित

महानगर मेट्रो ब्यूरो

रअंबाजी (बनासकांठा)। गुजरात के प्रसिद्ध तीर्थस्थल अंबाजी की सरकारी अस्पताल में गंभीर लापरवाही का मामला सामने आया है। यहां एक महिला के शल्य प्रसव के दौरान शल्य कक्ष के अंदर मोबाइल से वीडियो बनाया गया और बाद में उसे सामाजिक माध्यमों पर प्रसारित कर दिया गया। घटना सामने आने के बाद स्थानीय लोगों में भारी नाराजगी है। जानकारी के अनुसार, महिला का शल्य प्रसव चल रहा था। इस दौरान शल्य कक्ष में मोबाइल ले जाने के प्रतिबंध और अस्पताल के नियमों की अनदेखी करते हुए वीडियो बनाया गया। सबसे गंभीर बात यह है कि महिला की निजता और सम्मान का ध्यान रखे बिना इस संवेदनशील वीडियो को सार्वजनिक कर दिया गया। घटना के बाद अस्पताल प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं। आखिर शल्य कक्ष में मोबाइल किसकी अनुमति से पहुंचा और वीडियो किसने बनाया? क्या इसमें अस्पताल का कोई कर्मचारी शामिल है? इन सवालों के जवाब सामने आना बाकी हैं। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मांग की है कि वीडियो बनाने और प्रसारित करने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कानूनी तथा विभागीय कार्रवाई की जाए। साथ ही मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों की जिम्मेदारी तय की जाए, ताकि भविष्य में किसी मरीज की निजता और सम्मान के साथ ऐसा खिलवाड़ न हो।

पाकिस्तानी जासूसों की भारतीय रक्षा अधिकारियों के व्हाट्सएप समूहों में घुसपैठ, 14 समूह निशाने पर

भारतीय मोबाइल नंबरों के सहारे गोपनीय बातचीत और दस्तावेजों पर रख रहे थे नजर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने पाकिस्तानी खुफिया संचालकों की साइबर जासूसी की कोशिश का खुलासा किया है। अधिकारियों के अनुसार, पाकिस्तानी जासूसों ने रक्षा, अर्धसैनिक बलों और रक्षा विभाग के नागरिक अधिकारियों के निजी व्हाट्सएप समूहों में घुसपैठ की थी। करीब 13 से 14 निजी समूहों को निशाना बनाए जाने की जानकारी सामने आई है। अधिकारियों ने इसे संवेदनशील सुरक्षा जिम्मेदारियां संभाल रहे अधिकारियों के खिलाफ लक्षित साइबर जासूसी अभियान बताया है। जांच में सामने आया कि जासूसों ने कथित तौर पर नकली या हैक किए गए भारतीय मोबाइल नंबरों का इस्तेमाल किया और समूहों में सामान्य सदस्यों की तरह जुड़े रहे। इस दौरान वे अधिकारियों की बातचीत और साझा किए जाने वाले दस्तावेजों पर लगातार नजर रख रहे थे। मामले की गंभीरता को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियों ने संबंधित



व्हाट्सएप समूहों और अन्य सामाजिक संवाद मंचों की जांच करने तथा उनकी सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं। समूहों में शामिल अनजान और संदिग्ध सदस्यों को हटाने के साथ अधिकारियों को आगाह किया गया है कि वे किसी भी सामाजिक माध्यम पर आधिकारिक या गोपनीय जानकारी साझा न करें।

महिला वैज्ञानिक बनकर समूह में घुसा था जासूस

इससे पहले भी ऐसा मामला सामने आया था, जिसमें एक पाकिस्तानी खुफिया संचालक रक्षा विभाग के नागरिक अधिकारियों के व्हाट्सएप समूह में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की वैज्ञानिक 'सोनिया' बनकर शामिल हुआ था। अधिकारियों के अनुसार, आशंका है कि इस समूह से कुछ संवेदनशील जानकारियां धन के बदले साझा की गई थीं।

तीर्थ यात्रा की तर्ज पर शुरू हो गौ धाम यात्रा: अजय जैन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

तुमड़ीबोड़। गौ सेवा और भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से श्रीरामकृष्ण महावीर गौ एवं जनसेवा समिति के संरक्षक, व्यापारी संघ एवं टाइगर क्लब के अध्यक्ष अजय जैन ने छत्तीसगढ़ सरकार, प्रभारी मंत्री और विधायक से गौ धाम यात्रा शुरू करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार श्रद्धालु धार्मिक आस्था के साथ देश के विभिन्न तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं, उसी प्रकार राजस्थान के नागौर सहित भारत की प्रमुख गौशालाओं के दर्शन और भ्रमण के लिए भी व्यवस्थित यात्रा शुरू की जानी चाहिए। अजय जैन ने कहा कि गौ धाम केवल गौ माता के संरक्षण और सेवा के केंद्र नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय संस्कृति, करुणा, जीव दया और पर्यावरण संरक्षण की भावना को भी आगे बढ़ाते हैं। यदि परिवारों और युवाओं को ऐसी यात्राओं से जोड़ा जाए तो उनमें गौ सेवा के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना मजबूत होगी। उन्होंने सुझाव दिया कि गौ धाम यात्रा के दौरान श्रद्धालु गौ माता के दर्शन करने के साथ-साथ गौशालाओं में होने वाली सेवा गतिविधियों, चारा-पानी की व्यवस्था, बीमार और असहाय गायों की देखभाल तथा संरक्षण के प्रयासों को भी करीब से देख सकेंगे। इससे लोगों को गौ सेवा के वास्तविक स्वरूप को समझने और उससे जुड़ने का अवसर मिलेगा। जैन ने कहा कि वर्तमान समय में गौ माता के संरक्षण की आवश्यकता को देखते हुए ऐसी यात्राएं समाज में सकारात्मक संदेश देने का प्रभावी माध्यम बन सकती हैं। इससे देश की विभिन्न गौ सेवा संस्थाओं के बीच आपसी संपर्क और सहयोग बढ़ेगा तथा एक-दूसरे के अनुभवों से नई व्यवस्थाएं विकसित करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि तीर्थ यात्रा के साथ गौ धाम यात्रा की परंपरा विकसित करना समय की आवश्यकता है।

पश्चिम बंगाल का नाम बदलकर 'पश्चिम बंग' करने की तैयारी, 9 दिसंबर को विधानसभा में आएगा प्रस्ताव

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाता। पश्चिम बंगाल का नाम बदलकर 'पश्चिम बंग' करने की तैयारी शुरू हो गई है। मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने सोमवार को इसकी घोषणा की। राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में नाम बदलने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। अब 9 दिसंबर को विधानसभा में इस संबंध में प्रस्ताव पेश किया जाएगा। विधानसभा का शीतकालीन सत्र 4 दिसंबर से शुरू होगा। मुख्यमंत्री अधिकारी ने मंत्रिमंडल की बैठक के बाद बताया कि सरकार ने राज्य का नाम बदलकर 'पश्चिम बंग' रखने का निर्णय लिया है। विधानसभा में प्रस्ताव पारित होने



के बाद इसे आगे की मंजूरी और संवैधानिक प्रक्रिया के लिए केंद्र सरकार के पास भेजा जाएगा।

पहले भी उठ चुका है नाम बदलने का मुद्दा

पश्चिम बंगाल का नाम बदलने की मांग नई नहीं है। वर्ष 1999 में राज्य का नाम 'बांग्ला' करने का प्रस्ताव सामने आया था। इसके बाद वर्ष 2011 में भी नाम बदलने की पहल की गई। वर्ष 2018 में विधानसभा ने 'बांग्ला' नाम रखने का प्रस्ताव पारित किया था, लेकिन इसे केंद्र की मंजूरी नहीं मिली। भाजपा का तर्क है कि 'पश्चिम बंग' नाम राज्य के ऐतिहासिक गठन और उसकी अलग पहचान को दर्शाता है। वर्ष 1947 में बंगाल के विभाजन के बाद इसका पश्चिमी हिस्सा भारत में रहा और पश्चिम बंगाल राज्य का गठन हुआ। पार्टी के कुछ नेताओं ने 'बांग्ला' नाम पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि यह बांग्लादेश के नाम से मिलता-जुलता है।

पांच चरणों में पूरी होगी नाम बदलने की प्रक्रिया

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत राज्य का नाम बदलने का अधिकार संसद के पास है। इसके लिए पहले राज्य सरकार प्रस्ताव तैयार करती है। इसके बाद केंद्र सरकार उस पर विचार करती है। राष्ट्रपति की सिफारिश पर विधेयक राज्य विधानसभा के पास उसकी राय जानने के लिए भेजा जाता है। निर्धारित प्रक्रिया पूरी होने के बाद विधेयक संसद में पेश किया जाता है। लोकसभा और राज्यसभा से पारित होने तथा राष्ट्रपति की मंजूरी मिलने के बाद ही नाम परिवर्तन कानून बनता है।





गुजरात में विशेष निवेश क्षेत्र की हकीकतः औद्योगिक विकास से किसानों और स्थानीय लोगों को कितना लाभ, कितना नुकसान?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद/गांधीनगर। गुजरात के आर्थिक और औद्योगिक विकास को नई दिशा देने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने विशेष निवेश क्षेत्र (एसआईआर) नीति लागू की थी। धोलेरा, मांडल-बेचाराजी और दहेज जैसी बड़ी परियोजनाओं को विश्वस्तरीय औद्योगिक केंद्र और आधुनिक शहर के रूप में विकसित करने की योजना बनाई गई। सरकारी दावों के अनुसार, इन परियोजनाओं से गुजरात में बड़े पैमाने पर निवेश, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार और रोजगार के नए अवसर पैदा होने की उम्मीद है। हालांकि, इन दावों के बीच यह सवाल भी उठ रहा है कि इन परियोजनाओं का वास्तविक लाभ किसानों, स्थानीय युवाओं और आम लोगों तक कितना पहुंचा है। एसआईआर परियोजनाओं के सकारात्मक पक्ष की बात करें तो इनके माध्यम से वाहन निर्माण, अर्धचालक, नवीकरणीय ऊर्जा और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में बड़े निवेश की संभावनाएं बनी हैं। कई क्षेत्रों में चौड़े राजमार्ग, द्रुतगामी सड़कें, हवाई अड्डे, बिजली और पानी जैसी सुविधाओं के विकास की योजनाएं आगे बढ़ी हैं। बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना से तकनीकी और गैर-तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होने का दावा भी किया जा रहा है। दूसरी ओर, इन परियोजनाओं को लेकर किसानों और स्थानीय ग्रामीणों की चिंताएं भी सामने आती रही हैं। आरोप हैं कि औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के लिए बड़ी मात्रा में खेती योग्य जमीन का अधिग्रहण किया गया, जिससे कई किसानों को अपनी उपजाऊ जमीन गंवानी पड़ी। मुआवजे और भूमि अधिग्रहण की शर्तों को लेकर विभिन्न क्षेत्रों में असंतोष और विरोध की स्थिति भी बनी। स्थानीय रोजगार को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। शिकायतें हैं कि बड़े उद्योगों की स्थापना के बावजूद स्थानीय युवाओं को अपेक्षित वेतन और स्थायी नौकरियां नहीं मिल पा रही हैं। कुछ लोगों का आरोप है कि रोजगार के बेहतर अवसरों में बाहरी कामगारों को प्राथमिकता मिलती है, जबकि स्थानीय युवाओं को सीमित या ठेके पर आधारित काम ही मिल पाता है।औद्योगिक विस्तार के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर भी चिंता जताई जा रही है।

झारखंड में गुजरात के तीर्थयात्रियों के साथ भीषण सड़क दुर्घटना, सूरत के जैन दंपती की मौत; 12 से अधिक श्रद्धालु घायल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत/झारखंड। गुजरात से झारखंड की पवित्र तीर्थयात्रा पर गए श्रद्धालुओं के वाहन के साथ भीषण सड़क दुर्घटना होने की खबर सामने आई है। इस हादसे में सूरत के एक जैन दंपती की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि 12 से अधिक श्रद्धालु घायल हो गए। इनमें कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। भक्ति और उत्साह के साथ यात्रा पर निकले परिवारों की खुशियां पलभर में मातम में बदल गईं। इस घटना से सूरत शहर और जैन समाज में शोक की लहर फैल गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सूरत के जैन समाज के श्रद्धालु झारखंड स्थित पवित्र तीर्थस्थल की यात्रा पर गए थे। यात्रा के दौरान उनका वाहन झारखंड के राजमार्ग से गुजर रहा था, तभी अचानक एक अन्य वाहन से उसकी जोरदार टक्कर हो गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, तेज गति से आ रहे वाहन की टक्कर अथवा वाहन पर से नियंत्रण खोने के कारण यह दुर्घटना हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर इतनी भीषण थी कि इसकी आवाज दूर तक सुनाई दी। श्रद्धालुओं के वाहन का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। दुर्घटना के बाद राजमार्ग पर अफरा-तफरी मच गई। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल घायलों की सहायता शुरू की और पुलिस को सूचना दी। इस दुर्घटना में गंभीर चोटें लगने के कारण सूरत निवासी जैन दंपती की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं, वाहन में सवार 12 से अधिक अन्य श्रद्धालु घायल हो गए। सूचना मिलते ही स्थानीय लोग और झारखंड पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को वाहन से बाहर निकाला गया और एंबुलेंस के माध्यम से नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। घायलों में कुछ की हालत नाजुक बताई जा रही है। झारखंड में हुई इस दुर्घटना की खबर सूरत पहुंचते ही मृतक दंपती और घायलों के परिजनों में शोक छा गया। परिवारों में मातम का माहौल है और रिश्तेदार झारखंड पहुंचने की तैयारी कर रहे हैं। दूसरी ओर, गुजरात के प्रशासनिक अधिकारियों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों की ओर से झारखंड के अधिकारियों से संपर्क साधकर घायलों को उचित उपचार उपलब्ध कराने तथा मृतक दंपती के पार्थिव शरीर को सूरत लाने के लिए आवश्यक कार्रवाई किए जाने की जानकारी सामने आई है। पवित्र तीर्थयात्रा पर निकले श्रद्धालुओं के साथ हुई इस दुखद दुर्घटना ने सभी को झकझोर कर रख दिया है।

दाहोद के देवगढ़ बारिया में बिजली कर्मचारियों पर हमला, खंभे लगाने के दौरान विवाद ने लिया उग्र रूप; गाली-गलौज और धमकियों के वीडियो प्रसारित

महानगर मेट्रो ब्यूरो

देवगढ़ बारिया (दाहोद)। गुजरात में सरकारी कर्मचारियों और बिजली कंपनी के कर्मचारियों पर हमले की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। दाहोद जिले के देवगढ़ बारिया क्षेत्र में बिजली के खंभे लगाने का काम चल रहा था, इसी दौरान विवाद ने उग्र रूप ले लिया। देखते ही देखते कहासुनी गाली-गलौज और धमकियों तक पहुंच गई। घटना के दौरान बिजली कर्मचारियों के साथ मारपीट किए जाने के आरोप भी सामने आए हैं। इस पूरे घटनाक्रम के कुछ वीडियो इन दिनों सामाजिक माध्यमों पर प्रसारित हो रहे हैं।



बिजली के खंभे लगाने के दौरान शुरू हुआ विवाद

प्राप्त जानकारी के अनुसार, देवगढ़ बारिया क्षेत्र में बिजली कंपनी के कर्मचारी अपनी सरकारी ड्यूटी के तहत बिजली के खंभे लगाने और बिजली आपूर्ति व्यवस्था से संबंधित कार्य कर रहे थे। इसी दौरान किसी स्थानीय मुद्दे को लेकर विवाद खड़ा हो गया। बताया जा रहा है कि काम का विरोध कर रहे कुछ लोगों ने कर्मचारियों के साथ बहस शुरू कर दी। देखते ही देखते विवाद बढ़ता चला गया और मौके पर तनावपूर्ण स्थिति बन गई। आरोप है कि इस दौरान कर्मचारियों के साथ खुलेआम गाली-गलौज की गई और उन्हें जान से मारने की धमकियां भी दी गईं। सरकारी कार्य कर रहे कर्मचारियों के साथ हुए इस घटनाक्रम से मौके पर मौजूद बिजली विभाग के कर्मचारियों में भय का माहौल बन गया।

मोबाइल छीनने और सरकारी काम में बाधा डालने के आरोप

मामला केवल कहासुनी तक सीमित नहीं रहा और अंततः पुलिस थाने तक पहुंच गया। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, बिजली कंपनी के कर्मचारियों ने घटना को लेकर स्थानीय पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई है।शिकायत में आरोप लगाया गया है कि विरोध करने वाले लोगों ने कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया और सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न की। इसके अलावा घटना का वीडियो बना रहे कर्मचारियों से उनका मोबाइल फोन भी कथित तौर पर जबरन छीन लिया गया। कर्मचारियों ने पूरे घटनाक्रम को लेकर पुलिस से कार्रवाई की मांग की है।गुजरात में बिजली जांच, मरम्मत और अन्य सरकारी कार्यों के दौरान कर्मचारियों के साथ विवाद तथा मारपीट की घटनाएं समय-समय पर सामने आती रही हैं। देवगढ़ बारिया की इस घटना ने एक बार फिर मैदानी स्तर पर काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं।

आर-पार की लड़ाई और बहिष्कार की चेतावनी

वायरल ऑडियो और वित्तीय अनियमितताओं के आरोपों से जैन समाज में भारी उबाल, ट्रस्टियों की चुप्पी पर फूटा आक्रोश!

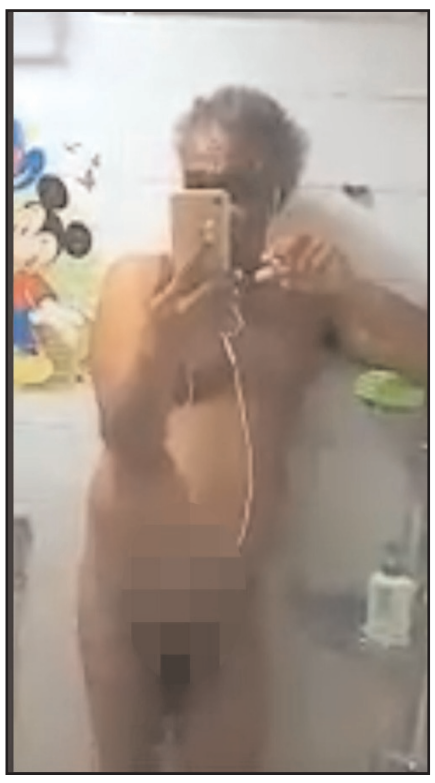

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन





वायरल ऑडियो और डिजिटल साक्ष्यो पर उठे सुलगते सवाल

गांधीनगर / अहमदाबादै। 7 अहिंसा, अपरिग्रह, त्याग और कठोर संयम के लिए विश्व भर में जानी जाने वाली जैन संत परंपरा इन दिनों एक बेहद संवेदनशील और गंभीर विवाद के केंद्र में है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे कुछ कथित ऑडियो क्लिप और डिजिटल दस्तावेजों ने गुजरात से लेकर देश-विदेश में बसे जैन समाज को झकझोर कर रख दिया है। सागरचंद्रसागर से जुड़े इस कथित प्रकरण के सामने आने के बाद श्रावक वर्ग में गहरा आक्रोश व्याप्त है। समाज के लोगों का स्पष्ट कहना है कि धर्म और वेश की आड़ में यदि किसी भी प्रकार का अनैतिक आचरण या वित्तीय अनियमितता हुई है, तो यह पूरी परंपरा की साख को नुकसान पहुंचाने वाला कृत्य है।

पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से प्रसारित हो रहे कथित ऑडियो और डिजिटल साक्ष्यों ने चारित्रिक मर्यादाओं को लेकर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इन वायरल सामग्रियों में लगाए जा रहे आरोपों के बाद समाज के हर वर्ग में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। समाज के प्रबुद्धजनों और युवाओं का सीधा सवाल है कि इस मामले में अब तक स्पष्ट स्थिति सामने क्यों नहीं आई है? लोगों का कहना है कि यदि ये वायरल ऑडियो और आरोप निराधार हैं, तो संबंधित पक्ष और संघ द्वारा अब तक कानूनी कार्रवाई कर अफवाह फैलाने वालों को बेनकाब क्यों नहीं किया गया? और यदि इन आरोपों में जरा भी सच्चाई है, तो संबंधित व्यक्ति के खिलाफ अब तक कठोर अनुशासनात्मक और कानूनी कदम क्यों नहीं उठाए गए?

दान के करोड़ों रुपयों के हिसाब-किताब पर घमासान

यह विवाद केवल चारित्रिक आरोपों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताओं के आरोप भी जुड़ गए हैं। श्रावक वर्ग द्वारा अपनी गाढ़ी कमाई से जीवदया, मंदिर निर्माण और मानव कल्याण के लिए दिए गए करोड़ों रुपये के दान के कथित दुरुपयोग की आशंकाओं ने आग में घी का काम किया है। श्रद्धालुओं का कहना है कि आस्था के नाम पर एकत्र किए गए धन का उपयोग यदि व्यक्तिगत ऐशो-आराम या अनैतिक कार्यों के लिए होने की चर्चा भी उठती है, तो यह समाज के विश्वास के साथ सीधा विश्वासघात है। समाज की स्पष्ट मांग है कि यदि किसी व्यक्ति पर ऐसे गंभीर आरोप लगे हैं, तो नैतिकता के आधार पर उसे स्वयं पद और वेश का त्याग कर जांच का सामना करना चाहिए।

उपाश्रयों और ट्रस्टियों की चुप्पी से बढ़ा जनआक्रोश

इस पूरे प्रकरण में सबसे अधिक नाराजगी उन उपाश्रय प्रबंधकों, संघ के पदाधिकारियों और ट्रस्टियों की कार्यप्रणाली को लेकर देखी जा रही है, जिन्होंने इस गंभीर मुद्दे पर मौन साध रखा है। समाज का एक बड़ा वर्ग इस खामोशी को संदेह की नजर से देख रहा है।

पारदर्शिता का अभावः आरोप लग रहे हैं कि पदाधिकारियों ने अपने पदों और प्रभाव को बचाए रखने के लिए इस संवेदनशील मुद्दे पर पर्दा डालने का प्रयास किया है।

कड़े सामाजिक बहिष्कार की चेतावनीः श्रावक समाज और विशेष रूप से युवा वर्ग ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि जब तक इस मामले की सच्चाई सामने नहीं आती, तब तक संदिग्ध भूमिका वाले व्यक्तियों को गोचरी देने, उपाश्रयों में प्रवेश देने या किसी भी धार्मिक मंच पर स्थान देने का कड़ा विरोध किया जाएगा।

प्रबंधकों की जवाबदेहीः समाज ने अल्टीमेटम दिया है कि यदि ट्रस्टियों ने जल्द ही सामने आकर स्थिति स्पष्ट नहीं की, तो प्रबंध समितियों के खिलाफ व्यापक स्तर पर विरोध प्रदर्शन शुरू किया जाएगा।

तपस्वी संतों की गरिमा बचाने के लिए निर्णायक कार्रवाई की मांग

समाज के वरिष्ठ नागरिकों का मानना है कि आज भी देश भर में हजारों साधु-साध्वी और आचार्य कठोर तपस्या और संयम के साथ धर्म की प्रभावना कर रहे हैं। ऐसे में कुछ मुट्ठी भर लोगों के कथित कृत्यों के कारण पूरी महान परंपरा की छवि धूमिल नहीं होनी चाहिए। कानून और नैतिकता से ऊपर कोई नहीं हो सकता।

समाज और प्रशासन के समक्ष रखी गई 4 प्रमुख मांगें:

1. तत्काल फॉरेंसिक जांचः सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे ऑडियो और डिजिटल दस्तावेजों की स्वतंत्र और उच्च स्तरीय फॉरेंसिक जांच कराई जाए, ताकि सत्य सबके सामने आ सके।

2. वित्तीय ऑडिट और सार्वजनिक हिसाबः संबंधित संस्थाओं और दान में प्राप्त करोड़ों रुपयों का स्वतंत्र ऑडिट कराकर पाई-पाई का हिसाब समाज के समक्ष सार्वजनिक किया जाए।

3. कठोर कानूनी व धार्मिक कार्रवाईः जांच में दोष सिद्ध होने पर संबंधित आरोपी को तत्काल संत पद और वेश से निष्कासित कर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए; वहीं आरोप झूठे पाए जाने पर साजिशकर्ताओं के विरुद्ध कठोर दंडात्मक कदम उठाए जाएं।

4. संरक्षण देने वाले पदाधिकारियों की बर्खास्तगीः इस पूरे प्रकरण पर पर्दा डालने या कथित रूप से संरक्षण देने वाले ट्रस्टियों और पदाधिकारियों को तत्काल प्रभाव से उनके पदों से हटाया जाए।

अहमदाबाद की हवा में घुला जहर! अधिकांश इलाकों में वायु प्रदूषण का स्तर 200 के पार, जहरीली हवा से लोगों की बढ़ी परेशानी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। महानगर और ऐतिहासिक शहर के रूप में पहचान रखने वाले अहमदाबाद की हवा अब लोगों के स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है। शहर के अधिकांश इलाकों में वायु प्रदूषण का स्तर चिंताजनक रूप से बढ़ने के कारण हवा की गुणवत्ता लगातार प्रभावित हो रही है। हालिया आंकड़ों के अनुसार, शहर के कई क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 150 से 200 के आसपास पहुंच गया है। यह स्थिति स्वास्थ्य की दृष्टि से खराब मानी जाती है। शहर के वातावरण में धूल और धुएं के कणों की बढ़ती मौजूदगी ने नागरिकों की चिंता बढ़ा दी है।

शहर के कई इलाकों में बिगड़े हालात

मौसम में बदलाव और बढ़ते प्रदूषण के कारण अहमदाबाद के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों सहित



अनेक प्रमुख क्षेत्र प्रभावित बताए जा रहे हैं। औद्योगिक क्षेत्रों के साथ-साथ आवासीय इलाकों और अधिक यातायात वाले मार्गों पर भी वायु गुणवत्ता का स्तर चिंताजनक बना हुआ है। सुबह और देर शाम वातावरण में धूल के सूक्ष्म कणों पीएम 2.5 और पीएम 10 की मात्रा बढ़ने से लोगों को आंखों में जलन और गले में खराश जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ क्षेत्रों में वातावरण में धुंध छाने से दृश्यता भी प्रभावित हो रही है। पर्यावरण से जुड़े जानकारों के अनुसार, अहमदाबाद में वायु प्रदूषण बढ़ने के पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं। शहर में लगातार चल रहे निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, सड़कों पर जमा मिट्टी, वाहनों से निकलने वाला धुआं और औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले प्रदूषक हवा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। इसके अलावा सर्दी की शुरुआत के साथ हवा की गति कम होने पर प्रदूषण के कण वातावरण की निचली परतों में जमा रह सकते हैं। इससे प्रदूषण का प्रभाव अधिक महसूस होता है और शहर के कई इलाकों में हवा की गुणवत्ता बिगड़ने लगती है। वायु गुणवत्ता सूचकांक का 150 से 200 के आसपास पहुंचना स्वास्थ्य की दृष्टि से चिंता का विषय है। चिकित्सकीय दृष्टि से प्रदूषित हवा के संपर्क में लंबे समय तक रहने से श्वसन तंत्र प्रभावित हो सकता है। विशेष रूप से दमा और सांस संबंधी बीमारियों से पीड़ित लोगों, छोटे बच्चों तथा बुजुर्गों को अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

बालासिनोर-अहमदाबाद फोरलेन राजमार्ग विकास के दावों के बीच बदहाल, लाखों वाहन चालकों के लिए बना मुसीबत; प्रशासन की लापरवाही पर रोष



महानगर मेट्रो ब्यूरो

बालासिनोर/महीसागर। गुजरात सरकार की ओर से राज्यभर में सड़कों की स्थिति सुधारने और आवागमन की सुविधाएं बढ़ाने के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, लेकिन बालासिनोर से अहमदाबाद को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण फोरलेन राजमार्ग की स्थिति इन दावों की वास्तविकता उजागर कर रही है। विकास के दावों के बीच यह मार्ग लंबे समय से बदहाल है। सड़क की स्थिति देखकर ऐसा लगता है कि यहां विकास नहीं, बल्कि सड़क की दुर्दशा ही दिखाई दे रही है। महीसागर जिले के ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल बालासिनोर को राज्य की राजधानी गांधीनगर और व्यापारिक केंद्र अहमदाबाद से जोड़ने वाला यह फोरलेन राजमार्ग बेहद व्यस्त है। प्रतिदिन इस मार्ग से हजारों छोटे-बड़े वाहन, राज्य परिवहन की बसें, निजी वाहन और नौकरी के सिलसिले में आवागमन करने वाले लोग गुजरते हैं। पिछले कुछ समय से उचित रखरखाव के अभाव में इस राजमार्ग की स्थिति बेहद खराब हो गई है। जगह-जगह सड़क पर गहरे धंसाव हो गए हैं और डामर उखड़ चुका है। बारिश तथा अन्य कारणों से सड़क की सतह भी क्षतिग्रस्त हो गई है। ऐसे में वाहन चलाना जोखिम भरा हो गया है। रात के समय कम रोशनी के कारण सड़क की खराब स्थिति दिखाई नहीं देती, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है और वाहन चालकों को परेशानी उठानी पड़ती है। स्थानीय नागरिकों और रोजाना आवागमन करने वाले यात्रियों का कहना है कि सड़क की मरम्मत के लिए कई बार संबंधित विभाग और प्रशासन से शिकायत की गई, लेकिन स्थायी समाधान नहीं हुआ।

आरोप है कि कुछ समय के लिए मरम्मत कर औपचारिकता पूरी कर ली जाती है, लेकिन बारिश और भारी वाहनों की आवाजाही के कारण कुछ ही दिनों में सड़क फिर खराब हो जाती है। करोड़ों रुपये की लागत से बने इस महत्वपूर्ण मार्ग की ऐसी स्थिति को लेकर लोगों में नाराजगी है। सवाल उठ रहे हैं कि आखिर रखरखाव में इतनी लापरवाही क्यों बरती जा रही है और क्या प्रशासन किसी बड़ी दुर्घटना के बाद ही जागेगा? अब देखना होगा कि इस खबर के बाद उच्च अधिकारी और संबंधित विभाग सड़क की मरम्मत के लिए ठोस कदम उठाते हैं या फिर यात्रियों को इसी परेशानी के बीच आवागमन करना पड़ेगा।

अमरेली और सावरकुंडला के विकास को लेकर सियासी खींचतान, विधायक महेश कसवाला के बयान से गुजरात की राजनीति में हलचल



महानगर मेट्रो ब्यूरो

अमरेली। गुजरात की राजनीति में इन दिनों विकास और नए जिलों की मांग को लेकर चर्चाओं के बीच अमरेली से एक ऐसा बयान सामने आया है, जिसने राजनीतिक गलियारों में हलचल पैदा कर दी है। अमरेली और सावरकुंडला के बीच विकास कार्यों तथा सरकारी अनुदान के आवंटन को लेकर चल रही चर्चाओं के बीच भाजपा विधायक महेश कसवाला के बयान ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है। उनके इस बयान की चर्चा राजनीतिक हलकों से लेकर सामाजिक मंचों तक हो रही है।

क्या कहा विधायक महेश कसवाला ने?

एक स्नेहमिलन समारोह के दौरान विधायक महेश कसवाला ने खुले तौर पर कहा, 'सावरकुंडला जिला नहीं बने तो कोई बात नहीं, लेकिन अमरेली का स्तर नीचे नहीं रहना चाहिए।' उन्होंने अमरेली के विकास की स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि आजादी के 70 साल बाद भी अमरेली का विस्तार महज चार किलोमीटर तक ही सीमित रह गया है। उन्होंने कहा कि अमरेली आज भी वहीं का वहीं है और अब तक किसी भी नेता ने यहां बड़े उद्योग स्थापित नहीं किए हैं। विधायक ने आगे कहा कि लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। संभव है कि सावरकुंडला विकास के मामले में आगे निकल जाए, लेकिन अमरेली की स्थिति अब भी पहले जैसी ही बनी हुई है।

विकास के दावों के बीच अमरेली की स्थिति पर सवाल

विधायक के इस बयान ने केवल विपक्ष ही नहीं, बल्कि सत्तारूढ़ दल और प्रशासनिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली को लेकर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। आजादी के कई दशक बीत जाने के बावजूद जिला मुख्यालय होने के बाद भी अमरेली में बड़े उद्योगों की कमी और शहरी विस्तार की धीमी गति को लेकर स्वयं सत्तापक्ष के विधायक की ओर से चिंता जताना राजनीतिक चर्चा का विषय बन गया है। एक ओर सरकार विभिन्न क्षेत्रों में विकास के दावे कर रही है, वहीं दूसरी ओर जनप्रतिनिधि के इस तरह के बयान से स्थानीय विकास की वास्तविक स्थिति पर चर्चा शुरू हो गई है।

आम आदमी की जेब पर फिर पड़ेगी महंगाई की मार? दिसंबर में लग सकते हैं दो बड़े आर्थिक झटके, ऋण की किस्तों से लेकर बचत और निवेश के लाभ पर भी पड़ सकता है असर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। पहले से ही महंगाई, सब्जियों और किराना वस्तुओं की बढ़ती कीमतों तथा रोजमर्रा के खर्चों से परेशान आम और मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए आगामी दिसंबर का महीना नई आर्थिक चुनौतियां लेकर आ सकता है। आर्थिक विशेषज्ञों और बाजार विश्लेषकों के अनुसार, दिसंबर में आम नागरिकों को दो बड़े आर्थिक झटकों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, इनका असर संबंधित केंद्रीय बैंकों के नीतिगत फैसलों पर निर्भर करेगा। यदि ब्याज दरों में बदलाव होता है तो इसका प्रभाव गृह ऋण, वाहन ऋण और व्यक्तिगत ऋण की मासिक किस्तों के साथ-साथ बचत और निवेश पर भी पड़ सकता है। वर्तमान में वैश्विक और घरेलू अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों से गुजर रही है। दिसंबर में भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की महत्वपूर्ण बैठक प्रस्तावित है। इसके साथ ही अमेरिका का केंद्रीय बैंक यानी अमेरिकी फेडरल रिजर्व भी ब्याज दरों को लेकर अपना निर्णय घोषित करेगा। इन दोनों संस्थाओं के फैसलों का असर देश की अर्थव्यवस्था, बैंकिंग व्यवस्था और वित्तीय बाजारों पर देखने को मिल सकता है। पहला संभावित झटका भारतीय रिजर्व बैंक की रेपो दर और ऋण की मासिक किस्तों से जुड़ा है। देश में खाद्य महंगाई का स्तर चिंता का विषय बना हुआ है। यदि रिजर्व बैंक महंगाई को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरों में राहत नहीं देता अथवा उनमें बढ़ोतरी करता है तो बैंकों के ऋण महंगे हो सकते हैं। इसका असर विशेष रूप से उन लोगों पर पड़ेगा, जिन्होंने परिवर्तनशील ब्याज दर पर गृह ऋण या अन्य ऋण ले रखे हैं। ऐसी स्थिति में उनकी मासिक किस्त बढ़ सकती है या ऋण चुकाने की अवधि लंबी हो सकती है। दूसरा संभावित झटका अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतियों और भारतीय शेयर बाजार से जुड़ा है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव और सरकारी प्रतिभूतियों पर बढ़ते प्रतिफल के कारण यदि अमेरिकी केंद्रीय बैंक सख्त मौद्रिक नीति अपनाता है, तो विदेशी निवेशक भारतीय बाजार से अपना निवेश निकाल सकते हैं।

ई-मेल की नकल कर करोड़ों की ठगी करने वाला अंतरराज्यीय गिरोह पकड़ा गया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल के साथ साइबर अपराधी ठगी के नए-नए तरीके अपना रहे हैं। इसी बीच अहमदाबाद साइबर अपराध शाखा ने ई-मेल की नकल कर वित्तीय धोखाधड़ी करने वाले एक शातिर अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश किया है। व्यावसायिक ई-मेल में सेंधमारी और फर्जी ई-मेल के माध्यम से 'माया एग्रोवेट लिमिटेड' जैसी प्रतिष्ठित कंपनी के साथ लाखों-करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी करने के आरोप में गिरोह के सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है।

क्या है पूरा मामला और कैसे की गई ठगी?

प्राप्त जानकारी के अनुसार, आरोपियों ने बेहद शातिर तरीके से 'माया एग्रोवेट लिमिटेड' कंपनी के भुगतान और वित्तीय लेनदेन से जुड़े ई-मेल संवाद में अवैध रूप से सेंधमारी की थी। अंतरराज्यीय साइबर ठग गिरोह ने कंपनी के वास्तविक ई-मेल पते से मिलते-जुलते फर्जी ई-मेल पतों का इस्तेमाल कर व्यापारियों और कंपनी के प्रबंधन को गुमराह किया। जब कंपनी की ओर से बड़े वित्तीय लेनदेन और भुगतान की प्रक्रिया चल रही थी, उसी दौरान साइबर अपराधियों ने ई-मेल के माध्यम से अपने बैंक खातों का विवरण भेज दिया। इसके जरिए कंपनी की भुगतान राशि को वास्तविक लाभार्थी के खाते में भेजने के बजाय दूसरे बैंक खातों में स्थानांतरित करवा लिया गया। इस तरह आरोपियों ने करोड़ों रुपये की रकम हड़पने की साजिश को अंजाम दिया। कंपनी को अपने साथ हुई बड़ी धोखाधड़ी का पता चलने के बाद तत्काल अहमदाबाद साइबर अपराध पुलिस थाने में आधिकारिक शिकायत दर्ज कराई गई। इसके बाद पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू की। मामले की गंभीरता को देखते हुए अहमदाबाद साइबर अपराध शाखा के वरिष्ठ अधिकारियों और तकनीकी दल ने जांच की जिम्मेदारी संभाली। साइबर विशेषज्ञों ने डिजिटल साक्ष्यों, इंटरनेट पतों, बैंक लेनदेन और धोखाधड़ी में इस्तेमाल किए गए बैंक खातों की बारीकी से जांच की।तकनीकी निगरानी और मानवीय सूचना के आधार पर पुलिस को अंतरराज्यीय गिरोह तक पहुंचने में सफलता मिली।

आवास योजना पर सवालः लाखों आवेदन, मकान मिले केवल हजारों को; आवेदन शुल्क से करोड़ों की कमाई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद । अहमदाबाद के गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों के अपने घर के सपने को लेकर प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। आवास योजना के नाम पर हजारों आवेदकों से आवेदन पत्र और जमा राशि के रूप में करोड़ों रुपये लेने के बाद अब पुरानी प्रतीक्षा सूची को दरकिनार कर नए मकानों के लिए दोबारा आवेदन आमंत्रित करने के प्रशासन के फैसले से लोगों में नाराजगी है।

97,102 आवेदन और 72.82 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का हिसाब

मिली जानकारी के अनुसार, पिछली आवास योजना के तहत अहमदाबाद के कुल 97,102 नागरिकों ने अपना घर पाने की उम्मीद में आवेदन किया था। लेकिन इसके मुकाबले प्रशासन के पास केवल 7,825 मकान उपलब्ध थे। आवास आवंटन की लॉटरी के बाद लगभग 3,912 आवेदकों को प्रतीक्षा सूची में रखा गया था। यदि प्रति आवेदन 7,500 रुपये की राशि के हिसाब से गणना की जाए तो 97,102 आवेदनों से कुल 72 करोड़ 82 लाख 65 हजार रुपये से अधिक की राशि जमा होती है। आम नागरिक अपनी मेहनत की कमाई से घर मिलने की उम्मीद में यह रकम जमा कराते हैं, लेकिन इसके मुकाबले मकान मिलने की संभावना बेहद कम रह जाती है।

प्रतीक्षा सूची के 3,912 परिवारों के साथ अन्याय क्यों?

अब प्रशासन की ओर से 434 नए मकानों के लिए दोबारा आवेदन प्रक्रिया शुरू की जा रही है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि जब पहले से ही 3,912 परिवार प्रतीक्षा सूची में अपना नंबर आने का इंतजार कर रहे हैं, तो इन नए 434 मकानों का आवंटन पहले उन्हें क्यों नहीं किया जा रहा है?

आणंद बस अड्डे के पुनर्विकास पर 29 करोड़ रुपये खर्च होंगे, छोटे व्यापारियों की आजीविका पर संकट

महानगर मेट्रो ब्यूरो

आणंद। चरोतर के प्रमुख केंद्र और शिक्षा तथा व्यापारिक नगरी के रूप में पहचाने जाने वाले आणंद शहर में विकास की नई योजना तैयार की गई है। यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शहर के नए बस अड्डे का 29 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से पुनर्विकास किया जाएगा। सरकार और प्रशासन की ओर से इस परियोजना के माध्यम से आधुनिक बस अड्डा तैयार करने की बात कही जा रही है। हालांकि, इस योजना के साथ ही बस अड्डे और उसके आसपास वर्षों से रोजी-रोटी कमाने वाले छोटे व्यापारियों तथा श्रमिकों की आजीविका को लेकर चिंता भी सामने आई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, आणंद का वर्तमान बस अड्डा लंबे समय से जर्जर स्थिति में है और यात्रियों को पर्याप्त सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। इसी समस्या के समाधान के लिए सरकार ने 29 करोड़ रुपये से अधिक की राशि से इसे आधुनिक बस अड्डे के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है। परियोजना के अंतर्गत यात्रियों के लिए प्रतीक्षालय, अंकीय सूचना पट्ट, खरीदारी परिसर और सुरक्षा जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी। दूसरी ओर, बस अड्डे और आसपास के क्षेत्र में पिछले कई वर्षों से सैकड़ों छोटे व्यापारी, ठेले-खोमचे लगाने वाले, चाय की दुकानें चलाने वाले, फल-सब्जियां बेचने वाले, कुली और अन्य श्रमिक अपनी आजीविका चला रहे हैं। इन परिवारों की आय का प्रमुख साधन यही कारोबार है। अब जब पूरे क्षेत्र में नया निर्माण किया जाना है, तो इन छोटे व्यापारियों को वहां से हटाए जाने की आशंका जताई जा रही है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि निर्माण कार्य में कई महीने या वर्ष लग सकते हैं। इस मामले को लेकर शहर के जागरूक नागरिकों और श्रमिक संगठनों की ओर से प्रशासन के समक्ष कई सवाल उठाए जा रहे हैं।



शुद्धता के दावों के बीच बिसलेरी के पानी पर विवाद, खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण की पहली जांच में नमूना असुरक्षित, दोबारा जांच में कंपनी ने निर्धारित सीमा में बताया ब्रोमेट का स्तर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। बाजार में बोतलबंद और शुद्ध पेयजल के पर्याय के रूप में पहचाने जाने वाला देश का प्रमुख ब्रांड बिसलेरी इंटरनेशनल इन दिनों विवादों में घिरा हुआ है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण की जांच में बिसलेरी के बोतलबंद पेयजल का एक नमूना असुरक्षित घोषित किए जाने के बाद ग्राहकों में चिंता बढ़ गई है। हालांकि, मामले में विवाद बढ़ने के बाद कंपनी ने अपनी सफाई पेश करते हुए पानी को पीने के लिए पूरी तरह सुरक्षित बताया है।

क्या है पूरा विवाद और प्रयोगशाला जांच का मामला?



मिली जानकारी के अनुसार, भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण की ओर से बिसलेरी के पानी का पहला नमूना लेकर जांच की गई थी। इसमें ब्रोमेट नामक रासायनिक तत्व की मात्रा 12 माइक्रोग्राम प्रति लीटर दर्ज की गई थी। निर्धारित मानकों से अधिक मात्रा पाए जाने के कारण इस नमूने को असुरक्षित घोषित किया गया था। इस घटनाक्रम के बाद कंपनी की विश्वसनीयता और उत्पाद की गुणवत्ता पर सवाल उठने लगे थे।

दोबारा जांच में कंपनी को मिली राहत

विवाद बढ़ने के बाद पानी के नमूने की संदर्भ प्रयोगशाला में दोबारा जांच कराई गई। बिसलेरी कंपनी ने आधिकारिक बयान जारी कर बताया कि संदर्भ प्रयोगशाला की रिपोर्ट में ब्रोमेट की मात्रा घटकर 10 माइक्रोग्राम प्रति लीटर दर्ज की गई है। नियामक मानकों के अनुसार, पानी में ब्रोमेट की अधिकतम स्वीकार्य सीमा 10 माइक्रोग्राम प्रति लीटर है। इस प्रकार दोबारा जांच में इसकी मात्रा निर्धारित सीमा के भीतर पाई गई। इसी आधार पर कंपनी ने अपने उत्पाद को सुरक्षित बताया है।

कंपनी का दावा, अभी तक कोई आधिकारिक नोटिस नहीं मिला

इस पूरे मामले में बिसलेरी इंटरनेशनल ने एक महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण देते हुए कहा है कि नमूने को असुरक्षित घोषित किए जाने की खबरों के बावजूद कंपनी को अभी तक भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण की ओर से कोई आधिकारिक नोटिस नहीं मिला है। कंपनी ने स्पष्ट किया है कि वह गुणवत्ता के कड़े मानकों का पालन करती है और ग्राहकों के स्वास्थ्य के साथ कोई समझौता नहीं किया जाता। इसके साथ ही कंपनी ने नियामक संस्था को जांच के प्रत्येक चरण में पूरा सहयोग देने की बात कही है।

अहमदाबाद में नशे के कारोबारियों के अवैध निर्माण पर फिर चला बुलडोजर, पहले तोड़ने के बाद दोबारा खड़ा किया गया मकान भी जमींदोज

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। अहमदाबाद शहर को नशामुक्त बनाने के लिए पुलिस और नगर निगम की ओर से सख्त कार्रवाई की जा रही है। नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार के जरिए युवाओं को बर्बादी की ओर धकेलने वाले तत्वों के खिलाफ प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है। शहर के सरखेज क्षेत्र में गांजे के कारोबार से जुड़ी बताई जा रही सुनीता राठौड़ और दीपक राठौड़ के अवैध मकान पर प्रशासन का बुलडोजर एक बार फिर चला। इस कार्रवाई की सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इससे पहले भी प्रशासन ने आरोपियों के इस अवैध निर्माण को बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया था। लेकिन आरोप है कि कार्रवाई के बावजूद कानून की परवाह किए बिना उसी स्थान पर दोबारा मकान का निर्माण कर लिया गया। जब यह मामला पुलिस और नगर निगम के संज्ञान में आया तो प्रशासन ने दोबारा कार्रवाई करते



हुए निर्माण को हटाने का निर्णय लिया।

पुख्ता पुलिस बंदोबस्त के बीच कार्रवाई

सुबह से ही सरखेज क्षेत्र में पुलिस का बड़ा काफिला और नगर निगम के संपत्ति विभाग की टीमें बुलडोजर के साथ पहुंचीं। किसी भी अप्रिय घटना और विरोध की आशंका को देखते हुए पूरे इलाके में कड़ा पुलिस बंदोबस्त किया गया। इसके बाद प्रशासन की टीमों ने कुछ ही समय में दोबारा बनाए गए अवैध मकान को बुलडोजर की सहायता से पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। गांजे सहित अन्य नशीले पदार्थों के कारोबार से जुड़े बताए जा रहे सुनीता राठौड़ और दीपक राठौड़ के खिलाफ दूसरी बार हुई इस कार्रवाई से क्षेत्र में चर्चा का माहौल है। प्रशासन की इस कार्रवाई को नशे के अवैध कारोबार के खिलाफ सख्त संदेश के रूप में देखा जा रहा है। इस कार्रवाई के माध्यम से पुलिस और प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार से जुड़े लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई जारी रहेगी। साथ ही अवैध निर्माण और दोबारा किए जाने वाले अतिक्रमण के मामलों में भी नियमों के तहत कार्रवाई की जाएगी। स्थानीय नागरिकों ने पुलिस और प्रशासन की इस कार्रवाई का स्वागत किया है। लोगों ने उम्मीद जताई है कि क्षेत्र से नशे के अवैध कारोबार पर पूरी तरह रोक लगेगी और युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकेगा।

डभोई के काछियावाड़ और वडोदरी भागोल में जहरीले रंग-रसायनों के प्रदूषण के खिलाफ जनआंदोलन, अवैध कारखानों से परेशान हुए स्थानीय निवासी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

डभोइ। डभोई शहर के मध्य स्थित वडोदरी भागोल और दयाराम स्कूल के पास काछियावाड़ जैसे संवेदनशील रिहायशी इलाकों में प्रशासन की घोर लापरवाही के चलते स्थानीय नागरिकों का जीवन दूभर हो गया है। आबादी के बीच संचालित हो रहे अवैध रंगाई के काम और तिजोरी व अलमारी बनाने वाले कारखानों से फैल रहे जहरीले रंगों के कणों तथा असहनीय शोर से परेशान होकर स्थानीय निवासी एकजुट होकर सड़कों पर उतर आए। आक्रोशित लोगों ने 'प्रदूषण हटाओ, प्रदूषण हटाओ' के नारे लगाकर प्रशासन को जगाने का प्रयास किया। इस गंभीर स्थिति के कारण वडोदरी भागोल क्षेत्र के लगभग 15 परिवार सीधे तौर पर प्रभावित हैं। स्थानीय महिलाओं के अनुसार, कारखानों में मशीनों से रंगाई का काम किए जाने के दौरान हवा में फैलने वाले जहरीले रंगों के बारीक कण सीधे लोगों के घरों में प्रवेश कर रहे हैं। इस जहरीले वातावरण के कारण लोगों को सांस संबंधी गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय निवासियों ने बेहद चिंताजनक खुलासा करते हुए बताया कि कारखानों से फैलने वाले जहरीले प्रदूषण के कारण हुई बीमारी से उनके परिवार की एक बुजुर्ग महिला (दादी सास) का दुखद निधन हो चुका है। वहीं, पूरे क्षेत्र में हर महीने कोई न कोई छोटा बच्चा बीमार पड़ रहा है। स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि ऊपरी मंजिलों पर रहने वाले परिवार अपने घरों की खिड़कियां और दरवाजे तक नहीं खोल पा रहे हैं। मजबूरी में कुछ परिवारों को नीचे की मंजिलों पर स्थानांतरित होना पड़ा है।

सौर ऊर्जा पैनल खराब, वाहनों के शीशे धुंधले और असहनीय शोर से लोग परेशान





वायु और ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ स्थानीय निवासियों को आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ रहा है। घरों की छतों पर बिजली उत्पादन के लिए लगाए गए सौर ऊर्जा पैनलों पर रंग की मोटी परत जम जाने से वे अनुपयोगी हो गए हैं और स्थायी रूप से खराब हो चुके हैं। इसके अलावा, क्षेत्र में खड़े चारपहिया वाहनों पर रंग के छींटे पड़ने से उनके शीशे पूरी तरह धुंधले हो गए हैं। इससे रात के समय वाहन चलाना भी बेहद जोखिम भरा हो गया है। दूसरी ओर, देर रात तक चलने वाले औजारों और मशीनों के तेज शोर से बुजुर्गों की शांति भंग हो रही है। वहीं, छोटे बच्चे भी शांतिपूर्वक पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। प्रशासन की उदासीनता के खिलाफ आक्रोश, किसकी शह पर चल रहे अवैध कारखाने? इस गंभीर मानवीय और स्वास्थ्य संबंधी समस्या को लेकर स्थानीय निवासियों ने पहले भी डभोई नगरपालिका के मुख्य अधिकारी और स्थानीय पुलिस थाने में लिखित शिकायतें देकर कार्रवाई की मांग की थी। इसके बावजूद जिम्मेदार अधिकारियों की ओर से केवल जांच करने का आश्वासन दिया गया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि आज तक कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मौके पर जांच करने तक नहीं पहुंचा है। रिहायशी इलाके के बीच इस तरह के खतरनाक औद्योगिक प्रतिष्ठानों को आखिर किसकी अनुमति मिली है और किसके संरक्षण में ये अवैध कारखाने संचालित हो रहे हैं, इसे लेकर स्थानीय लोगों में प्रशासन के प्रति भारी आक्रोश है। नागरिकों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही इन कारखानों को यहां से स्थायी रूप से बंद नहीं कराया गया, तो आने वाले दिनों में बड़े स्तर पर उग्र आंदोलन किया जाएगा।

मेहमदाबाद में 'सिद्धि विनायक कॉम्प्लेक्स' की जमीन को लेकर बड़ा विवाद, सरकारी जवाब और मूल दस्तावेजों में भारी अंतर; सरकारी जमीन पर निर्माण की आशंका

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मेहमदाबाद। खेड़ा जिले के मेहमदाबाद शहर में स्थित सिद्धि विनायक कॉम्प्लेक्स की जमीन की मिल्कियत को लेकर एक नया विवाद सामने आया है। इस मामले ने स्थानीय प्रशासन और निर्माण क्षेत्र से जुड़े लोगों के बीच हलचल पैदा कर दी है। कॉम्प्लेक्स जिस जमीन पर बना हुआ है, उसकी मिल्कियत को लेकर भूमि अभिलेख निरीक्षक कार्यालय की ओर से दिए गए आधिकारिक जवाब और सामने आए मूल दस्तावेजों की जानकारी में बड़ा अंतर दिखाई दे रहा है। इस विरोधाभास के बाद जमीन के स्वामित्व और निर्माण की वैधता

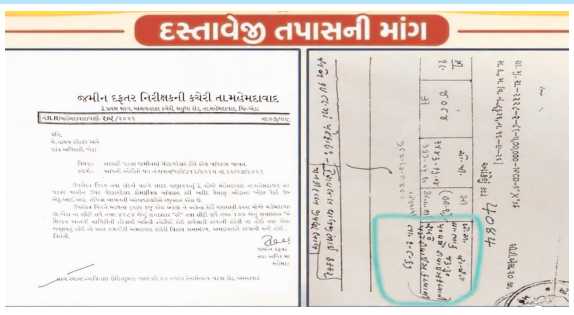

को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे।

क्या है पूरा विवाद और कहां सामने आया विरोधाभास?

मिली जानकारी के अनुसार, मेहमदाबाद स्थित सिद्धि विनायक कॉम्प्लेक्स की जमीन की मिल्कियत के संबंध में जानकारी मांगी गई थी। इसके जवाब में भूमि अभिलेख निरीक्षक कार्यालय की ओर से बताया गया कि संबंधित जमीन निजी स्वामित्व की है। हालांकि, इस मामले में सामने आए पुराने मूल दस्तावेजों में जमीन पट्टे पर दिए जाने का स्पष्ट उल्लेख होने का दावा किया जा रहा है। एक ही जमीन के संबंध में सरकारी कार्यालय का लिखित जवाब कुछ और जानकारी दे रहा है, जबकि पुराने मूल दस्तावेजों में अलग विवरण दर्ज होने की बात सामने आई है। इसी अंतर के कारण अब यह सवाल उठ रहा है कि क्या सरकारी अथवा पट्टे पर दी गई जमीन को निजी स्वामित्व की बताकर उस पर बड़ा व्यावसायिक निर्माण खड़ा कर दिया गया है? हालांकि, इस संबंध में अभी आधिकारिक जांच के निष्कर्ष सामने आना बाकी है।

प्रशासन के सामने उठे चार महत्वपूर्ण सवाल

दस्तावेजों में कथित विसंगति सामने आने के बाद जागरूक नागरिकों और स्थानीय लोगों की ओर से प्रशासन की कार्यप्रणाली पर कई सवाल उठाए जा रहे हैं।

1. यदि यह जमीन वास्तव में निजी स्वामित्व की है, तो भूमि अभिलेख कार्यालय के पास इसके समर्थन में कौन से मूल अभिलेख और कानूनी दस्तावेज उपलब्ध हैं?
2. जब पुराने मूल दस्तावेजों में जमीन पट्टे पर दिए जाने का स्पष्ट उल्लेख है, तो कार्यालय की ओर से निजी स्वामित्व का जवाब किस आधार पर दिया गया?
3. क्या यह जवाब तैयार करने से पहले जमीन के पुराने अभिलेखों, अधिकार पत्रों और मूल दस्तावेजों की पूरी तरह जांच की गई थी या नहीं?
4. यदि जांच में यह साबित होता है कि सरकारी अथवा पट्टे पर दी गई जमीन पर नियमों के विरुद्ध निर्माण किया गया है, तो गलत जानकारी देने वाले जिम्मेदार अधिकारियों और नियमों का उल्लंघन करने वाले निर्माणकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई कौन करेगा?

फिलहाल मेहमदाबाद के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में इस मामले को लेकर चर्चाएं तेज हैं। स्थानीय स्तर पर मांग उठ रही है कि पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय और निष्पक्ष जांच कराई जाए।

प्रवीण राठी पर गिरफ्तारी की तलवार, गैर-जमानती वारंट जारी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। सामाजिक माध्यमों पर अपने तीखे विश्लेषण और राजनीतिक विषयों पर बनाए जाने वाले वीडियो के कारण लगातार चर्चा में रहने वाले चर्चित यूट्यूबर ध्रुव राठी की कानूनी मुश्किलें बढ़ गई हैं। दिल्ली की साकेत अदालत ने आठ वर्ष पुराने आपराधिक मानहानि के एक मामले में ध्रुव राठी के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया है। अदालत के इस आदेश के बाद यह मामला एक बार फिर चर्चा में आ गया है। बार-बार समन और जमानती वारंट जारी होने के बावजूद अदालत में उपस्थित नहीं होने पर न्यायालय ने सख्त रुख अपनाया है। अब इस मामले में अगली सुनवाई 3 दिसंबर को निर्धारित की गई है। पूरे मामले की जानकारी के अनुसार, दिल्ली की साकेत अदालत के न्यायिक मजिस्ट्रेट अनम रईस खान ने सोमवार को यह महत्वपूर्ण आदेश जारी किया। यह आपराधिक मानहानि का मामला वर्ष 2018 में विकास सांकृत्यायन उर्फ विकास पांडे की ओर से दर्ज कराया गया था। शिकायतकर्ता का आरोप है कि ध्रुव राठी ने मई 2018 में अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो प्रकाशित किया था। इस वीडियो में कथित तौर पर दावा किया गया था कि भारतीय जनता पार्टी के सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ की ओर से विकास पांडे को बदनाम करने के लिए रिश्वत देने का प्रयास किया गया था। इस वीडियो के प्रसारित होने के बाद विकास पांडे ने आरोप लगाया कि इससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और छवि को नुकसान पहुंचा है। इसी आधार पर उन्होंने ध्रुव राठी के खिलाफ आपराधिक मानहानि का मुकदमा दायर किया था। वर्ष 2018 से चल रहा यह मामला अब एक बार फिर कानूनी प्रक्रिया के अगले चरण में पहुंच गया है। इस मामले में ध्रुव राठी को सबसे पहले जुलाई 2019 में अदालत की ओर से समन जारी किया गया था। इसके बाद भी मामले की सुनवाई के दौरान उनकी उपस्थिति को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी। हाल ही में अदालत ने 17 अक्टूबर और 31 अक्टूबर को उनके खिलाफ जमानती वारंट जारी किए थे, ताकि उन्हें न्यायालय के समक्ष उपस्थित कराया जा सके। इसके बावजूद उनकी उपस्थिति सुनिश्चित नहीं हो पाई। बताया गया है कि जब अदालत के अधिकारी हरियाणा के गुरुग्राम स्थित ध्रुव राठी के आवास पर न्यायालय का नोटिस पहुंचाने गए, तो वहां घर पर ताला लगा मिला। इस घटनाक्रम के बाद उनकी अनुपस्थिति को लेकर अदालत में स्थिति और गंभीर हो गई। दूसरी ओर, ध्रुव राठी की ओर से उनके अधिवक्ता ने अदालत में दलील दी कि वह सामान्य रूप से ऑस्ट्रिया में रहते हैं। इस प्रकार उनके निवास और न्यायालय में उपस्थिति को लेकर भी मामला चर्चा में रहा। लगातार समन जारी होने और जमानती वारंट के बावजूद अदालत में उपस्थिति नहीं होने के बाद न्यायालय ने अब कड़ा कदम उठाते हुए गैर-जमानती वारंट जारी कर दिया है। गैर-जमानती वारंट जारी होने के बाद संबंधित व्यक्ति को गिरफ्तार कर अदालत के समक्ष पेश किए जाने की कानूनी प्रक्रिया का रास्ता खुलता है। हालांकि, वारंट जारी होने का अर्थ यह नहीं है कि गिरफ्तारी तत्काल हो ही गई है।

जगदीश विश्वकर्मा के बयान से मचा सियासी घमासान, जुबान फिसली या खुला राज?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा के एक बयान को लेकर चर्चा तेज हो गई है। आमतौर पर भाजपा नेता सार्वजनिक मंचों से 182 में से 182 विधानसभा सीटें जीतने का दावा करते नजर आते हैं, लेकिन हाल ही में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा के मुंह से ऐसा आंकड़ा निकल गया, जिसने वहां मौजूद लोगों को चौंका दिया। अब इस बयान को लेकर राजनीतिक गलियारों में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं।

क्या है पूरा मामला और कहां हुई चूक?

मिली जानकारी के अनुसार, एक सभा या कार्यक्रम को संबोधित करते समय प्रदेश अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा ने जोश में 182 विधानसभा सीटों की जगह सीधे 82 का आंकड़ा बोल दिया। इसके बाद उनका यह बयान चर्चा का विषय बन गया। बताया जा रहा है कि कार्यक्रम का वीडियो सामने आने के बाद सामाजिक माध्यमों से लेकर राजनीतिक गलियारों तक इस पर बहस शुरू हो गई। अब सवाल उठ रहे हैं कि क्या यह प्रदेश अध्यक्ष की महज जुबान फिसलने की घटना थी या इसके पीछे कोई राजनीतिक संकेत छिपा है? कुछ लोग इसे सामान्य बोलने की गलती मान रहे हैं, जबकि राजनीतिक हलकों में इसे लेकर अलग-अलग चर्चाएं हो रही हैं। गुजरात को भाजपा का मजबूत गढ़ माना जाता है और पार्टी लगातार स्पष्ट बहुमत के साथ जीत के दावे करती रही है। ऐसे में प्रदेश अध्यक्ष के मुंह से 82 का आंकड़ा निकलना विपक्षी दलों के लिए भाजपा पर निशाना साधने का मुद्दा बन गया है। राजनीतिक विश्लेषकों के बीच भी इस बयान को लेकर चर्चा हो रही है कि क्या आगामी चुनावों में राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं या यह केवल बोलने में हुई एक सामान्य भूल थी।

विपक्ष ने साधा निशाना, राजनीतिक माहौल गर्माया

इस बयान के सामने आने के बाद विपक्षी नेताओं ने भाजपा पर कटाक्ष करना शुरू कर दिया है। विपक्ष की ओर से सवाल उठाए जा रहे हैं कि जो पार्टी 182 में से 182 सीटें जीतने का दावा करती है, उसके प्रदेश अध्यक्ष के मुंह से 82 का आंकड़ा कैसे निकल गया? फिलहाल सार्वजनिक मंच से दिया गया यह बयान चर्चा का विषय बना हुआ है। हालांकि, केवल इस एक बयान के आधार पर किसी आंतरिक सर्वेक्षण या पार्टी की चुनावी रणनीति के बारे में निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। यह जुबान फिसलने की घटना थी या इसके पीछे कोई अन्य राजनीतिक संदर्भ है, इस पर स्थिति स्पष्ट होना बाकी है।

सिरोही में भाजपा की करारी हार से संगठन में मचा हड़कंप, जिम्मेदारी लेने को कोई तैयार नही

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सिरोही। जिले में सांसद, राज्यमंत्री, जिला प्रमुख और चार पंचायत समितियों में प्रधान होने के बावजूद पंचायतीराज चुनाव में भाजपा को मिली करारी हार ने पार्टी संगठन के सामने गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। चुनाव परिणाम आने के बाद जिले में हार की जिम्मेदारी को लेकर चर्चा तेज है, लेकिन अब तक कोई खुलकर जिम्मेदारी लेने के लिए आगे नहीं आया है। राजनीतिक हलकों में इस नतीजे को कांग्रेस की जीत से ज्यादा भाजपा की बड़ी हार के रूप में देखा जा रहा है।चुनाव परिणामों ने



जनप्रतिनिधियों और संगठन की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। राजनीतिक जानकारों के अनुसार, पिछले तीन वर्षों से आमजन की समस्याओं को लेकर प्रभावी जनसुनवाई नहीं होना, प्रशासनिक स्तर पर लोगों के काम अटकना, सक्रिय कार्यकर्ताओं की अनदेखी और विकास कार्यों के प्रति कथित उदासीनता पार्टी के लिए नुकसानदेह साबित हुई। अस्पतालों में चिकित्सकों की नियुक्ति की मांग पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिए जाने और कार्यकर्ताओं को संगठन तथा जनप्रतिनिधियों के स्तर पर पर्याप्त महत्व नहीं मिलने से भी नाराजगी बढ़ने की बात कही जा रही है।

संगठन की कमजोरियां भी बनी चुनौती -चुनाव में भाजपा की संगठनात्मक कमजोरियां भी सामने आईं। बताया जा रहा है कि जमीनी स्तर पर सक्रिय और प्रभावशाली कार्यकर्ताओं को अपेक्षित जिम्मेदारियां नहीं मिलीं। नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन को मजबूत करने के प्रयास भी प्रभावी नजर नहीं आए।

राजस्थान में बढ़ी सर्दी, माउंट आबू में ओस की बूंदें जमने लगीं

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जोधपुर। जयपुर। राजस्थान में सर्दी का असर लगातार बढ़ने लगा है। उत्तरी हवाओं के कारण प्रदेश के कई इलाकों में रात के तापमान में गिरावट आई है। पर्वतीय पर्यटन स्थल माउंट आबू में रविवार रात तापमान करीब 3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। तेज ठंड के चलते रात में ओस की बूंदें जमने लगी हैं। सुबह और शाम के समय गलनभरी सर्दी लोगों को परेशान कर रही है। वहीं, सीकर में इस मौसम का अब तक का सबसे कम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।शेखावाटी क्षेत्र के सीकर और फतेहपुर सहित नागौर के आसपास के इलाकों में भी पिछले कई दिनों से रात का तापमान 10 डिग्री से नीचे बना हुआ है। इससे इन क्षेत्रों में रात के समय ठंड का असर बढ़ गया है। उत्तरी हवाओं के चलते प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी सुबह-शाम ठिठुरन महसूस की जा रही है।प्रदेश में सीकर का न्यूनतम तापमान 8.5 डिग्री, फतेहपुर का 8.1 डिग्री, नागौर का 8.4 डिग्री और उदयपुर का 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, पाली, भीलवाड़ा, अजमेर, अलवर, चित्तौड़गढ़, चूरू,



पिलानी और सिरोही में न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। इन शहरों में भी रात के समय सर्दी का असर तेज हो गया है।

माउंट आबू में तापमान में मामूली बढ़ोतरी

माउंट आबू में बीते दो दिनों की तुलना में तापमान में कुछ बढ़ोतरी हुई है। यहां पारा जमाव बिंदु से करीब 3 डिग्री ऊपर दर्ज किया गया। इसके बावजूद सोमवार सुबह सर्द हवाओं के कारण लोगों को काफी ठिठुरन महसूस हुई। रात के समय गिरते तापमान के चलते ओस की बूंदें जमने का सिलसिला भी जारी है।

8 सजी-धजी बैलगाड़ियों पर निकली कारोबारी के बेटे की बारात, उमड़े ग्रामीण

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पाली। आधुनिक दौर में शादियों में भव्य गाड़ियों और नए अंदाज का चलन बढ़ रहा है, लेकिन पाली जिले के सुमेरपुर क्षेत्र के बांकली गांव में एक कारोबारी ने अपने बेटे की शादी को यादगार बनाने के लिए पुरानी परंपरा को चुना। 21 नवंबर को बेटे की बारात आठ सजी-धजी बैलगाड़ियों पर निकली। करीब 2 किलोमीटर लंबी इस बारात को देखने के लिए गांव के लोग घरों से बाहर निकल आए।गोवा में रेडीमेड कपड़ों का कारोबार करने वाले समाराम उर्फ चंदनलाल घांची की इच्छा थी कि उनके बेटे कुणाल उर्फ किशोर (27) की शादी पारंपरिक अंदाज में हो, ताकि गांव के लोग इस आयोजन को लंबे समय तक याद रखें। इसी सोच के साथ उन्होंने बारात के लिए आठ बैलगाड़ियों की व्यवस्था की। वहीं, दूल्हा दुल्हन को लेने विंटेज कार से पहुंचा।बांकली गांव की गलियों से गुजरती हुई बारात करीब 2 किलोमीटर का सफर तय कर शिवलाल बोराणा के घर पहुंची। सुबह 11 बजे कुणाल और समीक्षा ने विवाह की रस्मों के तहत फेरे लिए। इसके बाद दूल्हा विंटेज कार में अपनी दुल्हन को लेकर घर लौटा। पूरे आयोजन में पारंपरिक और आधुनिक अंदाज का अनूठा मेल देखने को मिला।

एक बैलगाड़ी का 10 हजार रुपये किराया

समाराम घांची ने बताया कि बारात के लिए नाना-बेड़ा के पास स्थित लालपुरा से आठ बैलगाड़ियां मंगवाई गई थीं। प्रत्येक बैलगाड़ी का किराया 10 हजार रुपये दिया गया। वहीं, दूल्हे के लिए विंटेज कार शिवगंज से मंगवाई गई थी।समाराम के परिवार में तीन बेटियां और एक बेटा है। कुणाल भी पिता के कारोबार में हाथ बंटाता है, जबकि दुल्हन समीक्षा ने बीएससी की पढ़ाई की है। अनोखे अंदाज में निकली इस बारात ने गांव में लोगों का ध्यान खींचा और शादी को यादगार बना दिया।

यूडी टैक्स बकाया होने पर तीन शोरूम सीज, 2007 से जमा नहीं कराया था कर

पूर्व विधायक महेंद्र विश्नोई ने कार्रवाई को बताया राजनीति से प्रेरित, निगम ने 18.82 लाख रुपए का बकाया वसूला

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जोधपुर। नगर निगम ने शहरी विकास कर (यूडी टैक्स) की बकाया वसूली को लेकर सख्ती शुरू कर दी है। इसी के तहत सोमवार को शहर में तीन शोरूम के खिलाफ सीज करने की कार्रवाई की गई। इनमें एक बाइक शोरूम पर वर्ष 2007 से शहरी विकास कर बकाया चल रहा था। निगम की कार्रवाई के बाद संबंधित संचालक ने बकाया राशि जमा करवा दी। नगर निगम उपायुक्त रणवीर देथा के अनुसार, महिंद्रा हीरो शोरूम की संचालक अमरीदेवी पर वर्ष 2007 से 18 लाख 82 हजार 352 रुपए का शहरी विकास कर बकाया था। निगम की ओर से संबंधित संचालकों को बकाया राशि जमा कराने के लिए पहले तीन से चार बार नोटिस जारी किए गए थे। करीब एक सप्ताह पहले अंतिम नोटिस भी दिया गया, लेकिन इसके बावजूद राशि जमा नहीं कराई गई। इसके बाद निगम की टीम ने नियमानुसार शोरूम सीज कर दिया। कार्रवाई के बाद पूरी बकाया राशि जमा करवा दी गई। बताया जा रहा है कि यह शोरूम पूर्व कैबिनेट मंत्री रामसिंह विश्नोई की पत्नी और लूणी के पूर्व विधायक महेंद्र विश्नोई की दादी अमरीदेवी के नाम पर पंजीकृत है। कार्रवाई के बाद महेंद्र विश्नोई ने इसे राजनीति से प्रेरित बताया। उनका आरोप है कि लूणी विधानसभा क्षेत्र में पंचायत चुनावों में मिली हार के बाद सरकार बौखलाई हुई है और इसी वजह से इस तरह की कार्रवाई की जा रही है। निगम की ओर से सरदारपुरा स्थित एक आभूषण शोरूम पर भी कार्रवाई की गई, जिस पर 19.49 लाख रुपए का







कर बकाया बताया गया है। इसके अलावा झालामंड-पाली रोड स्थित एक एम्पोरियम के खिलाफ भी कार्रवाई की गई।

1500 संपत्ति मालिकों को नोटिस

नगर निगम ने शहर के करीब 1500 संपत्ति मालिकों को बकाया शहरी विकास कर जमा कराने के लिए नोटिस जारी किए हैं। इनमें 1400 संपत्ति मालिकों को 15 दिन का चेतावनी नोटिस दिया गया है, जबकि 100 लोगों को अंतिम तीन दिन का नोटिस भेजा गया है। निगम का उद्देश्य समय सीमा में बकाया कर जमा करवाना है।

व्हाट्सऐप पर भी भेजे जा रहे बकाया बिल

नगर निगम ने कर वसूली अभियान के तहत नोटिस जारी करने के साथ ही संपत्ति मालिकों को व्हाट्सऐप पर भी बकाया बिल भेजने शुरू कर दिए हैं। निगम की ओर से लोगों को उनके लंबित कर की जानकारी देकर जल्द भुगतान करने के लिए कहा जा रहा है। अब निगम की सख्ती के चलते बकाया कर नहीं चुकाने वाले संपत्ति मालिकों पर भी कार्रवाई की तलवार लटक रही है।

ड्रोन से आरडीएक्स और विदेशी हथियार भेजने वाले नेटवर्क की जांच तेज, 80 से अधिक युवकों के संपर्क खंगाल रहीं एजेंसियां

खेप पहुंचाने के बदले आरोपी सुक्खा को मिले थे 2.82 लाख रुपए, बहन के बैंक खाते में जमा करवाई रकम; मोबाइल नष्ट कर मिटाए थे साक्ष्य

महानगर मेट्रो ब्यूरो

श्रीगंगानगर। भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर ड्रोन के जरिए आरडीएक्स और विदेशी हथियारों की खेप भेजने के मामले में गिरफ्तार कुलवंत सिंह उर्फ सुक्खा से पूछताछ के बाद जांच एजेंसियों को कई अहम जानकारियां मिली हैं। अब एजेंसियां उसके संपर्क में रहे 80 से अधिक युवकों की गतिविधियों और उनके आपसी संबंधों की पड़ताल कर रही हैं। जांच का दायरा पंजाब और राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों तक फैल गया है। जांच में सामने आया है कि सुक्खा के ज्यादातर रिश्तेदार फिरोजपुर, फाजिल्का, अनूपगढ़, घड़साना, हिंदुमलकोट और करणपुर क्षेत्र के सीमावर्ती गांवों में रहते हैं। उसके रिश्तेदारों और परिचित परिवारों के कई युवक सीधे उसके संपर्क में थे।



एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि पाकिस्तान से भेजी गई हथियारों और विस्फोटक सामग्री की खेप का पता लगाने, उसे उठाने और आगे पहुंचाने में स्थानीय स्तर पर किन लोगों ने मदद की थी।

खेप पहुंचाने के बदले मिले 2.82 लाख रुपए

पूछताछ में पता चला है कि सुक्खा को खेप पहुंचाने के बदले 2 लाख 82 हजार रुपए मिले थे। उसने यह रकम पंजाब के फिरोजपुर जिले के अलीके गांव में रहने वाली अपनी बहन के बैंक खाते में जमा करवाई थी। आतंकवाद निरोधक दस्ते के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र कुमार चौधरी के अनुसार, जांच एजेंसियां उन लोगों की पहचान करने में जुटी हैं, जिन्होंने पाकिस्तान से आरडीएक्स और विदेशी हथियारों की खेप मंगवाने में सुक्खा की मदद की थी।जांच के अनुसार, सुक्खा पाकिस्तानी संचालक उमर चाचा उर्फ चाचा अली और शाह के नेटवर्क के लिए काम कर रहा था। पंजाब के जलालाबाद थाने पर हथगोला फेंकने की घटना की जांच में भी उसका नाम सामने आया था। एजेंसियों का कहना है कि वह अपने संपर्कों और लेन-देन से जुड़े साक्ष्य मिटाने के बाद अगली गतिविधि की योजना बनाता था। गिरफ्तारी से पहले उसने अपना मोबाइल फोन भी नष्ट कर दिया था, ताकि उससे जुड़े साक्ष्य हाथ न लग सकें।

12 अक्टूबर की रात खेत में गिराए गए थे तीन पैकेट

यह मामला 12 अक्टूबर की रात का है। रावला क्षेत्र के एक खेत में ड्रोन के माध्यम से तीन पैकेट गिराए जाने की सूचना मिली थी। इसके बाद एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स, सीमा सुरक्षा बल और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने संयुक्त कार्रवाई की। पैकेट उठाने पहुंचे पंजाब के दो युवकों लखविंदर सिंह रायसिख और सुखविंदर सिंह रायसिख को मौके पर पकड़ लिया गया था। कार्रवाई के दौरान तीनों पैकेटों से 7.75 किलोग्राम आरडीएक्स, दो विदेशी जिगाना पिस्तौल, चार मैगजीन और 867 कारतूस बरामद किए गए थे। इसके अलावा बैटरियां और दूर से नियंत्रित करने वाले उपकरण भी मिलने की जानकारी सामने आई थी।

गहलोत का तंज- वसुंधरा राजे ने दबंगता से चलाया शासन, भजनलाल सरकार के कामकाज में जमीन-आसमान का अंतर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जयपुर। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और मौजूदा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के शासन चलाने के तरीकों की तुलना करते हुए कहा कि दोनों के कामकाज में दिन-रात का अंतर है। उन्होंने कहा कि राजे ने दबंगता के साथ सरकार चलाई और प्रशासनिक अधिकारियों पर मजबूत पकड़ बनाए रखी थी। कई अधिकारी तो उनकी बैठकों में बीमार तक पड़ जाते थे। गहलोत ने यह बातें सोमवार सुबह जयपुर स्थित अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहीं। गहलोत ने कहा कि वसुंधरा राजे से उनके राजनीतिक मतभेद रहे और पहले कार्यकाल के दौरान पांच साल तक दोनों के बीच बातचीत तक नहीं हुई थी। इसके बावजूद उन्होंने राजे के काम करने के तरीके की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने केंद्रीय मंत्री के रूप में मिले अनुभवों का प्रदेश में इस्तेमाल किया। राजे ने अपने तरीके से शासन किया, विपक्ष के खिलाफ अभियान चलाए, चुनाव जीते और सरकार भी चलाई।

भजनलाल शर्मा के प्रति कोई शिकायत नहीं

मौजूदा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के बारे में गहलोत ने कहा कि वे प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं और मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने बताया कि दीपावली पर उन्होंने मुख्यमंत्री को शुभकामनाएं दी थीं। गहलोत के अनुसार, राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन जन्मदिन और त्योहारों जैसे अवसरों पर सामाजिक संबंध बने रहने चाहिए।गहलोत ने निवेश सम्मेलन और प्रवासी सम्मेलन को लेकर भी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से वास्तविक निवेश और रोजगार कितना मिलता है

पुष्कर मेले में 'लगान' की तर्ज पर क्रिकेट मुकाबला, विदेशी पर्यटकों ने भी दिखाया दमखम

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पुष्कर,। अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेले में सोमवार को धार्मिक आस्था, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनूठा संगम देखने को मिला। ब्रह्म चतुर्दशी के अवसर पर सप्तऋषि घाट पर संत-महात्माओं ने शाही स्नान किया। वहीं, मेला मैदान में देशी और विदेशी पर्यटकों के बीच फिल्म 'लगान' की तर्ज पर क्रिकेट मुकाबला आयोजित किया गया। कुश्ती प्रतियोगिता में भी विदेशी पर्यटकों ने अखाड़े में उतरकर अपना दमखम दिखाया। राजस्थान कुश्ती संघ की ओर से आयोजित प्रतियोगिता में ब्यावर, किशनगढ़ सहित प्रदेश के अलग-अलग शहरों से पहुंचे पहलवानों ने दांव-

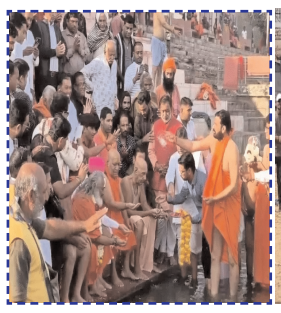



पेच दिखाए। कई देशों से आए पर्यटकों ने भी प्रतियोगिता में उत्साह के साथ हिस्सा लिया। देशी और विदेशी पहलवानों के बीच मुकाबले दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने रहे।मेले में महाराष्ट्र के ठाणे से लाई गई करीब 2 फीट कद-काठी वाली अनोखी भैंस 'पिंकी' भी लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंच रहे हैं। शाम को लोकगायक स्वरूप खान अपनी गायकी से मेले में सांस्कृतिक रंग जमाएंगे। सात मंचों से होगी ब्रह्म सरोवर की महाआरती कार्तिक पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर सोमवार शाम जयपुर घाट पर भव्य महाआरती का आयोजन किया जाएगा। सात मंचों से एक साथ होने वाली आरती के दौरान पूरा घाट भक्तिमय वातावरण में सराबोर होगा। इससे पहले तीर्थ पुरोहितों की ओर से दुग्धाभिषेक और पूजन किया जाएगा।

आज होगा पंचतीर्थ स्नान का अंतिम महास्नान

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मंगलवार को तीर्थराज पुष्कर के ब्रह्म सरोवर में पंचतीर्थ स्नान का अंतिम महास्नान होगा। इसके लिए देशभर से एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान है। महास्नान ब्रह्म मुहूर्त में शुरू होकर दिनभर चलेगा। इसके साथ ही धार्मिक मेले का समापन हो जाएगा।

आवारा कुत्तों का आतंक, एक ही दिन में 15 लोगों को काटा; 11 बच्चे घायल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जालोर। शहर में आवारा कुत्तों के हमले लगातार बढ़ रहे हैं। रविवार को अलग-अलग इलाकों में कुत्तों ने करीब 15 लोगों को काटकर घायल कर दिया। घायलों में 10 साल तक की उम्र के 11 बच्चे शामिल हैं। सभी को उपचार के लिए राजकीय अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उन्हें रेबीज से बचाव के इंजेक्शन लगाने के साथ प्राथमिक उपचार दिया गया। एक बच्ची को कुत्ते ने शरीर पर कई जगह काट लिया, जिससे वह लहूलुहान हो गई। लगातार हो रहे हमलों से शहरवासियों में भय का माहौल है। रविवार को तासखाना बावड़ी, बाईपास रोड, राजेंद्र नगर और सूरजपोल के बाहर कुत्तों ने लोगों पर हमला किया। तासखाना बावड़ी क्षेत्र में उत्तम गहलोत (14), दीपिका (21), मुस्कान (8), कार्तिक (6), वजाराम (45), हिना (8), तस्लीम (12), अनिल (4), फरदोंस (9), रवीना (4), प्रिंस (9), देविका (5) और संजय मीणा (10) घायल हुए। वहीं, राजेंद्र नगर निवासी जयदीप (9) और भीनमाल बाईपास रोड निवासी शुभम (7) को भी कुत्तों ने काट लिया। सभी घायलों को अस्पताल में उपचार दिया गया।आवारा कुत्तों की समस्या को लेकर वार्ड-6 के पार्षद मुकेश सांखला सहित कई पार्षद कुछ दिन पहले नगर परिषद में शिकायत कर चुके हैं। उन्होंने लालपोल सहित शहर के अन्य इलाकों में घूम रहे आवारा कुत्तों को पकड़कर आबादी क्षेत्र से दूर रखने की मांग की थी। इसके बावजूद प्रभावी कार्रवाई नहीं होने से लोगों में नाराजगी है।

भारतीय संस्कृति ने सदियों तक दुनिया को किया प्रभावित, अब वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने का समय : शेखावत

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री ने प्रथम शंघाई सहयोग संगठन सभ्यतागत संवाद को बताया महत्वपूर्ण पहल, बोले- 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से मजबूत होगा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा है कि भारत अपनी समृद्ध सभ्यतागत विरासत को वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में बदलने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत की संस्कृति और ज्ञान परंपरा ने सदियों तक दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है। अब समय है कि देश अपनी इस

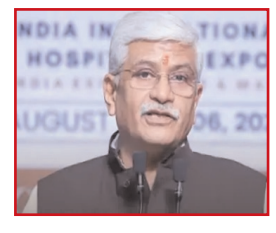

विरासत के आधार पर अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद और सहयोग को नई दिशा दे।शेखावत ने प्रथम शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सभ्यतागत संवाद को इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में किसी देश का प्रभाव केवल उसकी आर्थिक क्षमता, तकनीकी दक्षता और सामरिक शक्ति से तय नहीं होता, बल्कि उसकी वैचारिक क्षमता, सांस्कृतिक प्रभाव और विभिन्न सभ्यताओं के बीच संवाद स्थापित करने की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं और सांस्कृतिक विभाजन के दौर में सभ्यतागत विरासत का महत्व और बढ़ गया है।उन्होंने बताया कि वर्ष 2025 में तियानजिन में आयोजित एससीओ शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से रखे गए प्रस्ताव के क्रम में नई दिल्ली में प्रथम एससीओ सभ्यतागत संवाद मंच का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विभिन्न देशों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक मंच पर लाना और सभ्यताओं के बीच संवाद को अंतरराष्ट्रीय सहयोग का आधार बनाना है। शेखावत ने कहा कि भारतीय संस्कृति का प्रभाव उसकी भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहा। उपनिषदों का दर्शन, भगवान बुद्ध की करुणा और मध्यम मार्ग की शिक्षाएं, रामायण की सांस्कृतिक यात्रा, पंचतंत्र की कथाएं तथा गणित, खगोल विज्ञान, साहित्य और स्थापत्य में भारत का योगदान दुनिया के अनेक क्षेत्रों तक पहुंचा है। भारत का इतिहास बताता है कि उसका सांस्कृतिक प्रभाव शक्ति के बजाय ज्ञान, विचारों के आदान-प्रदान और विभिन्न परंपराओं के साथ संवाद के माध्यम से विकसित हुआ है 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात पूरा विश्व एक परिवार है, की अवधारणा भारतीय दर्शन को अंतरराष्ट्रीय विमर्श में महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है।

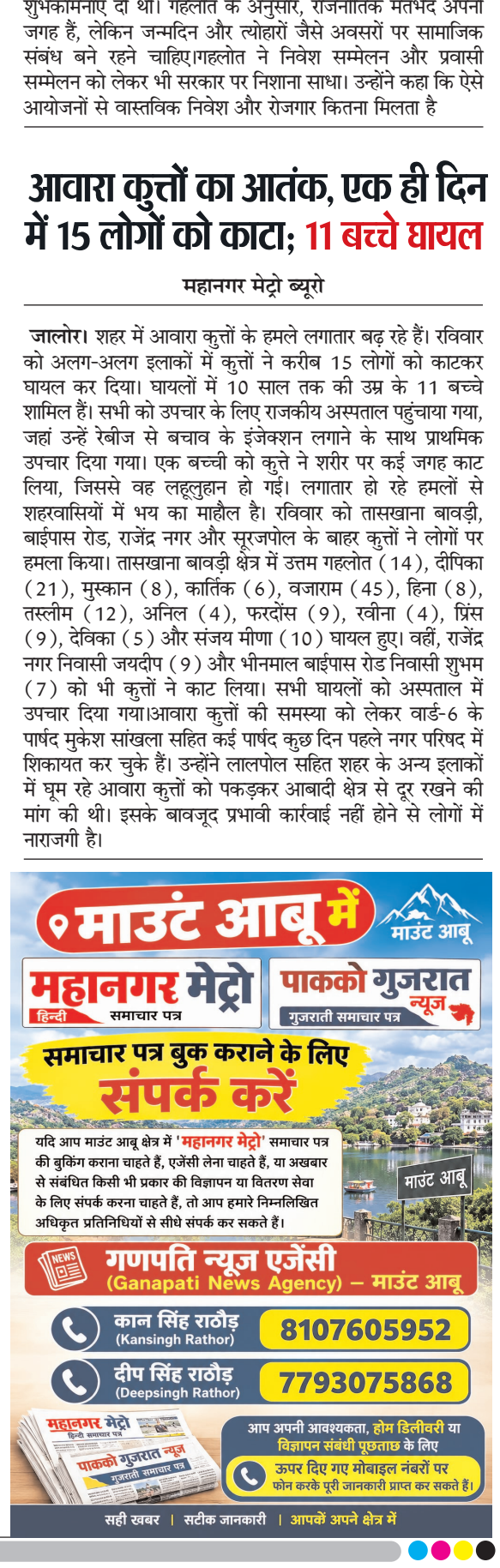

बुरा वक्त रिश्तों की असली पहचान कराता है, मुश्किल समय में ही सामने आते हैं अपनों के असली चेहरे

जीवन में इंसान को सबसे बड़ी सीख किसी किताब, विद्यालय या उपदेश से नहीं, बल्कि समय से मिलती है। समय ही ऐसा शिक्षक है, जो बिना कुछ कहे इंसान को दुनिया और रिश्तों की असली पहचान करा देता है। जब परिस्थितियां अनुकूल होती हैं, जेब में पैसा होता है, समाज में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा होती है, तब आसपास लोगों की भीड़ लगी रहती है। हर कोई अपना होने का दावा करता है। कोई दोस्ती निभाने की बात करता है तो कोई हर मुश्किल में साथ खड़े रहने का वादा करता है। उस समय ऐसा लगता है मानो पूरी दुनिया हमारी अपनी है और जरूरत पड़ने पर हर व्यक्ति हमारे लिए खड़ा मिलेगा। लेकिन जिंदगी हमेशा एक जैसी नहीं रहती। समय का पहिया घूमता है और कभी-कभी ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है, जहां इंसान को अपने ही लोगों की पहचान नए सिरे से करनी पड़ती है। जब आर्थिक स्थिति कमजोर होती है, परेशानियां घेर लेती हैं और जीवन में कठिन दौर शुरू होता है, तब रिश्तों की चमक फीकी पड़ने लगती है। जो लोग कभी एक आवाज पर दौड़े चले आने की बातें करते थे, वही धीरे-धीरे दूरी बनाने लगते हैं। फोन उठाने से बचते हैं, मुलाकात से कतराते हैं और कभी सामने आ भी जाएं तो अनजान बनकर निकल जाते हैं। यही वह समय होता है, जब इंसान को समझ आता है कि भीड़ में शामिल हर व्यक्ति अपना नहीं होता और हर मुस्कुराता चेहरा सच्ची आत्मीयता का प्रतीक नहीं होता।

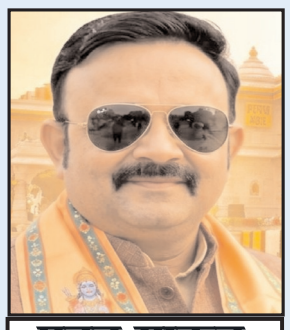

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

सुख में साथ देने वाले अनेक, दुख में साथ निभाने वाले विरले

समाज की एक कड़वी सच्चाई यह है कि आज कई रिश्ते भावनाओं से अधिक स्वार्थ के आधार पर निभाए जा रहे हैं। जब तक किसी व्यक्ति से कोई लाभ मिलता रहता है, तब तक उसकी पूछ बनी रहती है। उसके आसपास मित्रों, परिचितों और रिश्तेदारों का जमावड़ा लगा रहता है। लेकिन जैसे ही परिस्थितियां बदलती हैं, वही लोग धीरे-धीरे किनारा करने लगते हैं। कभी-कभी सबसे अधिक पीड़ा किसी बाहरी व्यक्ति के व्यवहार से नहीं, बल्कि उन लोगों की बेरुखी से होती है, जिन्हें इंसान अपना समझकर हर सुख-दुख में शामिल करता रहा। जिनके साथ वर्षों का अपनापन रहा हो, जिनके लिए समय और सामर्थ्य से बढ़कर सहयोग किया हो, जब वही लोग कठिन समय में मुंह फेर लेते हैं तो मन में कई सवाल जन्म लेने लगते हैं। आखिर क्या रिश्ते केवल अच्छे दिनों के साथी होते हैं? क्या अपनापन सिर्फ तब तक रहता है, जब तक किसी से कोई फायदा मिलता रहे? और क्या वर्षों की पहचान को परिस्थितियों की एक करवट इतनी आसानी से खत्म कर सकती है? ये सवाल इंसान को भीतर तक सोचने पर मजबूर कर देते हैं।

मुसीबत में धन से अधिक जरूरी होता है अपनापन

किसी इंसान के कठिन समय में हमेशा बड़ी आर्थिक सहायता की जरूरत नहीं होती। कई बार उसे केवल दो सहानुभूतिपूर्ण शब्द, विश्वास से भरा एक हाथ और यह कहने वाला कोई अपना चाहिए होता है कि चिंता मत करो, परिस्थितियां बदलेंगी और हम तुम्हारे साथ हैं। लेकिन आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में संवेदनाओं के लिए जगह लगातार कम होती दिखाई दे रही है। लोग दूसरों की परेशानियों को समझने के बजाय उनसे दूरी बनाना अधिक आसान समझते हैं। किसी की सफलता में शामिल होने के लिए अनेक लोग तैयार रहते हैं, लेकिन उसकी असफलता और संघर्ष के दिनों में साथ बैठने वाले बहुत कम मिलते हैं। इंसान की सबसे बड़ी पीड़ा तब होती है, जब वह बाहर की दुनिया से लड़ने के साथ-साथ अपने ही लोगों की बेरुखी का सामना करता है। भीड़ के बीच रहते हुए भी अकेलेपन का एहसास होने लगता है। ऐसे अनुभव यह समझा देते हैं कि रिश्तों की मजबूती केवल खून के संबंधों से नहीं, बल्कि विश्वास, संवेदना, सम्मान और कठिन समय में निभाए गए साथ से तय होती है।

बुरा वक्त इंसान को तोड़ता ही नहीं, बहुत कुछ सिखाता भी है

हालांकि कठिन समय को केवल निराशा और पीड़ा के रूप में देखना उचित नहीं है। यही समय इंसान को आत्मनिर्भरता, धैर्य और आत्मसम्मान का महत्व भी समझाता है। जब उम्मीद के सहारे कमजोर पड़ने लगते हैं और कोई साथ देने वाला दिखाई नहीं देता, तब इंसान अपने भीतर छिपी ताकत को पहचानना शुरू करता है। वह सीखता है कि जीवन की हर लड़ाई में दूसरों के भरोसे नहीं रहा जा सकता। अपनी जिम्मेदारियों को समझना, कठिन परिस्थितियों का सामना करना और स्वयं पर विश्वास बनाए रखना ही आगे बढ़ने का रास्ता है। साथ ही, यह अनुभव भी जरूरी है कि हर व्यक्ति को एक ही तराजू में नहीं तौलना चाहिए। कुछ लोग परिस्थितियों के कारण साथ नहीं दे पाते, जबकि कुछ लोग सचमुच अपने स्वार्थ के कारण दूरी बना लेते हैं। इसलिए किसी के व्यवहार को समझने के साथ-साथ अपने मन में कड़वाहट पालने से बचना भी जरूरी है। जिंदगी का सबसे बड़ा सत्य यही है कि समय कभी एक जैसा नहीं रहता। आज जो व्यक्ति कठिनाइयों से गुजर रहा है, उसके दिन भी बदल सकते हैं। इसलिए किसी के बुरे समय को देखकर उसका मूल्यांकन करना या उससे मुंह फेर लेना इंसानियत नहीं है।

प्रेम का एहसास और रिश्तों की पवित्रता: कोई खास व्यक्ति जिंदगी में हो तो हर सांस खूबसूरत लगने लगती है

प्रेम दुनिया की उन भावनाओं में से एक है, जिसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना आसान नहीं है। किसी को चाहना केवल क्षणिक आकर्षण या मन का मोह नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसा एहसास है, जो धीरे-धीरे इंसान के विचारों, व्यवहार और जीवन का हिस्सा बन जाता है। जब कोई व्यक्ति हमें हमारी अपनी भावनाओं से भी अधिक समझने लगता है, हमारी खामोशी में छिपे दर्द को पहचान लेता है और बिना कुछ कहे हमारे मन की बात समझ जाता है, तब वह केवल एक रिश्ता नहीं रह जाता, बल्कि हमारे अस्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाता है। जीवन में सांसों का चलना शरीर को जीवित रखता है, लेकिन किसी खास व्यक्ति की मौजूदगी जीवन को जीने का नया अर्थ दे देती है। उसकी एक मुस्कान चेहरे पर खुशी ला देती है, उसकी आवाज मन को सुकून देती है और उसकी याद भी कठिन से कठिन दिन को खूबसूरत बना देती है। यही प्रेम की वह अनुभूति है, जिसमें इंसान केवल किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं चाहता, बल्कि उसके साथ अपने जीवन की खुशियां, सपने और उम्मीदें भी जोड़ लेता है।

रिश्तों की भीड़ में किसी एक का अपना होना सबसे बड़ी खुशी

आज के व्यस्त और भागदौड़ भरे जीवन में इंसान के आसपास लोगों की कमी नहीं है, लेकिन सच्चे मन से समझने और अपनाने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। ऐसे में यदि कोई एक व्यक्ति ऐसा मिल जाए, जिसकी मौजूदगी से मन की सारी उलझनें शांत हो जाएं, तो यह किसी अनमोल सौभाग्य से कम नहीं है। दुनिया की



भीड़ में कई बार इंसान खुद को अकेला महसूस करता है। ऐसे समय में किसी अपने का एक प्यार भरा शब्द, विश्वास से भरा साथ और चेहरे पर दिखाई देने वाली आत्मीयता जीवन में नई ऊर्जा भर देती है। रिश्ते तो जीवन में अनेक बनते हैं, कुछ समय के साथ बदल जाते हैं तो कुछ परिस्थितियों के कारण दूर हो जाते हैं। लेकिन जिन रिश्तों की नींव विश्वास, सम्मान और निस्वार्थ अपनापन पर टिकी होती है, उनकी खूबसूरती समय के साथ और गहरी होती जाती है। सच्चा प्रेम वह नहीं, जिसमें हर समय अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं को प्राथमिकता दी जाए। सच्चा प्रेम वह है, जिसमें एक-दूसरे की भावनाओं को समझने, सम्मान देने और कठिन परिस्थितियों में साथ निभाने का भाव हो।

मुश्किल रास्तों पर साथ हो तो हर मंजिल आसान लगती है

जीवन की यात्रा कभी एक जैसी नहीं होती। इसमें सुख के पल भी आते हैं और दुख की घड़ियां भी। कभी रास्ते फूलों से सजे दिखाई देते हैं तो कभी परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि आगे बढ़ना भी चुनौतीपूर्ण लगने लगता है। लेकिन जब जीवन में कोई ऐसा साथी हो, जो कठिन समय में हाथ छोड़ने के बजाय विश्वास के साथ उसे थामे रखे, तब बड़ी से बड़ी परेशानी का सामना करना भी आसान हो जाता है। प्रेम की असली ताकत यही है कि वह इंसान को भीतर से मजबूत बनाता है। यह एहसास कराता है कि जीवन की कठिनाइयों से घबराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि एक-दूसरे का विश्वास और सहयोग किसी भी चुनौती का सामना करने का हौसला दे सकता है। किसी रिश्ते की मजबूती केवल साथ बिताए गए खूबसूरत पलों से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से भी तय होती है कि मुश्किल समय में दोनों एक-दूसरे के प्रति कितने संवेदनशील और जिम्मेदार रहते हैं। जहां विश्वास होता है, वहां छोटी-छोटी गलतफहमियां भी रिश्ते की नींव को कमजोर नहीं कर पातीं।

खुशियों की परिभाषा बदल देता है किसी खास का साथ

जब जीवन में कोई विशेष व्यक्ति शामिल होता है, तब खुशियों के मायने भी बदलने लगते हैं। पहले जिन उपलब्धियों और भौतिक वस्तुओं में खुशी तलाशते थे, उनसे कहीं अधिक खुशी उस व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान देखकर मिलने लगती है। उसके साथ बिताया गया सामान्य सा पल भी यादगार बन जाता है। कभी साथ बैठकर की गई छोटी-छोटी बातें, कभी भविष्य के सपने और कभी बिना किसी विशेष कारण के एक-दूसरे की याद आ जाना, ये सभी अनुभव जीवन को नई खूबसूरती देते हैं। सपनों का महत्व भी तब बढ़ जाता है, जब उन्हें देखने और पूरा करने की यात्रा में कोई अपना साथ हो। भविष्य कैसा होगा, रास्ते कितने कठिन होंगे और मंजिल तक पहुंचने में कितना समय लगेगा, इसकी चिंता कम हो जाती है। मन में बस इतना विश्वास रहता है कि यदि एक-दूसरे का साथ, समझ और सहयोग बना रहा तो हर कठिन रास्ता पार किया जा सकता है। कई बार प्रेम को व्यक्त करने के लिए शब्दों की आवश्यकता भी नहीं होती। आंखों में दिखाई देने वाली चिंता, व्यवहार में झलकता सम्मान और मौन में महसूस होने वाली आत्मीयता ही बहुत कुछ कह देती है।

प्रेम का अर्थ केवल पाना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की खुशी में खुश रहना है

प्रेम का वास्तविक अर्थ केवल किसी को अपना बना लेना या हमेशा अपने पास रखना नहीं है। इसका सबसे सुंदर रूप तब दिखाई देता है, जब इंसान दूसरे की खुशी को भी उतना ही महत्व देने लगता है जितना अपनी खुशी को देता है। रिश्ते में एक-दूसरे की स्वतंत्रता, पसंद, विचारों और व्यक्तित्व का सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है। किसी को चाहने का अर्थ उस पर अधिकार जताना नहीं, बल्कि उसे समझना, स्वीकार करना और उसकी भावनाओं की कद्र करना है। जब दो लोग एक-दूसरे की कमियों और खूबियों के साथ एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं, तब रिश्ता केवल आकर्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव का मजबूत आधार बन जाता है। यही वह पवित्रता है, जो रिश्तों को समय और परिस्थितियों के बदलाव के बावजूद जीवंत बनाए रखती है।

कुछ रिश्ते शब्दों से नहीं, एहसासों से पहचाने जाते हैं

हर इंसान के जीवन में कोई न कोई ऐसा व्यक्ति अवश्य होता है, जिसकी मौजूदगी उसके लिए विशेष मायने रखती है। कोई ऐसा, जिससे बात करके मन हल्का हो जाता है, जिसकी खुशी अपने चेहरे पर मुस्कान ले आती है और जिसकी चिंता मन को बेचैन कर देती है। ऐसे रिश्ते जीवन में बहुत कम मिलते हैं और जब मिलते हैं तो उनकी कद्र करना भी उतना ही जरूरी होता है। इसलिए यदि आपके जीवन में भी कोई ऐसा खास व्यक्ति है, जिसने आपके साधारण दिनों को खूबसूरत बनाया है, आपकी खामोशी को समझा है और आपके सपनों को अपना समझकर उनका सम्मान किया है, तो उसे अपने मन की बात जरूर बताइए। हमेशा यह मत सोचिए कि उसे सब पता होगा। कभी-कभी प्यार और अपनापन शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना भी जरूरी होता है। क्योंकि जीवन की सबसे खूबसूरत संपत्ति धन-दौलत या प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि वे रिश्ते हैं, जिनमें इंसान बिना किसी दिखावे के स्वयं जैसा रह सकता है। समय बीत जाता है, परिस्थितियां बदल जाती हैं और जीवन के अनेक पड़ाव पीछे छूट जाते हैं, लेकिन सच्चे प्रेम से जुड़ी यादें हमेशा मन में जीवित रहती हैं।

पोस्टकार्ड के दौर में मटका सट्टे का विशाल साम्राज्य: बिना इंटरनेट और मोबाइल के मुंबई से देश के कोने-कोने तक कैसे फैला था इसका नेटवर्क?

पवन माकन। आज के डिजिटल युग में मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से कुछ ही सेकंड में दुनिया के किसी भी कोने तक संदेश पहुंच जाता है। लेकिन कुछ दशक पहले का समय बिल्कुल अलग था। उस दौर में संचार का प्रमुख माध्यम पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र और तार हुआ करते थे। टेलीफोन की सुविधा भी आम लोगों तक नहीं पहुंची थी और अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में संदेश पहुंचने में कई दिन लग जाते थे। इसके बावजूद मुंबई की गलियों से शुरू हुआ मटका सट्टे का कारोबार देश के बड़े शहरों से लेकर दूरदराज के छोटे गांवों तक अपनी पहचान बना चुका था। यह सवाल आज भी दिलचस्पी पैदा करता है कि आखिर संचार के इतने सीमित साधनों के बावजूद यह कारोबार इतने बड़े स्तर पर कैसे संचालित होता था? इसका जवाब उस दौर की सामाजिक परिस्थितियों, स्थानीय संपर्कों, भरोसे पर आधारित व्यवस्था और सट्टे से जुड़े लोगों के व्यापक नेटवर्क में छिपा है।



मुंबई से गांवों तक फैला था संपर्कों का जाल

मटका सट्टे का इतिहास मुंबई के शहरी जीवन और उस समय के आर्थिक-सामाजिक परिवेश से जुड़ा रहा है। शुरुआत में कपास के भावों के उतार-चढ़ाव से जुड़े आंकड़ों पर दांव लगाने की परंपरा विकसित हुई, जो आगे चलकर मटका सट्टे के रूप में पहचान बनाने लगी। समय के साथ यह गतिविधि केवल मुंबई तक सीमित नहीं रही, बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों में इसके स्थानीय संपर्क और केंद्र बनते चले गए। उस दौर में आज की तरह त्वरित संदेश भेजने की सुविधा नहीं थी। इसलिए इस कारोबार से जुड़े लोगों के बीच व्यक्तिगत संपर्क, स्थानीय प्रतिनिधियों और पारंपरिक संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती थी। मुंबई से लेकर दूसरे शहरों और कस्बों तक फैले इस तंत्र में स्थानीय स्तर पर काम करने वाले लोगों के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान होता था। इस व्यवस्था की खास बात यह थी कि हर क्षेत्र में स्थानीय पहचान और संपर्क रखने वाले लोग मौजूद थे। इसी वजह से सीमित संचार सुविधाओं के बावजूद यह गतिविधि लंबे समय तक विभिन्न इलाकों में चलती रही।

रोजाना के हिसाब-किताब के पीछे थी बड़ी व्यवस्था

मटका सट्टे से जुड़ी गतिविधियों में केवल आंकड़ों की घोषणा ही नहीं, बल्कि लेन-देन और हिसाब-किताब का भी बड़ा महत्व था। अलग-अलग स्थानों पर जुड़े लोगों के बीच रकम का हिसाब रखना, पुराने लेन-देन का मिलान करना और स्थानीय स्तर पर जिम्मेदारियां निभाना इस व्यवस्था का हिस्सा था। आज किसी बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान में जिस तरह अलग-अलग विभागों के माध्यम से कामकाज संचालित होता है, उसी तरह इस अवैध कारोबार में भी अलग-अलग स्तरों पर लोग जुड़े हुए थे। हालांकि इसकी कार्यप्रणाली कानून के दायरे से बाहर थी और इससे जुड़े आर्थिक जोखिम भी गंभीर थे। इस पूरे घटनाक्रम का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह था कि आधुनिक तकनीक के अभाव में भी इतने बड़े स्तर पर लोगों का जुड़ाव बना रहा। यह उस समय के संचार माध्यमों और सामाजिक संपर्कों की पहुंच को भी दर्शाता है।

पोस्टकार्ड के दौर में सूचनाओं का आदान-प्रदान

पोस्टकार्ड और अंतर्देशीय पत्र उस समय आम लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। परिवारों के हालचाल से लेकर व्यापारिक सूचनाओं तक, अनेक प्रकार के संदेश इन्हीं माध्यमों से भेजे जाते थे। मटका सट्टे से जुड़े पुराने किस्सों और विवरणों में भी पत्राचार तथा व्यक्तिगत संपर्कों का उल्लेख मिलता है। उस समय सूचनाओं के आदान-प्रदान में गोपनीयता बनाए रखने की कोशिशें भी होती थीं। हालांकि अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी वास्तविक कार्यप्रणाली एक जैसी नहीं थी। इसलिए इस पूरे तंत्र को किसी एक निश्चित पद्धति से संचालित व्यवस्था मानना उचित नहीं होगा।

तकनीक बदली, लेकिन मटका सट्टे का इतिहास चर्चा में रहा

समय के साथ संचार व्यवस्था में बड़ा बदलाव आया। टेलीफोन, फैक्स, कंप्यूटर और फिर मोबाइल इंटरनेट ने सूचनाओं के आदान-प्रदान का स्वरूप पूरी तरह बदल दिया। जो संदेश पहले पहुंचने में कई दिन लेते थे, वे अब कुछ ही क्षणों में पहुंचने लगे। मटका सट्टे का पुराना दौर इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार सीमित तकनीकी संसाधनों के बीच भी अवैध आर्थिक गतिविधियां सामाजिक संपर्कों के सहारे फैल सकती थीं। हालांकि इस तरह के कारोबार में आर्थिक नुकसान, धोखाधड़ी और कानूनी कार्रवाई का खतरा हमेशा बना रहता है। कुल मिलाकर, पोस्टकार्ड के जमाने में मुंबई से देश के दूरदराज के इलाकों तक फैला मटका सट्टे का इतिहास केवल एक अवैध कारोबार की कहानी नहीं, बल्कि उस दौर की संचार व्यवस्था, सामाजिक संपर्कों और बदलते आर्थिक परिवेश का भी एक महत्वपूर्ण अध्याय है। आज जब पूरी दुनिया डिजिटल माध्यमों से जुड़ी हुई है, तब उस पुराने दौर को याद करना अपने आप में एक अलग तरह की ऐतिहासिक पड़ताल बन जाता है।

आज का राशिफल

(मंगलवार)24 नवम्बर 2026

मेष
आज आर्थिक लाभ के नए अवसर प्राप्त होंगे, कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत की सराहना होगी और परिवार में खुशी रहेगी।

वृषभ
पुराने निवेश से अच्छा मुनाफा मिल सकता है, सेहत का विशेष ध्यान रखें और बाहर के तले-भुने खाने से बचें।

मिथुन
संवाद कौशल से आपके बिगड़े काम बन जाएंगे, जीवनसाथी के साथ किसी छोटी यात्रा पर जाने का प्रोग्राम बन सकता है।

कर्क
भावनाओं पर नियंत्रण रखकर व्यावहारिक निर्णय लें, ऑफिस में सहकर्मियों के सहयोग से कोई बड़ा प्रोजेक्ट समय पर पूरा होगा।

सिंह
आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा, संतान की पढ़ाई या करियर से जुड़ी कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

कन्या
आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा, संतान की पढ़ाई या करियर से जुड़ी कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

तुला
व्यापार में नई साझेदारी लाभदायक सिद्ध होगी, दांपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी और मन प्रसन्न व शांत रहेगा।

वृश्चिक
गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें और अपनी योजनाएं गुप्त रखें, वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पूरी तरह पालन करें।

धनु
भाग्य का पूरा साथ मिलने से रुके हुए सरकारी काम बनेंगे, धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

मकर
नौकरी में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिलने के योग हैं, परिवार के बुजुर्गों की सलाह आपके लिए बहुत फायदेमंद रहेगी।

कुंभ
दोस्तों के साथ मिलकर नए विचारों पर काम करेंगे, कानूनी मामलों में राहत मिलेगी और आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

मीन
कला और साहित्य के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, मानसिक तनाव से बचने के लिए योग करें और पर्याप्त नींद लें।

काशी में आज 11 लाख दीपों से जगमगाएंगे गंगा के घाट, 40 देशों के मेहमान बनेंगे देव दीपावली के साक्षी

धर्म और आस्था की नगरी काशी में आज 24 नवंबर को देव दीपावली का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इस अवसर पर गंगा के घाट 11 लाख दीपों की रोशनी से जगमगाएंगे। आयोजन को देखने के लिए 40 देशों से मेहमानों के पहुंचने की संभावना है, जबकि करीब 15 लाख पर्यटकों के आने का अनुमान लगाया गया है। संत रविदास घाट से आदिकेशव घाट तक और वरुणा तट से लेकर मठ-मंदिरों तक दीपों की अनुपम छटा दिखाई देगी। पूरे शहर में उत्सव का माहौल है और घाटों को सजाने-संवारने का काम अंतिम चरण में पहुंच गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नमो घाट पर पहला दीप प्रज्वलित कर देव दीपावली महोत्सव का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद वे क्रूज से गंगा आरती, लेजर शो, ड्रोन प्रदर्शन और आतिशबाजी का नजारा देखेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस आयोजन को हर बार की तरह सीधे प्रसारण के माध्यम से देखेंगे। जिला प्रशासन की ओर से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया जाएगा।



पांच दीपों से शुरू हुई थी परंपरा, आज 85 से अधिक घाटों तक पहुंचा उत्सव

काशी में देव दीपावली के वर्तमान स्वरूप की शुरुआत वर्ष 1985 में हुई थी। उस समय घाट पर क्रिकेट खेलने वाले कुछ युवकों ने श्रद्धालुओं से दीप और तेल के लिए धन एकत्र कर पंचगंगा घाट पर पांच दीप जलाए थे। वर्ष 1986 में पंचगंगा, बालाजी, सिंधिया, मान मंदिर और अहिल्याबाई घाट सहित पांच घाटों पर यह आयोजन हुआ। वर्ष 1987 में कुछ अन्य लोग भी इससे जुड़े और दशाश्वमेध घाट सहित 15 घाटों तक देव दीपावली का विस्तार हुआ। इसके चौथे वर्ष अस्सी घाट भी इस आयोजन से जुड़ा। पांचवें वर्ष तक यह उत्सव 27 घाटों तक पहुंच गया और आज 85 से अधिक गंगा घाटों पर देव दीपावली महोत्सव के रूप में मनाई जाती है। पांच दीपों से शुरू हुई यह परंपरा अब देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करने वाले भव्य आयोजन का रूप ले चुकी है।

दशाश्वमेध घाट पर दिखेगी विशेष भव्यता इस बार पंचगंगा घाट पर दीप प्रज्वलन के साथ आयोजन की शुरुआत होगी, जबकि दशाश्वमेध घाट पर भव्य गंगा आरती आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहेगी। गंगा के 84 घाटों पर अलग-अलग समुदायों की ओर से दीप जलाए जाएंगे। पांडेय घाट पर काशी विश्वनाथ धाम की थीम पर दीपों की विशेष झांकी सजाई जाएगी। कुल 11 लाख दीपों में करीब 50 हजार दीप गोबर से निर्मित होंगे। दक्षिण भारतीय समुदाय की ओर से 20 हजार दीपों का दान किया जाएगा और भव्य रंगोली बनाई जाएगी। बंगाली समाज की महिलाएं विशेष पूजा-अर्चना में शामिल होंगी, जिसकी विशेष झलक केदारघाट पर दिखाई देगी। वहीं अस्सी घाट पर जय मां गंगा सेवा समिति की ओर से विशेष गंगा आरती की तैयारी की गई है।

क्रूज और होटलों के किराये में भारी बढ़ोतरी

देव दीपावली के अवसर पर काशी में पर्यटकों की भारी भीड़ को देखते हुए नौका विहार और ठहरने की व्यवस्था के किराये में भी बढ़ोतरी हुई है। गंगा में 40 लोगों की क्षमता वाले बजड़े की बुकिंग 2 से 2.5 लाख रुपये तक पहुंच गई है। छोटी नावों का किराया 20 से 30 हजार रुपये और मोटरबोट का किराया 50 हजार से एक लाख रुपये तक बताया जा रहा है। गंगोत्री क्रूज का एक कमरा तीन लाख रुपये में बुक होने की जानकारी भी सामने आई है। घाटों के आसपास स्थित होटलों में एक रात के कमरे का किराया 40 हजार से 80 हजार रुपये तक पहुंच गया है, जबकि सामान्य दिनों में यही कमरे करीब 20 से 25 हजार रुपये में उपलब्ध रहते हैं। होम स्टे के किराये में भी बढ़ोतरी हुई है। सामान्य दिनों में लगभग 800 रुपये में मिलने वाला कमरा अब 4 से 8 हजार रुपये तक में मिल रहा है। उधर, घाटों पर रंगाई-पुताई, गंगा आरती स्थलों की फूलों से सजावट और रोशनी की व्यवस्था को अंतिम रूप दिया जा रहा हैदेव दीपावली पर भारी भीड़ को देखते हुए प्रशासन ने विशेष यातायात योजना लागू की है।

आईसीयू में भर्ती नाबालिग छात्रा से वार्ड बॉय ने की छेड़छाड़, फोन नंबर मांगने और गलत तरीके से छूने का आरोप

सागर के निजी अस्पताल की घटना, सीसीटीवी में छात्रा के बिस्तर के पास संदिग्ध गतिविधि कैद

महानगर मेट्रो ब्यूरो

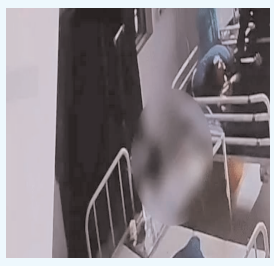

सागर। मध्य प्रदेश के सागर स्थित बरगद अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती 16 वर्षीय नाबालिग छात्रा के साथ छेड़छाड़ का गंभीर मामला सामने आया है। दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा ने अस्पताल के वार्ड बॉय राजा बंसल पर गलत तरीके से छूने और फोन नंबर मांगने का आरोप लगाया है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ छेड़छाड़ और बाल यौन अपराध संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो) के तहत मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी फिलहाल फरार है। पीड़िता के अनुसार, 21 नवंबर की सुबह करीब 4:15 बजे वह अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष में अपने बिस्तर पर सो रही थी। इसी दौरान वार्ड बॉय राजा बंसल वहां पहुंचा और उसे गलत तरीके से छूने लगा। आरोप है कि उसने छात्रा से कहा कि वह उसे अच्छी लगती है और उससे बातचीत करना चाहता है। इसके लिए उसने उसका फोन नंबर भी मांगा। छात्रा ने जब नंबर देने से मना कर दिया तो आरोपी ने दोबारा उसे गलत तरीके से छुआ और कुछ देर बाद वहां से चला गया। डर के कारण छात्रा ने शुरुआत में किसी को घटना के बारे में नहीं बताया। बाद में अस्पताल पहुंची अपनी बुआ की बेटी को उसने पूरी बात बताई। इसके बाद परिजनों ने अस्पताल में विरोध जताया और आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। सीसीटीवी में दिखाई दी संदिग्ध गतिविधि घटना से संबंधित अस्पताल का सीसीटीवी दृश्य भी सामने आया है। इसमें जैकेट पहने एक व्यक्ति छात्रा के बिस्तर के पास झुकता और उसके बगल में खड़ा दिखाई दे रहा है। दृश्य में वह कंबल के ऊपर तथा छात्रा के हाथ और शरीर के ऊपरी हिस्से के पास हाथ रखता नजर आता है। हालांकि, मामले में आरोपों की पुष्टि जांच के बाद ही होगी। सड़क हादसे में घायल होने पर हुई थी भर्ती छात्रा ने पुलिस को बताया कि वह दो दिन पहले अपने माता-पिता और भाई के साथ पंचमढ़ी से सागर आ रही थी। बरोदा के पास उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी, जिसमें उसे चोटें आई थीं। इसके बाद परिजन उसे बरगद अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां 20 नवंबर को भर्ती कराया गया था। परिजनों के विरोध के दौरान अस्पताल परिसर में शराब की पेटियों से भरी एक बोलेरो भी पहुंची। भीड़ को देखकर वाहन में सवार लोग गाड़ी छोड़कर भाग गए।

भोपाल में दर्दनाक घटना: मां और दो बच्चों की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, पति-पत्नी के विवाद के बाद हुई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के ईंटखेड़ी थाना क्षेत्र में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मौत से सनसनी फैल गई। पति-पत्नी के बीच विवाद के बाद 37 वर्षीय महिला रुकसाना और उसके दो बच्चों 12 वर्षीय रुकईया तथा 8 वर्षीय फैजल की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। शुरुआती जानकारी के अनुसार, महिला ने कथित तौर पर दोनों बच्चों को जहरीला पदार्थ देने के बाद खुद भी उसका सेवन कर लिया।



जानकारी के मुताबिक, घटना के समय घर का दरवाजा अंदर से बंद था। इसी दौरान घर से बच्चों की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग घबरा गए। पड़ोसियों ने दरवाजा खोलने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। इसके बाद कुछ लोग छत के रास्ते घर के अंदर पहुंचे और दरवाजा खोला। हालांकि, तब तक तीनों की हालत गंभीर हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और महिला तथा दोनों बच्चों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। वहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मौत से क्षेत्र में शोक और सनसनी का माहौल है। ईंटखेड़ी थाना प्रभारी आशीष सपरे के अनुसार, शुरुआती पूछताछ में पति-पत्नी के बीच विवाद की बात सामने आई है। आशंका जताई जा रही है कि घरेलू विवाद के बाद महिला ने यह कदम उठाया। हालांकि, घटना के वास्तविक कारणों की अभी पुष्टि नहीं हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। परिजनों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं और घटना से जुड़े सभी पहलुओं की पड़ताल की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद ही घटना की वास्तविक परिस्थितियां स्पष्ट हो सकेंगी।

बाराबंकी में भीषण सड़क हादसा: पिकअप और ई-रिक्शा की आमने-सामने टक्कर, तीन की मौत, पांच घायल



महानगर मेट्रो ब्यूरो

.बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में रविवार को तेज रफ्तार पिकअप और ई-रिक्शा के बीच हुई आमने-सामने की भिड़ंत में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा फतेहपुर-देवा मार्ग पर सालारपुर गांव के पास हुआ। दुर्घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। पुलिस ने पिकअप चालक को हिरासत में लेकर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, सीतापुर जिले के रामपुर मथुरा क्षेत्र के कुछ ग्रामीण काम के सिलसिले में मुंबई जाने के लिए निकले थे। उन्हें ट्रेन पकड़नी थी, इसलिए वे फतेहपुर कस्बे से ई-रिक्शा में सवार होकर बाराबंकी आ रहे थे। इसी दौरान सालारपुर गांव के पास सामने से तेज गति से आ रही पिकअप ने ई-रिक्शा को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि ई-रिक्शा में सवार यात्रियों और चालक को गंभीर चोटें आईं। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया। वहां चिकित्सकों ने दो लोगों को मृत घोषित कर दिया, जबकि तीसरे घायल ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने मृतकों की पहचान राजकुमार (29), राम विलास (24) और सोनी (35) के रूप में की है। वहीं, हादसे में जितेंद्र (38), प्रवेश (30), रणधीर (35), रिंकू यादव (27) और ई-रिक्शा चालक मैनुद्दीन (27) घायल हुए हैं। सभी का उपचार चल रहा है। पुलिस अधीक्षक रवीना त्यागी ने बताया कि पिकअप चालक अंकित मौर्य को हिरासत में ले लिया गया है। उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने तीनों मृतकों के शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए हैं। हादसे के बाद मृतकों के परिवारों में शोक का माहौल है।

बाघ नहीं, हिरण-सांभर और रंग-बिरंगे पक्षियों का दिखेगा संसार, बैतूल में शुरू होगी जंगल सफारी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बैतूल। मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में प्रकृति पर्यटन को नई पहचान देने की तैयारी तेज हो गई है। प्रदेश के पहले ताप्ती संरक्षण अभयारण्य में जल्द ही जंगल सफारी शुरू करने की योजना है। इसके लिए शनिवार को पहली बार विशेष भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और बच्चों ने सफारी वाहनों में सवार होकर लगभग 28 किलोमीटर के वन क्षेत्र का भ्रमण किया। इस दौरान जंगल की प्राकृतिक सुंदरता, वन्यजीवों और पर्यटन की संभावनाओं को करीब से देखा गया। महुपानी से शुरू हुए इस भ्रमण में घोड़ीदेव दृश्यावलोकन स्थल सहित कई प्राकृतिक स्थानों का जायजा लिया गया। इस अवसर पर महुपानी में 42 लाख रुपये से अधिक की लागत से बनने वाले सफारी प्रवेश द्वार, टिकट घर और पर्यटक सुविधाओं का भूमिपूजन भी किया गया। ताप्ती संरक्षण अभयारण्य में हिरण, सांभर, लोमड़ी सहित विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों का प्राकृतिक संसार मौजूद है। यही जैव विविधता इस सफारी को दूसरी जगहों से अलग पहचान देगी। स्थानीय युवाओं को मिलेगा रोजगार वन विभाग की योजना के अनुसार, आने वाले समय में पर्यटक विशेष वाहनों के माध्यम से जंगल की सैर कर सकेंगे। इस पहल का उद्देश्य केवल पर्यटन को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करना भी है। इसके लिए वन विभाग आसपास के गांवों के 27 युवाओं को सफारी मार्गदर्शक का प्रशिक्षण दे रहा है। प्रशिक्षित युवा पर्यटकों को जंगल और वन्यजीवों की जानकारी देने के साथ पर्यटन गतिविधियों से जुड़ सकेंगे। इसके अलावा वाहन संचालन, चालक के रूप में काम करने और घरों में पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था यानी घरेलू आवास जैसी गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को भी रोजगार से



जोड़ने की योजना है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अभयारण्य के विकास और तितली उद्यान की स्थापना के लिए लगभग 10 करोड़ रुपये देने की घोषणा की है। इससे क्षेत्र में पर्यटन सुविधाओं के विस्तार की उम्मीद बढ़ी है। पहले विशेष भ्रमण कार्यक्रम के साथ बैतूल में प्रकृति पर्यटन की नई संभावनाएं सामने आई हैं। यदि प्रस्तावित योजनाएं समय पर पूरी होती हैं, तो ताप्ती संरक्षण अभयारण्य न केवल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनेगा, बल्कि स्थानीय युवाओं और ग्रामीण परिवारों की आजीविका का भी नया माध्यम बन सकता है।

भोपाल में दर्दनाक हादसा: शादी के कार्ड बांटकर लौट रहे ठेकेदार को घोड़े ने छाती पर मारी लात, मौत

महानगर मेट्रो ब्यूरो



भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के पंचशील नगर में एक दर्दनाक हादसे में 39 वर्षीय ठेकेदार की मौत हो गई। रिश्तेदार के बेटे की शादी के कार्ड बांटकर घर लौट रहे संतोष श्रवण को सड़क किनारे खड़े एक घोड़े ने अचानक छाती पर जोरदार लात मार दी। गंभीर रूप से घायल संतोष को परिजन तत्काल अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। शादी की खुशियों के बीच परिवार में मातम छा गया। जानकारी के अनुसार, पंचशील नगर निवासी संतोष श्रवण जर्जर मकानों को तोड़ने का ठेका लेते थे। उन्होंने पिछले वर्ष अपने एक रिश्तेदार के बेटे को गोद लिया था। उसी बेटे की शादी की तैयारियों के सिलसिले में वह रिश्तेदारों को निमंत्रण पत्र बांटने निकले थे। लौटते समय रास्ते में सड़क किनारे बंधे घोड़ों के बीच से गुजर रहे थे। इसी दौरान एक घोड़े ने अचानक उन्हें छाती पर जोरदार लात मार दी। चोट इतनी गंभीर थी कि संतोष वहीं गिर पड़े और दर्द से कराहने लगे। परिजन उन्हें गंभीर हालत में निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन चिकित्सकों के तमाम प्रयासों के बावजूद उनकी जान नहीं बचाई जा सकी। घटना के बाद परिवार में शोक की लहर है। पहले भी हो चुकी हैं हमले की घटनाएं स्थानीय लोगों का आरोप है कि पंचशील नगर में बने अस्तबल के कारण रास्ते से गुजरने वाले लोगों को लगातार खतरा बना रहता है। अस्तबल में बड़े-बड़े घोड़े सड़क के दोनों ओर बांधे जाते हैं और लोगों को उनके बीच से होकर निकलना पड़ता है। लोगों का दावा है कि इससे पहले भी घोड़ों के हमले की घटनाएं हो चुकी हैं। एक घोड़े ने कथित तौर पर एक कुत्ते को भी लात मार दी थी, जिससे उसकी मौत हो गई थी। शिकायतों के बावजूद कार्रवाई नहीं होने का आरोप स्थानीय निवासियों के मुताबिक, अस्तबल हटाने को लेकर कई बार सीएम हेल्पलाइन और नगर निगम में शिकायत की गई, लेकिन कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई। लोगों का कहना है कि घोड़ों को रास्ते के दोनों ओर बांधने से आवागमन करने वालों की जान पर खतरा बना रहता है। घटना के बाद टीटी नगर पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। पुलिस हादसे की परिस्थितियों और परिजनों की ओर से लगाए गए आरोपों की जांच कर रही है।

मुजफ्फरनगर में दोहरा हत्याकांड: घर में घुसकर पिता-पुत्र की गोली मारकर हत्या, बाइक सवार हमलावर फरार

महानगर मेट्रो ब्यूरो



मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में रविवार शाम सनसनीखेज दोहरे हत्याकांड से इलाके में दहशत फैल गई। दादूपुर गांव में मोटरसाइकिल सवार अज्ञात हमलावरों ने घर में बैठे पिता-पुत्र पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं। हमले में दोनों की मौत हो गई। शुरुआती जानकारी के अनुसार, वारदात के पीछे पुरानी रंजिश की आशंका जताई जा रही है। पुलिस ने मृतकों की पहचान 65 वर्षीय मुख्तयार सिंह और उनके 35 वर्षीय बेटे सुखजिंदर के रूप में की है। जानकारी के मुताबिक, रविवार शाम दोनों अपने घर के अंदर बैठे हुए थे। इसी दौरान मोटरसाइकिल पर सवार होकर पहुंचे अज्ञात हमलावरों ने अचानक उन पर फायरिंग शुरू कर दी। गोली लगने से पिता-पुत्र की मौत हो गई। वारदात को अंजाम देने के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए। गोलीबारी की आवाज सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा पर स्थित दादूपुर गांव में हुई इस वारदात के बाद ग्रामीणों में भय का माहौल है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार राय ने बताया कि फरार हमलावरों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की चार टीमें गठित की गई हैं। पुलिस पुरानी रंजिश सहित वारदात के सभी संभावित कारणों की जांच कर रही है। फिलहाल हमलावरों की पहचान करने और उनकी गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा पर स्थित दादूपुर गांव में हुई इस वारदात के बाद ग्रामीणों में भय का माहौल है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार राय ने बताया कि फरार हमलावरों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की चार टीमें गठित की गई हैं। पुलिस पुरानी रंजिश सहित वारदात के सभी संभावित कारणों की जांच कर रही है।

पहली ही पोस्टिंग में तलाक के मुकदमे देखकर बदला जीवन का रास्ता, छह महीने में छोड़ी न्यायाधीश की नौकरी; प्रखर जैन ने अपनाया वैराग्य

लंदन से की थी उच्च शिक्षा, पिता का सपना पूरा करने के लिए बनीं सिविल न्यायाधीश; अब आर्यिका 105 सुवेधा श्री के नाम से जानी जाएंगी

महानगर मेट्रो ब्यूरो



बैतूल। पिता का सपना पूरा करने के लिए न्यायाधीश बनीं प्रखर जैन ने आखिरकार सांसारिक जीवन का त्याग कर वैराग्य का मार्ग चुन लिया। लंदन से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद न्यायिक सेवा में चयनित हुईं प्रखर की पहली नियुक्ति भोपाल में सिविल न्यायाधीश के पद पर हुई थी। लेकिन अदालत में लगातार सामने आ रहे पारिवारिक विवादों और तलाक के मुकदमों ने उनके मन में जीवन और रिश्तों को लेकर गहरा चिंतन पैदा कर दिया। महज छह महीने की नौकरी के बाद उन्होंने पद से त्यागपत्र दे दिया और आध्यात्मिक जीवन की राह पर आगे बढ़ने का निर्णय लिया। प्रखर जैन के पिता का सपना था कि उनकी बेटी न्यायाधीश बने। उन्होंने अपनी मेहनत और प्रतिभा के दम पर यह सपना पूरा भी किया। पढ़ाई में मेधावी रहीं प्रखर की शुरुआती शिक्षा भोपाल के प्रतिष्ठित विद्यालय में हुई। इसके बाद उन्होंने अहमदाबाद से विधि की पढ़ाई पूरी की और आगे की शिक्षा के लिए लंदन चली गईं। वहां उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उनका चयन न्यायिक सेवा में हुआ और उन्हें भोपाल में पहली नियुक्ति मिली। टूटते रिश्तों ने पैदा किया वैराग्य का भाव न्यायाधीश के रूप में काम करते हुए उनके सामने लगातार पति-पत्नी के विवाद और तलाक से जुड़े मामले आने लगे। सात जन्मों तक साथ निभाने का वादा करने वाले रिश्तों को कुछ महीनों या वर्षों में टूटते देख उनके मन में गहरा विचार मंथन शुरू हुआ। धीरे-धीरे उनका झुकाव सांसारिक जीवन से हटकर अध्यात्म और वैराग्य की ओर बढ़ने लगा। आखिरकार उन्होंने छह महीने की नौकरी के बाद त्यागपत्र देकर संन्यास का रास्ता अपना लिया। दीक्षा के बाद मिला नया नाम प्रखर जैन के निर्णय को परिवार ने भी स्वीकार किया और उन्हें आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने का समर्थन दिया। दीक्षा से पहले नवंबर महीने की शुरुआत में बैतूल में उनकी भव्य बिनौली निकाली गई। इस आयोजन में उदयपुर से विशेष बैंड बुलाया गया था। बिनौली के दौरान प्रखर जैन दुल्हन की तरह सजी थीं। यह उनके सांसारिक जीवन का अंतिम मांगलिक आयोजन था। इसके बाद सोनागिर में आयोजित दीक्षार्थी महोत्सव के दौरान उन्होंने जैन साध्वी की दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के साथ ही उनका नया नामकरण भी हुआ। अब वह आर्यिका 105 सुवेधा श्री के नाम से जानी जाएंगी। उनके साथ पांच अन्य महिलाओं ने भी दीक्षा लेकर वैराग्य का मार्ग अपनाया। इनमें चार्टर्ड लेखाकार और समाजसेवा से जुड़ी महिलाएं भी शामिल थीं। न्यायिक सेवा जैसी प्रतिष्ठित जिम्मेदारी छोड़कर अध्यात्म का मार्ग चुनने वाली प्रखर जैन की यह यात्रा चर्चा का विषय बनी हुई है। पिता का सपना पूरा करने के बाद अब उन्होंने अपने जीवन को धर्म, साधना और वैराग्य के लिए समर्पित कर दिया है। इसके बाद सोनागिर में आयोजित दीक्षार्थी महोत्सव के दौरान उन्होंने जैन साध्वी की दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के साथ ही उनका नया नामकरण भी हुआ। अब वह आर्यिका 105 सुवेधा श्री के नाम से जानी जाएंगी। उनके साथ पांच अन्य महिलाओं ने भी दीक्षा लेकर वैराग्य का मार्ग अपनाया। इनमें चार्टर्ड लेखाकार और समाजसेवा से जुड़ी महिलाएं भी शामिल थीं। न्यायिक सेवा जैसी प्रतिष्ठित जिम्मेदारी छोड़कर अध्यात्म का मार्ग चुनने वाली प्रखर जैन की यह यात्रा चर्चा का विषय बनी हुई है। पिता का सपना पूरा करने के बाद अब उन्होंने अपने जीवन को धर्म, साधना और वैराग्य के लिए समर्पित कर दिया है।

तंबाकू और चूना ले जाना पड़ा भारी, बहरीन में 18 लाख का जुर्माना भरकर लौटा यूपी का युवक

महानगर मेट्रो ब्यूरो



आजमगढ़। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के एक युवक को बहरीन में अपने साथ तंबाकू, सुर्ती और चूना ले जाना भारी पड़ गया। कस्टम विभाग ने उसके सामान में ये चीजें मिलने पर उसे हिरासत में ले लिया। करीब 20 दिनों तक विदेश में मुश्किलों का सामना करने के बाद युवक 18 लाख रुपये जुर्माना और वकील की फीस चुकाकर अपने घर लौट सका। अहरौला क्षेत्र के भवरूपुर गांव निवासी सौरभ राय 29 अक्टूबर को मुंबई से बहरीन पहुंचे थे। हवाई अड्डे पर कस्टम विभाग की जांच के दौरान उनके बैग में चुनौटी, सुर्ती और चूना मिला। इसके बाद अधिकारियों ने उन्हें रोककर पुलिस और अपराध जांच विभाग के हवाले कर दिया। सौरभ को करीब 18 दिनों तक हिरासत में रखा गया। सौरभ के अनुसार, हिरासत के दौरान उन्हें 16 डिग्री तापमान वाले कमरे में रखा जाता था। ओढ़ने के लिए केवल एक हल्की चादर दी जाती थी। इस दौरान उनसे लगातार पूछताछ की गई और तंबाकू से संबंधित सामान बहरीन लाने के कारणों के बारे में सवाल किए गए। लंबे समय तक हिरासत में रखने के बाद उनके सामने जुर्माना भरने अथवा जेल की सजा भुगतने का विकल्प रखा गया। परिवार ने बहरीन में रहने वाले परिचितों की सहायता से वकील की व्यवस्था की। इसके बाद जुर्माने और वकील की फीस के रूप में कुल 7200 बहरीन दीनार चुकाए गए, जिनकी भारतीय मुद्रा में कीमत लगभग 18 लाख रुपये है। 18 नवंबर को न्यायालय से रिहाई मिलने के बाद सौरभ बहरीन से रवाना हुए। उन्होंने सऊदी अरब, चेन्नई और दिल्ली होते हुए सड़क मार्ग से अपने गांव तक का सफर पूरा किया। सौरभ ने बताया कि इस पूरे घटनाक्रम के दौरान उनकी तबीयत भी बिगड़ गई। उन्हें टाइफाइड और मलेरिया होने की जानकारी मिली है और फिलहाल उनका उपचार चल रहा है।

महोबा में हैवानियत की हदें पार: बाइक टकराने के बाद युवक के गुप्तांग में घोंपा धारदार हथियार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

महोबा। उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में दो बाइकों की टक्कर के बाद विवाद ने बेहद खौफनाक रूप ले लिया। चरखारी कोतवाली क्षेत्र में राजकीय महाविद्यालय के पास तीन अज्ञात युवकों पर एक बाइक सवार के साथ मारपीट करने और उसके गुप्तांग में लोहे का धारदार हथियार डालकर गंभीर रूप से घायल करने का आरोप है। घटना के बाद हमलावर घायल युवक को सड़क किनारे छोड़कर फरार हो गए। जानकारी के अनुसार, टिलवापुरा निवासी जय सिंह अपने साथी रमेश के साथ गोवर्धन नाथ जी के मेले से बाइक पर लौट रहा था। इसी दौरान सामने से तेज गति से आ रही दूसरी बाइक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगने से दोनों बाइक सवार सड़क पर गिर गए। आरोप है कि दूसरी बाइक पर सवार तीन अज्ञात युवकों ने इसके बाद जय सिंह और उसके साथी के साथ मारपीट शुरू कर दी। बीच-बचाव करने पहुंचे व्यक्ति को भी पीटा गया। इसी दौरान हमलावरों ने जय सिंह को निशाना बनाते हुए उसके गुप्तांग में धारदार हथियार डाल दिया। हमले में जय सिंह गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद परिजन सरकारी एंबुलेंस की सहायता से उसे चरखारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। वहां से प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर महोबा जिला अस्पताल भेजा गया। जिला अस्पताल के आपातकालीन चिकित्सा अधिकारी डॉ. दीपक कुमार के अनुसार, घायल युवक के गुप्तांग में गंभीर चोट आई है और काफी रक्तस्राव हो रहा था। चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किया, लेकिन हालत की गंभीरता को देखते हुए उसे बेहतर उपचार के लिए झांसी मेडिकल कॉलेज भेज दिया गया। घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई है। पुलिस घायल युवक के साथी और परिजनों के बयान के आधार पर मामले की जांच कर रही है। तीनों अज्ञात हमलावरों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। मामूली सड़क दुर्घटना के बाद इस तरह की बर्बरता ने क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था और आपराधिक मानसिकता को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।



मेरठ में हैवानियत: बालों में रंग लगवाने पर भड़का पति, पत्नी की चोटी काटी; तेजाब डालने की भी कोशिश

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ में घरेलू विवाद के दौरान एक विवाहिता के साथ बर्बरता का मामला सामने आया है। लिसाड़ी गेट थाना क्षेत्र के समर गार्डन में बालों में रंग लगवाने की बात पर नाराज पति ने कथित तौर पर परिजनों के साथ मिलकर पत्नी के साथ मारपीट की और उसकी चोटी काट दी। महिला ने ससुराल पक्ष पर तेजाब डालने की कोशिश करने और धमकी देने का भी आरोप लगाया है। शनिवार शाम पीड़िता अपनी कटी हुई चोटी हाथ में लेकर लिसाड़ी गेट थाने पहुंची और शिकायत दर्ज कराई।पीड़िता के मुताबिक, उसकी शादी करीब तीन साल पहले समर गार्डन निवासी रिहान के साथ हुई थी। उसके दो बच्चे हैं। महिला का आरोप है कि पति उस पर अवैध संबंधों का शक करता है और इसी बात को लेकर आए दिन उसके साथ मारपीट करता है। शनिवार को वह अपने बालों में रंग लगवाना चाहती थी। इसी बात को लेकर पति नाराज हो गया और विवाद बढ़ गया।



mahangarmetro.com
महानगर मेट्रो
अहमदाबाद, (मंगलवार)
24 नवंबर 2026

तीन बेटियों के बाद बेटे की चाहत में आठ महीने के बच्चे का अपहरण, दंपती समेत तीन गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। तीन बेटियों के बाद बेटे की चाहत में एक दंपती ने ऐसा कदम उठाया कि पूरा मामला सुनकर लोग हैरान रह गए। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ निवासी दंपती ने अपने रिश्तेदार ट्रक चालक के साथ मिलकर दिल्ली के पांडव नगर से आठ महीने के बच्चे का अपहरण कर लिया। हालांकि, मंडावली थाना पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए महज 24 घंटे के भीतर बच्चे को अलीगढ़ के एक गांव से सुरक्षित बरामद कर लिया। पुलिस ने आरोपी दंपती और उनके रिश्तेदार को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान ऋषिपाल (40), छतरू (50) और उसकी पत्नी कुसमा (45) के रूप में हुई है। ऋषिपाल ट्रक चालक है, जबकि छतरू खेती करता है। पुलिस के अनुसार, दंपती की पहले से तीन बेटियां हैं और वे बेटे की चाहत रखते थे। इसी इच्छा में दोनों ने करीब एक साल पहले बच्चा हासिल करने की योजना बनाई थी। सामान लेने गई महिला से बच्चा छीनकर भागा आरोपी पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार के अनुसार, बच्चे की मां लक्ष्मी ई-रिक्शा चलाती हैं। दिल्ली सरकार की ओर से उन्हें ई-रिक्शा उपलब्ध कराया गया था। बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी ज्योति नामक महिला को दी गई थी, जो परिवार के साथ ही रहती थी। 20 नवंबर को ज्योति बच्चे को लेकर पांडव नगर में कुछ सामान खरीदने गई थी। इसी दौरान सुबह करीब 11:30 बजे एक अज्ञात व्यक्ति उसके पास आया और बातचीत करने लगा। बातचीत के बीच ही वह आठ महीने के बच्चे को लेकर अचानक फरार हो गया। घटना के बाद लक्ष्मी ने पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी।



टिल्लू गिरोह के बदमाश ने प्रॉपर्टी कारोबारी को अगवा कर कनपटी पर तानी पिस्तौल, पवन उर्फ मक्खी गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली में टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के सक्रिय बदमाश पवन कुमार उर्फ मक्खी को बाहरी-उत्तर जिला पुलिस के विशेष दस्ते ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोप है कि उसने अपने साथी के साथ मिलकर एक संपत्ति कारोबारी का अपहरण किया और पिस्तौल की नोक पर उससे जबरन समझौता पत्र पर हस्ताक्षर कराए। आरोपी अग्रिम जमानत याचिका खारिज होने के बाद से फरार चल रहा था। उसके खिलाफ दिल्ली और हरियाणा में रंगदारी, संगठित अपराध और जानलेवा हमले सहित कई मामले दर्ज हैं। पुलिस के अनुसार, अकबरपुर माजरा गांव निवासी राकेश कुमार ने 29 अक्टूबर को अलीपुर थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि 27 अक्टूबर को नरेंद्र उर्फ भोलू ने उन्हें घर के बाहर बुलाया। वहां पहले से मौजूद पवन उर्फ मक्खी के साथ मिलकर आरोपियों ने उन्हें काली महिंद्रा स्कॉर्पियो-एन में जबरन बैठा लिया और अगवा कर लिया। आरोपियों ने उन्हें पल्ला-झांगोला मार्ग और बख्तावरपुर स्थित सुनील तंवर उर्फ राजू के कार्यालय सहित कई स्थानों पर बंधक बनाकर रखा। इस दौरान उन पर अलीपुर थाने में दर्ज पुराने मुकदमे को वापस लेने और उसमें गवाही नहीं देने का दबाव बनाया गया। आरोप है कि पवन ने राकेश की कनपटी पर पिस्तौल तानकर जान से मारने की धमकी दी और जबरन समझौता पत्र पर हस्ताक्षर करा लिए। साथी पहले ही गिरफ्तार, स्कॉर्पियो भी बरामद मामले की जांच के दौरान पुलिस ने 30 अक्टूबर को नरेंद्र उर्फ भोलू को गिरफ्तार कर लिया था। उसके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल की गई स्कॉर्पियो भी बरामद की गई थी, लेकिन पवन लगातार पुलिस को चकमा देकर फरार चल रहा था। छह नवंबर को रोहिणी की सत्र अदालत ने उसकी अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद पुलिस ने उसकी तलाश तेज कर दी और तकनीकी निगरानी के साथ संभावित ठिकानों पर छापेमारी शुरू की। 21 नवंबर को पुलिस के हत्थे चढ़ा आरोपी पुलिस उपायुक्त शोभित डी. सक्सेना के अनुसार, विशेष दस्ते ने लगातार निगरानी और तलाश के बाद 21 नवंबर को पवन कुमार उर्फ मक्खी को गिरफ्तार कर लिया।



दिल्ली जल बोर्ड घाटा कम करने के लिए अपनी पांच संपत्तियों का करेगा व्यावसायिक पुनर्विकास



महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली जल बोर्ड 73 हजार करोड़ रुपये से अधिक के भारी घाटे को कम करने के लिए अपनी पांच प्रमुख संपत्तियों का व्यावसायिक पुनर्विकास कराने की तैयारी कर रहा है। इसके तहत जल बोर्ड के मुख्यालय और कर्मचारियों के आवासीय परिसरों का नए सिरे से विकास किया जाएगा। योजना को आगे बढ़ाने के लिए लेनदेन सलाहकार नियुक्त किया जाएगा, जो संपत्तियों की कीमत, उनकी स्थिति और पुनर्विकास से होने वाली संभावित आय का आकलन करेगा। पुनर्विकास के लिए जिन पांच संपत्तियों को चिह्नित किया गया है, उनमें झंडेवालान स्थित जल बोर्ड का मुख्यालय वरुणालय, हैदरपुर का वरुण निकेतन कर्मचारी आवास, आराम बाग के एक मंजिला कर्मचारी आवास, रिठाला स्थित वरुण कुंज और लाजपत नगर के जल विहार में बने कर्मचारी आवास शामिल हैं। अधिकारियों के अनुसार, इस प्रस्ताव को अगस्त में ही मंजूरी दी जा चुकी है। अब इन संपत्तियों के मूल्यांकन और विकास की संभावनाएं तलाशने के लिए सलाहकार नियुक्त किया जाएगा। भौतिक सर्वेक्षण और मानचित्रण भी होगा सलाहकार इन सभी संपत्तियों और भवनों का सत्यापन करेगा। इसके साथ ही जमीन का भौतिक सर्वेक्षण और भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से मानचित्रण कराया जाएगा। सलाहकार यह भी सुझाव देगा कि किन संपत्तियों का विकास किस तरीके से किया जाए, ताकि जल बोर्ड को अधिकतम राजस्व प्राप्त हो सके। पुनर्विकास से होने वाली संभावित आमदनी का भी आकलन किया जाएगा। चिह्नित संपत्तियों में झंडेवालान स्थित जल बोर्ड मुख्यालय का क्षेत्रफल 26,620 वर्ग मीटर है। आराम बाग के एक मंजिला कर्मचारी आवास का क्षेत्रफल 1,922 वर्ग मीटर, जबकि हैदरपुर स्थित वरुण निकेतन का क्षेत्रफल 32,010 वर्ग मीटर है। लाजपत नगर के जल विहार स्थित कर्मचारी आवास 3,205.68 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला है। एक मंजिला आवासों की जगह बन सकती हैं ऊंची इमारतें अधिकारियों के मुताबिक, पहाड़गंज के पास आराम बाग में दो स्थानों पर बने एक मंजिला कर्मचारी आवासों की जगह बहुमंजिला इमारतें बनाई जा सकती हैं। इससे अधिक कर्मचारियों को आवास उपलब्ध कराने के साथ शेष जमीन का व्यावसायिक उपयोग भी संभव होगा।

अमेरिका में 'रामायण' की कमाई पर लगा ब्रेक, तीसरे सप्ताह में 800 सिनेमाघरों से हटेगी फिल्म

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अमेरिका। नितेश तिवारी की बड़े बजट की फिल्म 'रामायण' को अमेरिकी सिनेमाघरों में झटका लगा है। टिकटों की बिक्री में गिरावट के चलते तीसरे सप्ताह में फिल्म को करीब 800 सिनेमाघरों से हटाए जाने की तैयारी है। शुरुआत में अमेरिका के 1,400 से अधिक सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई यह फिल्म अब सीमित सिनेमाघरों में ही दिखाई देगी। रिपोर्ट के अनुसार, दूसरे सप्ताह में ही फिल्म 300 से अधिक सिनेमाघरों से हट गई थी। शुक्रवार से इसकी स्क्रीन संख्या घटकर लगभग 681 रहने की उम्मीद है। इस तरह शुरुआती प्रदर्शन के मुकाबले फिल्म 700 से अधिक सिनेमाघर खो चुकी होगी। दुनियाभर में 150 मिलियन डॉलर की कमाई अमेरिका में स्क्रीन की संख्या घटने के बीच फिल्म ने दुनियाभर के बॉक्स ऑफिस पर 150 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कमाई का आंकड़ा पार कर लिया है। यह कमाई वर्ष 2023 की फिल्म 'आरआरआर' और इस साल की कुछ हॉलीवुड फिल्मों से भी अधिक बताई जा रही है। अमेरिकी बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने सप्ताहांत में 28 मिलियन डॉलर की कमाई की है। हालांकि, फिल्म की कमाई और उसके बजट के बीच बड़ा अंतर है। इसका निर्माण बजट करीब 200 मिलियन अमेरिकी डॉलर बताया जा रहा है। ऐसे में लागत की भरपाई के लिए इसे अभी और बड़ी कमाई करनी होगी। फिल्म उद्योग के जानकारों के अनुसार, इतने बड़े बजट की फिल्मों को लागत निकालने के लिए आमतौर पर बजट से लगभग दोगुनी कमाई की जरूरत पड़ती है। दो भागों में बनेगी फिल्म दीपावली से ठीक पहले प्रदर्शित होने के कारण फिल्म को शुरुआती सप्ताह में दर्शकों का अच्छा प्रतिसाद मिला था। पहले सप्ताह में ही इसने दुनियाभर में 100 मिलियन डॉलर की कमाई का आंकड़ा पार कर लिया था। 'रामायणः राइज ऑफ ए लीजेंड' हिंदू महाकाव्य रामायण पर आधारित दो भागों वाली फिल्म श्रृंखला का पहला भाग है। निर्माता नमित मल्होत्रा के अनुसार, दोनों भागों का कुल बजट 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। इस विशाल बजट के चलते यह भारतीय सिनेमा की सबसे महंगी फिल्म श्रृंखलाओं में शामिल है। दुनियाभर में हुई कमाई के बावजूद अमेरिकी सिनेमाघरों में घटती स्क्रीन संख्या इसके प्रदर्शन को लेकर नई चुनौती पेश कर रही है।दो भागों में बनेगी फिल्म दीपावली से ठीक पहले प्रदर्शित होने के कारण फिल्म को शुरुआती सप्ताह में दर्शकों का अच्छा प्रतिसाद मिला था। पहले सप्ताह में ही इसने दुनियाभर में 100 मिलियन डॉलर की कमाई का आंकड़ा पार कर लिया था। 'रामायणः राइज ऑफ ए लीजेंड' हिंदू महाकाव्य रामायण पर आधारित दो भागों वाली फिल्म श्रृंखला का पहला भाग है। निर्माता नमित मल्होत्रा के अनुसार, दोनों भागों का कुल बजट 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। इस विशाल बजट के चलते यह भारतीय सिनेमा की सबसे महंगी फिल्म श्रृंखलाओं में शामिल है। दुनियाभर में हुई कमाई के बावजूद अमेरिकी सिनेमाघरों में घटती स्क्रीन संख्या इसके प्रदर्शन को लेकर नई चुनौती पेश कर रही है।



पनवेल-कर्जत रेल मार्ग पर 15 दिसंबर से शुरू होगी बिजली आपूर्ति, लोकल ट्रेन के परीक्षण का रास्ता साफ

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। मुंबई की उपनगरीय रेल सेवा में एक नया गलियारा जुड़ने की दिशा में काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। पनवेल और कर्जत के बीच बन रहे 29.6 किलोमीटर लंबे नए रेल मार्ग पर 15 दिसंबर 2026 से बिजली आपूर्ति शुरू करने की तैयारी है। मुंबई रेल विकास निगम के अनुसार, बिजली आपूर्ति शुरू होने के बाद इस मार्ग पर तकनीकी जांच और रेलगाड़ियों के परीक्षण का रास्ता साफ हो जाएगा। सभी सुरक्षा जांच और आवश्यक मंजूरी मिलने के बाद यात्रियों के लिए लोकल रेल सेवा शुरू की जा सकेगी। पनवेल और कर्जत के बीच मिलेगी सीधी रेल सुविधा नया रेल मार्ग शुरू होने से पनवेल और कर्जत के बीच सीधी उपनगरीय रेल सुविधा उपलब्ध होगी। फिलहाल इस दिशा में यात्रा करने वाले यात्रियों को लंबा रास्ता तय करना पड़ता है। नई रेल लाइन से उन्हें वैकल्पिक मार्ग मिलेगा। इससे कल्याण रेल मार्ग पर यात्रियों की भीड़ और दबाव कम करने में भी मदद मिलने की उम्मीद है। कर्जत, पनवेल और नवी मुंबई के बीच रोजाना आवागमन करने वाले यात्रियों को विशेष राहत मिल सकती है। पांच स्टेशन और तीन सुरंगें बनेंगी आकर्षण करीब 2,782 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना में कुल पांच स्टेशन बनाए जा रहे हैं। इनमें पनवेल, चिखले, मोहोपे, चौक और कर्जत शामिल हैं। इस रेल मार्ग पर तीन सुरंगों का निर्माण किया गया है। इनमें वावरले गांव के पास बनी 2.6 किलोमीटर लंबी सुरंग प्रमुख है। इसके अलावा रेल उपरिगामी पुलों और छोटे-बड़े पुलों का निर्माण भी किया गया है। चरणबद्ध तरीके से शुरू होगी बिजली आपूर्ति रेल विकास निगम की योजना के अनुसार, 15 दिसंबर से या इसके बाद नए मार्ग की दोनों रेल पटरियों, रेल साइडिंग और अन्य संबंधित पटरियों पर बिजली आपूर्ति शुरू की जाएगी। इसके बाद बिजली व्यवस्था, संकेत प्रणाली और अन्य तकनीकी उपकरणों की जांच होगी। सभी व्यवस्थाओं के सही पाए जाने पर रेलगाड़ियों का परीक्षण किया जाएगा। सुरक्षा संबंधी औपचारिकताएं पूरी होने और रेलवे की मंजूरी मिलने के बाद ही नियमित यात्री सेवा शुरू होगी। बिजली के तारों से दूर रहने की अपील रेलवे ने बिजली आपूर्ति शुरू होने से पहले आसपास रहने वाले लोगों और निर्माण कार्य में लगे कर्मचारियों को सावधानी बरतने की सलाह दी है।



चलती ट्रेन से उतरते समय प्लेटफॉर्म और डिब्बे के बीच फंसा युवक, एएसआई ने दौड़कर बचाई जान

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अकोला। महाराष्ट्र के अकोला रेलवे स्टेशन पर चलती ट्रेन से उतरने की कोशिश एक 24 वर्षीय युवक के लिए जानलेवा साबित हो सकती थी। युवक वीडियो कॉल पर बात करते हुए ट्रेन से उतरने लगा, लेकिन संतुलन बिगड़ने से वह ट्रेन और प्लेटफॉर्म के बीच फंस गया। इसी दौरान ड्यूटी पर तैनात रेलवे पुलिस के सहायक उपनिरीक्षक राजेश नागरे ने फुर्ती दिखाते हुए उसे ट्रेन के नीचे जाने से पहले सुरक्षित बाहर खींच लिया। घटना रात करीब 9:30 बजे प्लेटफॉर्म नंबर एक की है। नागपुर से मुंबई की ओर जा रही विदर्भ एक्सप्रेस (12106) अकोला स्टेशन पहुंच रही थी। इसी दौरान मध्य प्रदेश के कटनी जिले के चारगांव निवासी 24 वर्षीय भानू प्रसाद अंगत प्रसाद लोधी ने ट्रेन की गति पूरी तरह धीमी होने से पहले ही विपरीत दिशा में उतरने की कोशिश की। युवक के हाथ में बैग था और वह मोबाइल पर वीडियो कॉल के जरिए किसी से बातचीत कर रहा था। जल्दबाजी में उसका संतुलन बिगड़ा और वह ट्रेन के फुटबोर्ड तथा प्लेटफॉर्म के बीच फंस गया। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सहायक उपनिरीक्षक राजेश नागरे तुरंत दौड़े और युवक को पकड़कर सुरक्षित बाहर खींच लिया। मौके पर महिला हेड कांस्टेबल दुर्गा रामटेके और पुलिस कांस्टेबल भूषण भी तैनात थे। रेलवे पुलिस की तत्परता से एक बड़ा हादसा टल गया। दूसरी ट्रेन पकड़ने की जल्दबाजी में उठाया जोखिम पुलिस पूछताछ में युवक ने बताया कि वह नागपुर से विदर्भ एक्सप्रेस में सवार होकर अकोला पहुंचा था। उसे प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर खड़ी काकीनाडा-कर्नूल टाउन एक्सप्रेस से लातूर जाना था। दूसरी ट्रेन के रवाना होने का समय नजदीक होने के कारण उसने जल्दबाजी में चलती ट्रेन से उतरने का प्रयास किया। इसी दौरान वह हादसे का शिकार हो गया। रेलवे पुलिस स्टेशन के निरीक्षक अमोल दोंड ने यात्रियों से अपील की है कि वे कभी भी चलती ट्रेन से उतरने या उसमें चढ़ने की कोशिश न करें। उन्होंने कहा कि यात्रियों की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। ट्रेन दोबारा मिल सकती है, लेकिन एक बार गई जिंदगी वापस नहीं आती। यह घटना एक बार फिर बताती है।



सीबीआई छापे के बाद एमसीडी के विज्ञापन विभाग की खुली जांच, कैग खंगालेगा तीन साल के रिकॉर्ड

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के विज्ञापन विभाग में कथित वित्तीय अनियमितताओं और राजस्व में गड़बड़ी की जांच तेज हो गई है। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की छापेमारी के बाद अब नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने भी विभाग का लेखा-परीक्षण शुरू कर दिया है। जांच के दायरे में वर्ष 2023 से 2026 तक के रिकॉर्ड शामिल किए गए हैं। शुरुआती आकलन में निगम को 125 से 150 करोड़ रुपये तक के संभावित राजस्व नुकसान की आशंका जताई गई है। जानकारी के अनुसार, चार से पांच अधिकारियों की टीम दिल्ली के सिविक सेंटर स्थित 25वीं मंजिल पर विज्ञापन विभाग की फाइलों और कंप्यूटर रिकॉर्ड की जांच कर रही है। यह लेखा-परीक्षण उपराज्यपाल कार्यालय के आदेश पर कराया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य विज्ञापन से होने वाली आय में कथित गड़बड़ियों का पता लगाना और यह निर्धारित करना है कि इसके लिए कौन अधिकारी जिम्मेदार हैं। राजस्व वसूली में आई बड़ी गिरावट शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, विज्ञापन विभाग ने 17 नवंबर 2025 तक 265.42 करोड़ रुपये की वसूली की थी। वहीं, 17 नवंबर 2026 तक यह रकम घटकर 225.25 करोड़ रुपये रह गई। राजस्व वसूली में आई इस गिरावट ने विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। कैग की टीम अब यह जांच करेगी कि विज्ञापन स्थलों के आवंटन, लाइसेंस शुल्क और बकाया वसूली में कहीं अनियमितता तो नहीं हुई। यूनीपोल मामले में 15 लाख की रिश्वत का आरोप विज्ञापन विभाग में कथित भ्रष्टाचार का मामला 16 सितंबर 2026 को सीबीआई की छापेमारी के बाद सामने आया था। आरोप है कि विभाग के अधिकारी अनिल कुमार उर्फ खत्री ने एक विज्ञापन कंपनी के साथ मिलीभगत कर रखी थी।



प्रदूषण पर लगाम लगाने की कोशिशों में दिल्ली पिछड़ी, कई अहम लक्ष्य अब भी अधूरे

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों की हकीकत अब सामने आने लगी है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की ओर से जारी अंतरिम रिपोर्ट में दिल्ली सहित हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े कार्यों का आकलन किया गया है। 31 अक्टूबर 2026 तक की प्रगति के आधार पर तैयार इस रिपोर्ट में दिल्ली कई महत्वपूर्ण लक्ष्यों को पूरा करने में पिछड़ती दिखाई दी है। सार्वजनिक परिवहन, पार्किंग व्यवस्था, कचरा निस्तारण और हरित शवदाह गृहों के निर्माण जैसे क्षेत्रों में अपेक्षित उपलब्धि हासिल नहीं हो सकी है। आयोग ने प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े 29 मानकों पर चार राज्यों के प्रदर्शन की समीक्षा की है। इनमें वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्र, निर्माण और विध्वंस से निकलने वाले मलबे का निस्तारण, औद्योगिक इकाइयों की जांच, कूड़े के पहाड़ों का निपटारा, पराली प्रबंधन, सड़कों की धूल पर नियंत्रण और सार्वजनिक परिवहन जैसे विषय शामिल हैं। प्रदर्शन के आकलन के लिए तीन श्रेणियां निर्धारित की गई हैं। शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने पर संतोषजनक, 75 से 100 प्रतिशत से कम उपलब्धि पर सुधार की आवश्यकता और 75 प्रतिशत से कम उपलब्धि पर असंतोषजनक श्रेणी रखी गई है। यह वर्ष 2026 का अंतरिम रिपोर्ट कार्ड है। अंतिम रिपोर्ट जनवरी 2027 में जारी होगी। यानी दिल्ली सरकार के पास शेष समय में अपनी स्थिति सुधारने का अवसर है। बसों और पार्किंग के लक्ष्य में बड़ी कमी रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली ने 19 वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य पूरा कर लिया है।



नवी मुंबई में भीषण अग्निकांड, तेल कंपनी से उठी आग ने प्लाईवुड और कूरियर कंपनी को भी चपेट में लिया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नवी मुंबई। वाशी के सेक्टर-18 में रविवार रात एक तेल कंपनी में भीषण आग लगने से हड़कंप मच गया। आग ने कुछ ही देर में विकराल रूप धारण कर लिया और पास स्थित प्लाईवुड तथा कूरियर कंपनी के परिसर को भी अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटें रात करीब 2 बजे तक उठती रहीं। राहत की बात यह रही कि इस घटना में किसी के हताहत होने या परिसर के अंदर किसी व्यक्ति के फंसे होने की सूचना नहीं मिली। शुरुआती जानकारी के अनुसार, आग रविवार रात करीब 9 बजे तेल कंपनी के परिसर से शुरू हुई। वहां मौजूद ज्वलनशील पदार्थों के कारण लपटें तेजी से फैल गईं और आसपास की दोनों कंपनियों तक पहुंच गईं। आग की ऊंची लपटें और काले धुएं का गुबार दूर-दूर तक दिखाई देने लगा, जिससे पूरे इलाके में दहशत फैल गई। सूचना मिलते ही नवी मुंबई दमकल विभाग की 10 से 12 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। दमकल कर्मियों ने चारों ओर से पानी की बौछार कर आग को फैलने से रोकने का प्रयास किया। आग पर काबू पाने के लिए रातभर अभियान चलाया गया। आग लगने का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। दमकल विभाग और स्थानीय पुलिस की टीमें घटना की जांच करेंगी। फिलहाल प्रशासन की प्राथमिकता आग पर पूरी तरह काबू पाने और प्रभावित परिसरों में शीतलन प्रक्रिया पूरी करने की है। इस अग्निकांड में तीनों कंपनियों का करोड़ों रुपये का सामान जलकर नष्ट होने की आशंका जताई जा रही है। फिलहाल प्रशासन की प्राथमिकता आग पर पूरी तरह काबू पाने और प्रभावित परिसरों में शीतलन प्रक्रिया पूरी करने की है। इस अग्निकांड में तीनों कंपनियों का करोड़ों रुपये का सामान जलकर नष्ट होने की आशंका जताई जा रही है।



पुणे में वीजा अवधि समाप्त होने के बाद भी रह रहीं 19 विदेशी महिलाएं पकड़ी गईं

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पुणे। महाराष्ट्र के पुणे में वीजा की अवधि समाप्त होने के बावजूद भारत में रह रही 19 विदेशी महिलाओं का पता चला है। पुलिस ने इनके खिलाफ देश से वापस भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह कार्रवाई शहर में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों की जानकारी मिलने के बाद की गई। पुलिस के अनुसार, पुणे पुलिस आयुक्त अमितेश कुमार को सूचना मिली थी कि कुछ विदेशी नागरिकों के वीजा की अवधि समाप्त हो चुकी है, लेकिन वे इसके बावजूद शहर में रह रहे हैं। इसके बाद उन्होंने विशेष शाखा को जांच और कार्रवाई के निर्देश दिए। तीन इलाकों में तलाशी अभियान पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, 20 नवंबर को कोरेगांव पार्क, मांजरी और मुंढवा इलाकों में तलाशी अभियान चलाया गया। यह कार्रवाई पुलिस उपायुक्त डॉ. प्रशांत अमृतकर की देखरेख में की गई। अभियान के दौरान 19 विदेशी महिलाएं मिलीं, जिनके वीजा की अवधि समाप्त हो चुकी थी। पुलिस का कहना है कि ये महिलाएं वीजा से जुड़ी शर्तों और नियमों का उल्लंघन कर भारत में रह रही थीं। फिलहाल सभी के खिलाफ देश से वापस भेजने की प्रक्रिया जारी है। प्रशासन की ओर से आवश्यक कार्रवाई पूरी किए जाने के बाद उन्हें भारत से उनके देश भेजा जाएगा।



बीड में बिजली के तारों से निकली चिंगारी ने जलाया 5 एकड़ गन्ना, आग बुझाते समय किसान भी झुलसा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बीड। महाराष्ट्र के बीड जिले में बिजली के तारों से निकली चिंगारी के कारण लगी आग में किसान की पांच एकड़ गन्ने की फसल जलकर राख हो गई। अपनी आंखों के सामने फसल को जलता देख आग बुझाने पहुंचे किसान भी लपटों की चपेट में आकर झुलस गए। घटना के बाद क्षेत्र में चिंता का माहौल है। जानकारी के अनुसार, बीड जिले के केज तालुका के सातेफल शिवार में किसान संजीवन नामदेव कांदे के खेत में खड़ी गन्ने की फसल में अचानक आग लग गई। बताया जा रहा है कि खेत के ऊपर से गुजर रही बिजली की तारों में चिंगारी उठने से आग लगी और देखते ही देखते उसने विकराल रूप ले लिया आग की सूचना मिलते ही किसान संजीवन कांदे खेत पर पहुंचे और फसल को बचाने के लिए आग बुझाने का प्रयास करने लगे। इसी दौरान वह आग की लपटों की चपेट में आ गए और झुलसकर घायल हो गए।



एटेरो खनिज कारोबार में 3,000 करोड़ का निवेश करेगी

नई दिल्ली ।

ई-कचरा पुनर्चक्रण कंपनी एटेरो की अपने खनिज निष्कर्षण क्षमता को बढ़ाने के लिए अगले पांच वर्षों में 3,000 करोड़ रुपये का निवेश करने की योजना है। कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने यह जानकारी दी। एटेरो के एक अ धिकारी ने बताया कि कंपनी अगले चार वर्षों में अपनी कुल ई-कचरा पुनर्चक्रण क्षमता को चार गुना से अधिक बढ़ाकर 10 लाख टन करने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा कि हम खास तौर पर अगले पांच वर्षों में महत्वपूर्ण खनिज संयंत्र के विस्तार में करीब 3,000 करोड़ रुपये का निवेश करने पर विचार कर रहे हैं। इसका लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा लिथियम, निकेल में जाएगा। एटेरो का दावा है कि वह सोना, चांदी, तांबा, एल्युमीनियम, निकेल, लिथियम, कोबाल्ट और नियोडिमियम, डिस्प्रोसियम जैसे दुर्लभ पृथ्वी खनिजों सहित 22 से अधिक महत्वपूर्ण खनिज निकालती है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक कचरा पुनर्चक्रण की हमारी मौजूदा क्षमता लगभग 2,25,000 टन सालाना है। हम अगले चार वर्षों में इसे बढ़ाकर 10 लाख टन करना चाहते हैं। हम अगले चार वर्षों में अपने लिथियम और बैटरी पुनर्चक्रण संयंत्र को भी लगभग पांच गुना बढ़ा रहे हैं।

साइबर बीमा को स्मार्ट बनाए भारत-डेलॉयट इंडिया

एआई हमलों से निपटने के लिए वास्तविक समय आधारित जोखिम आकलन जरूरी

नई दिल्ली ।

भारत में बढ़ते डिजिटल जोखिमों के बीच डेलॉयट इंडिया ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट डिफेंडिंग द डिजिटल इंश्योरर में देश की साइबर बीमा कंपनियों के लिए एक महत्वपूर्ण बदलाव का आह्वान किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पारंपरिक तरीकों को छोड़ अब उन्हें वास्तविक समय की साइबर खतरे की खुफिया जानकारी पर आधारित जोखिम आकलन अपनाने की सख्त जरूरत है। डेलॉयट ने चेताया है कि साइबर हमलों के बढ़ते दायरे और डिजिटल तंत्र के तेजी से फैलने के कारण पारंपरिक जोखिम आकलन पुराने पड़ गए हैं। कृत्रिम मेधा (एआई) संचालित हमलों की तीव्र गति का मुकाबला करने में मौजूदा तरीके अक्षम साबित हो रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सटीक प्रीमियम और बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बीमा कंपनियों को अब साइबर खतरे की खुफिया जानकारी, व्यवहार संबंधी मानकों और विभिन्न आंकड़ों को शामिल करना होगा। एआई इस बदलाव को और तेज कर रहा है, जिससे स्वचालित धोखाधड़ी और एआई-संचालित हमलों में 1,200 फीसदी से अधिक की वृद्धि देखी गई है। डेलॉयट दक्षिण एशिया में बीमा क्षेत्र के एक अ धिकारी ने बताया कि भारत का साइबर बीमा बाजार देश की डिजिटल अर्थव्यवस्था और बढ़ते साइबर जोखिम की तुलना में अभी भी छोटा है। हालांकि वर्तमान में मुख्य रूप से वित्तीय संस्थान और बड़े उद्यम इसे अपना रहे हैं, भविष्य में इसकी वृद्धि डिजिटल भुगतान, क्लाउड प्लेटफॉर्म और आपस में जुड़े तंत्र पर निर्भर छोटे-बड़े व्यवसायों से आने की प्रबल संभावना है।

चाय उद्योग को मिलेगी नई गति, सरकार निर्यात व गुणवत्ता पर केंद्रित

वाणिज्य मंत्री ने हितधारकों के साथ किया अहम मंथन

नई दिल्ली ।

भारत, जो दुनिया में काली चाय का सबसे बड़ा उत्पादक और तीसरा सबसे बड़ा वैश्विक निर्यातक है, अपने चाय उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी कड़ी में, वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने पश्चिम बंगाल के कुर्सेओंग में चाय उद्योग के हितधारकों के साथ एक अहम बैठक की अध्यक्षता की। बैठक का मुख्य उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना, गुणवत्ता में सुधार करना और चाय श्रमिकों के कल्याण को सुनिश्चित करना रहा, जबकि वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत ने 988.13 मिलियन डॉलर मूल्य की 282.11 मिलियन किलोग्राम चाय का निर्यात किया था।

यह क्षेत्र देश की कृषि अर्थव्यवस्था और निर्यात आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस उच्च स्तरीय बैठक में दार्जिलिंग चाय उद्योग के पुनरुद्धार, चाय नीलामी प्रणाली को और अधिक प्रभावी, तेज़ तथा पारदर्शी बनाने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया गया।

वाणिज्य मंत्री ने चाय अनुसंधान को सुदृढ़ करने, गुणवत्ता में सुधार लाने और एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन (ईपीएम) के तहत निर्यात को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया। हितधारकों के साथ व्यापार करने में आसानी को प्राथमिकता बनाते हुए प्रक्रियाओं को सरल बनाने और दक्षता बढ़ाने पर भी सहमति बनी, जिसमें तकनीक-आधारित सुधारों और परिचालन दक्षता में वृद्धि पर बल दिया गया।

शेयर बाजार भारी गिरावट के साथ बंद,निवेशकों के 6 लाख करोड़ डूबे

सेंसेक्स 1483, निफ्टी 434 अंक गिरा

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार सोमवार को भारी गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हाव होने से बाजार टूटा। आज कारोबार के दौरान बैंकिंग शेयरों को जबरदस्त नुकसान हुआ। इसके अलावा मेटल और ऑयल व गैस शेयरों में बिकवाली से भी बाजार नीचे आया। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 1,483.72 अंक टूटकर 82,435.99 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला, एनएसई निफ्टी 434.20 अंक की गिरावट के साथ ही 25,366.40 के स्तर के नीचे आ गया। बाजार की इस भारी गिरावट से बाजार पूंजीकरण में 6 लाख करोड़ से भी अधिक का नुकसान हुआ। बाजार के व्यापक रुझान पर नजर डालें तो गिरावट वाले शेयरों की संख्या तेजी वाले शेयरों से कहीं ज्यादा रही। एक्सचेंज पर कुल 2,687 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए, जबकि केवल 1,450 शेयरों में तेजी देखी गई और 199 शेयर सपाट रहे। इसके अलावा, निफ्टी मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों में भी 0.7-0.7 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, जो बताता है कि बिकवाली का दबाव सभी स्तरों पर था।



लगभग सभी प्रमुख सेक्टोरल इंडेक्स लाल निशान में बंद हुए। सबसे ज्यादा मार निफ्टी मेटल पर पड़ी। आज दिग्गज शेयरों में आई जबरदस्त बिकवाली ने निवेशकों को खासा नुकसान पहुंचाया। टाटा स्टील 8.43 फीसदी की भारी गिरावट के साथ सबसे अधिक नुकसान में रहा। इसके अतिरिक्त, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक , हिंडाल्को , एसबीआई , कोटक बैंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में भी गिरावट रही। वहीं इस बड़ी गिरावट के बीच कुछ खास शेयरों में खरीददारी हावी रही। टीसीएस 3.53 फीसदी की बढ़त के साथ हरे निशान में बंद हुआ।

डॉलर के मुकाबले रुपया 23 पैसे टूटकर 92.85 पर खुला

रुपया शुक्रवार को 70 पैसे मजबूत होकर 92.62 पर बंद हुआ था



मुंबई ।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में सप्ताह के पहले कारोबारी दिन सोमवार को रुपया 93.47 पर खुला और 92.43 तक मजबूत होने के बाद पिछले बंद भाव के मुकाबले 23 पैसे की गिरावट के साथ 92.85 प्रति डॉलर पर कारोबार कर रहा था। रुपये ने शुक्रवार को लगातार पांचवें सत्र में बढ़त जारी रखी थी और यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 70 पैसे मजबूत होकर 92.62 पर बंद हुआ था। रुपया 10 अप्रैल के बाद पहली बार 93 के स्तर से ऊपर पहुंचा था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.03 प्रतिशत गिरकर 103.71 पर रहा।

सोने की कीमत 1,38,460 प्र ति 10 ग्राम तक पहुंचने का अनुमान

केंद्रीय बैंकों की खरीदारी देगी सहारा, ब्याज दरें बनेंगी चुनौती

नई दिल्ली ।

वैश्विक निवेश बैंक गोल्डमैन सक्स ने 2027 के अंत तक सोने की कीमत 4,650 डॉलर प्रति औंस (लगभग 1,38,460 रुपए) तक पहुंचने का नया अनुमान जारी किया है। यह उनके पिछले 4,800 डॉलर के अनुमान से कम है, फिर भी निवेशकों के लिए सोने की चमक बरकरार रहने की उम्मीद है। 20 नवंबर को सोना 1,23,893 रुपए पर बंद हुआ था। बैंक का अनुमान है कि 2027 के अंत तक सोना 4,650 रुपए प्रति औंस तक पहुंचेगा। इसकी कीमतों को केंद्रीय बैंकों, खासकर उभरती अर्थव्यवस्थाओं द्वारा लगातार की जा रही खरीदारी से मुख्य सहारा मिल रहा है। पश्चिमी देशों द्वारा रूस के भंडार फ्रीज होने के बाद यह रुझान बढ़ा है, जिससे अन्य देशों को भी अपनी संपत्ति रखने के तरीकों पर पुनर्विचार करना पड़ा। गोल्डमैन को उम्मीद है कि 2026-28 के दौरान केंद्रीय बैंक प्रति माह औसतन 60 टन सोना खरीदेंगे, जो पहले के 17 टन प्र तिमाह से काफी अधिक है। हालांकि, अमेरिकी मौद्रिक नीति और ऊंची ब्याज दरें सोने के लिए जोखिम खड़ी कर सकती हैं। गोल्डमैन का मानना है कि फेडरल रिजर्व की संभावित दर वृद्धि से निजी निवेशकों की सोने में रुचि घटेगी, क्योंकि इस पर ब्याज नहीं मिलता।

सेबी का एमआईआई प्रमुखों के कार्यकाल की सीमा तय करने का प्रस्ताव

एमडी के लिए एक संस्थान में 8, कुल 12 साल की सीमा, मौजूदा अधिकारियों को 15 साल तक की छूट

नई दिल्ली ।

बाजार नियामक सेबी ने देश के प्रमुख स्टॉक एक्सचेंजों और डिपॉजिटरी कंपनियों जैसे मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस (एमआईआई) के शीर्ष अधिकारियों के कार्यकाल को लेकर बड़ा प्रस्ताव रखा है। इसके तहत, मैनेजिंग डायरेक्टर (एमडी) और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (ईडी) के कार्यकाल की अधिकतम सीमा तय की जाएगी। प्रस्ताव के मुताबिक किसी एक एमआईआई में एमडी का अधिकतम कार्यकाल 8 साल होगा, जबकि अलग-अलग संस्थानों में एमडी के तौर पर काम करने की कुल सीमा 12 साल तय की गई है। हालांकि, पहले से इस पद पर काम कर रहे अधिकारियों को कुल 15 साल तक की छूट मिलेगी। एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के लिए एक संस्थान में 8 साल और कुल 16 साल की सीमा प्रस्तावित है। वर्तमान में एमडी और ईडी एक संस्थान में अधिकतम 10 साल तक काम कर सकते हैं। इस प्रस्ताव का सीधा असर एनएसई और बीएसई जैसे प्रमुख संस्थानों के शीर्ष अधिकारियों पर पड़ सकता है। एनएसई के एमडी और सीईओ आशीषकुमार चौहान पहले ही विभिन्न एक्सचेंजों में करीब 14 साल इस पद पर रह चुके हैं। उनका मौजूदा कार्यकाल जुलाई 2027 में समाप्त होगा। यदि यह



प्रस्ताव लागू होता है, तो मौजूदा अधिकारियों के लिए प्रस्तावित 15 साल की कुल सीमा उनके भविष्य के कार्यकाल के लिए अहम होगी। बीएसई में भी नए सीईओ की तलाश जारी है, क्योंकि मौजूदा एमडी और सीईओ सुंदररमन राममूर्ति का कार्यकाल जून 2027 में खत्म हो रहा है। यह बदलाव सीडीएसएल और एमसीएक्स जैसे अन्य एमआईआई को भी प्रभावित करेगा।

टाटा स्टील अपने दो कारोबार एपीएल अपोलो ट्यूब्स को 28,000 करोड़ में बेचेगी

एपीएल अपोलो को नए क्षेत्रों में प्रवेश का एक बड़ा अवसर मिलेगा

नई दिल्ली ।

स्टील सेक्टर से जुड़ी एक बड़ी खबर में दिग्गज कंपनी टाटा स्टील ने अपने दो प्रमुख कारोबारों को एपीएल अपोलो ट्यूब्स को 28,000 करोड़ रुपए के एक बड़े सौदे में बेचने की घोषणा की है। कंपनी बोर्ड ने हाल ही में इस रणनीतिक बिक्री को मंजूरी दी है, जिसके तहत ट्यूब्स कारोबार और कलर कोटेड स्टील से जुड़ी सहायक कंपनी टाटा स्टील कलर्स की पूरी हिस्सेदारी एपीएल अपोलो को हस्तांतरित की जाएगी। यह सौदा टाटा स्टील के लिए अपने कारोबार को व्यवस्थित करने और निवेश का मूल्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण होगा, जबकि एपीएल अपोलो के लिए यह विस्तार का बड़ा अवसर है। इस सौदे के तहत, टाटा स्टील अपने ट्यूब्स कारोबार को अधिकतम 11,700 करोड़ रुपए में बेचेगी, जिसमें स्टील ट्यूब्स, पाइप बनाने, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग और बिक्री से जुड़े कार्य शामिल हैं। जमशेदपुर, होसुर, खोपोली और साहिबाबाद की मैन्युफैक्चरिंग इकाइयां भी इस दायरे में आएंगी। दूसरा बड़ा सौदा 16,300 करोड़ रुपए का है, जिसमें टाटा स्टील अपनी सहायक कंपनी टाटा स्टील कलर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में टाटा ब्लूस्कोप स्टील) की पूरी हिस्सेदारी एपीएल अपोलो को बेचेगी।

इस तरह कुल सौदा 28,000 करोड़ रुपए का है। टाटा स्टील के मुताबिक, इस कदम का मुख्य उद्देश्य अपने डाउनस्ट्रीम कारोबार को व्यवस्थित करना और उसमें किए गए निवेश का मूल्य प्राप्त करना है।

वहीं, एपीएल अपोलो के लिए यह अपने कारोबार के विस्तार और नए क्षेत्रों में प्रवेश का एक बड़ा अवसर होगा, खासकर ट्यूब्स कारोबार को एपीएल अपोलो के बड़े डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क का लाभ मिलेगा। यह पूरी प्रक्रिया 31 मार्च 2028 तक पूरी होने की उम्मीद है, हालांकि इसके लिए आवश्यक नियामक मंजूरियां लेना बाकी है। इस बड़े अधिग्रहण के बाद दोनों कंपनियों के शेयरों पर निवेशकों की नजर बनी रहेगी।

नवंबर में मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई 9 महीने के उच्च स्तर पर

मुंबई ।

भारत के घरेलू निजी क्षेत्र की कारोबारी गतिविधियों में नवंबर महीने में मामूली तेजी दर्ज की गई। एचएसबीसी के आंकड़ों के मुताबिक मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने मजबूत प्रदर्शन किया और इसमें नौ महीने की सबसे तेज बढ़ोतरी देखी गई, जबकि सर्विस सेक्टर की ग्रोथ थोड़ी धीमी पड़ गई। कंपोजिट परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) अक्टूबर के 56.2 से बढ़कर नवंबर में 56.3 पर पहुंच गया, जो समग्र आर्थिक सेहत में सुधार का संकेत देता है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर मजबूत रहा, इसका पीएमआई अक्टूबर के 54.7 से बढ़कर नवंबर में 56.0 पर पहुंच गया, जो नौ महीनों का उच्चतम स्तर है। उत्पादन और नए ऑर्डर ने इस क्षेत्र को गति दी। इसके विपरीत, सर्विस सेक्टर का बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स अक्टूबर के 55.8 से घटकर नवंबर में 55.3 पर आ गया, जिससे इसकी रफ्तार में कमी आई। नवंबर में कंपनियों को नए ऑर्डर मिलने की रफ्तार तेज हुई, खासकर मैन्युफैक्चरिंग में। निर्यात ऑर्डर भी चार महीनों में सबसे तेजी से बढ़े। रोजगार में कुल मामूली बढ़ोतरी हुई। मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों ने सात महीनों में सबसे तेजी से नियुक्तियां कीं, हालांकि, सर्विस सेक्टर में करीब एक साल बाद पहली बार कर्मचारियों की संख्या घटी।

दो बड़े आईपीओ के बीच बिटकॉइन में 23% की गिरावट

क्रिप्टो बाजार से निवेशकों की दूरी

टेक शेयरों की ओर बढ़ रहा निवेश

नईदिल्ली ।

दुनिया की सबसे लोकप्रिय क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन में पिछले एक महीने के दौरान करीब 23 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। दो बड़ी कंपनियों एंथ्रोपिक और स्पेसएक्स के आईपीओ की तैयारियों के बीच क्रिप्टो बाजार में यह गिरावट चर्चा का विषय बनी हुई है। बाजार के जानकारों के मुताबिक, निवेशक क्रिप्टोकरेंसी से पैसा निकालकर टेक्नोलॉजी कंपनियों के शेयरों में निवेश कर रहे हैं। समाचार रिपोर्ट के अनुसार, एंथ्रोपिक की 19 नवंबर को प्रस्तावित लिस्टिंग से पहले एक महीने में बिटकॉइन की कीमत 22.7 फीसदी तक गिर गई। इससे पहले स्पेसएक्स की लिस्टिंग से पहले भी एक महीने में बिटकॉइन में 22.3 फीसदी की गिरावट आई थी। इथेरियम भी इस दौरान दबाव में रहा। इसी तरह इथेरियम में भी एंथ्रोपिक के आईपीओ से पहले 25.3 फीसदी और स्पेसएक्स की लिस्टिंग से पहले 28 फीसदी की गिरावट आई थी। बाजार के विशेषज्ञों का मानना है, इसके पीछे केवल आईपीओ नहीं, बल्कि अमेरिकी बिटकॉइन ईटीएफ से भारी निकासी, मुख्य कारण है। निवेशकों की अनिश्चितता, ब्याज दरें बढ़ने की आशंका और बड़े पैमाने पर ट्रेडिंग पोजिशन का बंद होना भी इस गिरावट के लिए जिम्मेदार है। अमेरिकी बिटकॉइन ईटीएफ से नवंबर में करीब 3.5 अरब डॉलर की निकासी हुई है। आगे क्या होगा? विशेषज्ञों के मुताबिक, बिटकॉइन के लिए 60 हजार से 62 हजार डॉलर का स्तर बेहद महत्वपूर्ण है।

दो का शेयर बना 368! क्यूपिड ने निवेशकों को बनाया करोड़पति

पांच साल में 17,000 फीसदी से ज्यादा का बंपर रिटर्न

नई दिल्ली ।

भारतीय शेयर बाजार में किस्मत पलटने वाले शेयरों की कमी नहीं, क्यूपिड लिमिटेड उनमें से एक है। कंडोम और हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स बनाने वाली इस कंपनी के शेयर ने अपने निवेशकों को अप्रत्याशित रूप से मालामाल कर दिया है, एक समय महज 2 रुपये में मिलने वाला यह स्टॉक अब 368 रुपये के पार पहुंच गया है। क्यूपिड लिमिटेड का शेयर पिछले पांच सालों में मल्टीबैगर साबित हुआ है।

26 नवंबर 2021 को जहां इसकी कीमत मात्र 2.13 रुपये थी, वहीं अब यह 368 रुपये के स्तर को छू चुका है। इस दौरान इसने अपने निवेशकों को 17,059.62 फीसदी का अविश्वसनीय रिटर्न दिया है। यदि उस समय किसी निवेशक ने 1 लाख रुपये लगाए होते, तो आज उसकी यह रकम बढ़कर 1.71 करोड़ रुपये से भी अधिक होती। इस तूफानी उछाल से कंपनी का मार्केट कैप भी 49,160 करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है।

यह स्टॉक केवल लंबी अवधि के लिए ही नहीं, बल्कि कम समय में भी निवेशकों को बड़ा मुनाफा दिया है।

पिछले एक साल में शेयर ने 441 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न देकर पैसा पांच गुना किया है। वहीं, छह महीने में ही इसमें 203 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिससे निवेशकों की रकम लगभग तीन गुनी हो गई।

एफएसएसएआई की कार्रवाई के बाद बिसलेरी ने अपना पानी सुर क्षित बताया

कंपनी ने कहा, मामला पुराना, बाद की जांच में ब्रोमेट सीमा के भीतर

नई दिल्ली ।

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) के मुकदमा चलाने के आदेश के बाद, बिसलेरी इंटरनेशनल ने सोमवार को अपने पैक्ड पेयजल को सुरक्षित बताया है। यह प्रतिक्रिया एफएसएसएआई के उस बयान के एक दिन बाद आई है, जिसमें उसने एक नमूने को असुरक्षित बताकर कंपनी के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दी थी। बिसलेरी ने कहा कि उसे एफएसएसएआई से कोई औपचारिक नोटिस नहीं मिला है और वह नियामक के साथ सहयोग करेगी। बिसलेरी इंटरनेशनल ने स्पष्ट किया कि यह मामला लगभग 14 महीने पुराना है और सितंबर 2025 में उसके गोवा स्थित एक संयंत्र से तैयार बैच से जुड़ा है। एफएसएसएआई ने गोवा संयंत्र से छह नमूने लिए थे, जिनमें से एक में ब्रोमेट का स्तर निर्धारित सीमा (10 माइक्रोग्राम प्रति लीटर) से अधिक (12 माइक्रोग्राम) पाया गया था। हालांकि, कंपनी की अपील पर एफएसएसएआई द्वारा मान्यता प्राप्त एक रेफरल प्रयोगशाला ने उसी नमूने की दोबारा जांच की, जिसमें ब्रोमेट की मात्रा तय सीमा के भीतर पाई गई। नतीजों में अंतर आने के बाद, बिसलेरी ने स्वतंत्र रूप से भी जांच कराई, जिसमें भी ब्रोमेट का स्तर स्वीकार्य सीमा के भीतर निकला। कंपनी ने 2 फरवरी, 2026 को इन स्वतंत्र जांच रिपोर्टों को एफएसएसएआई को सौंप दिया था और तब से उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली थी।



त्योहारी सत्र में वाहनों की खुदरा बिक्री रिकॉर्ड 55.25 लाख इकाई पहुंची

वर्ष 2024 के त्योहारी सत्र की तुलना में खुदरा बिक्री में 23.95 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई

नई दिल्ली ।

भारत में वाहनों की खुदरा बिक्री इस साल त्योहारी सत्र के दौरान सालाना आधार पर 2.21 प्रतिशत बढ़कर रिकॉर्ड 55.25 लाख इकाई पर पहुंच गई। पिछले साल जीएसटी 2.0 के कारण मांग बढ़ने से ऊंचे आधार के बावजूद यह वृद्धि दर्ज की गई। वाहन डीलरों के संगठन फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस (फाडा) ने सोमवार को यह जानकारी दी। फाडा के अनुसार 2026 में 42 दिन की त्योहारी अवधि के दौरान वाहनों की कुल खुदरा बिक्री 55,25,490 इकाई रही, जो समान अवधि के लिए अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। वर्ष 2024 के त्योहारी सत्र की तुलना में वाहनों की खुदरा बिक्री में 23.95 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो जीएसटी दरों को तर्कसंगत बनाए जाने के बाद मांग की निरंतर रफ्तार को दर्शाती है। दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री सालाना आधार 3.67 प्रतिशत बढ़कर 43,13,276 इकाई हो गई, जबकि तिपहिया वाहनों की बिक्री 5.32 प्रतिशत बढ़कर 1,93,576 इकाई रही। वाणिज्यिक वाहनों की खुदरा बिक्री 7.13 प्रतिशत बढ़कर 1,55,761 इकाई, ट्रैक्टर की बिक्री 2.24 प्रतिशत बढ़कर 1,03,809 इकाई और निर्माण उपकरणों की बिक्री 26.06 प्रतिशत उछलकर 10,452 इकाई पर पहुंच गई।

हालांकि, यात्री वाहनों की खुदरा बिक्री 7.16 प्रतिशत घटकर 7,48,616 इकाई रह गई, जो एक साल पहले की समान अवधि में 8,06,322 इकाई थी। इस दौरान इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की खुदरा बिक्री 52.62 प्रतिशत उछलकर पांच लाख इकाई के पार निकल गई। इसमें इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों और इलेक्ट्रिक यात्री वाहनों का मुख्य योगदान रहा।

महंगे सीरम को कहें अलविदा, घर पर बनाएं असरदार विटामिन सी सीरम, मिलेगी दमकती त्वचा



अगर आप भी रोजाना रात में स्किन केयर करना नहीं भूलती हैं और चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए कई प्रयास करती हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि महिलाएं अपनी स्किन को हेल्दी और ग्लोइंग बनाने के लिए तरह-तरह के प्रोडक्ट्स फेस पर लगाती हैं। लेकिन आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे विटामिन सी सीरम के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसका इस्तेमाल आप रोजाना रात में सोने से पहले कर सकती हैं।

अगर आप इस खास सीरम को लगाती हैं, तो इससे मार्केट के महंगे सीरम खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेगी। साथ ही आप कम पैसों में इस सीरम को बनाकर तैयार कर सकती हैं। तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि घर पर रहकर विटामिन सी सीरम कैसे बनाया जा सकता है।

होममेड विटामिन सी सीरम

ब्यूटी एक्सपर्ट के मुताबिक अगर आप घर पर एक खास विटामिन सी सीरम तैयार करना चाहती हैं, तो आप कम पैसे में इसको बनाकर तैयार कर सकती हैं। इसको बनाने का तरीका भी काफी आसान है और इसको बनाने के लिए कुछ खास सामग्री की जरूरत होगी।

सामग्री

गुलाब जल
विटामिन सी पाउडर
विटामिन ई कैप्सूल
एलोवेरा जेल
ग्लिसरीन

ऐसे बनाएं विटामिन सी सीरम

आप घर पर आसानी से यह खास सीरम बनाकर तैयार कर सकती हैं। इसको बनाने का तरीका बेहद आसान है। इसको बनाने के लिए सबसे पहले एक कटोरी में विटामिन सी पाउडर ले लें। अब इसमें गुलाब जल, एलोवेरा जेल और ग्लिसरीन को डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब इसमें विटामिन सी कैप्सूल की कुछ बूंदे डालकर इस सीरम को अच्छे से मिक्स कर लें। इस आसान तरीके से आपका होममेड सीरम बनकर तैयार हो गया है।

आप रोजाना रात में सोने से पहले इस सीरम को अपने फेस पर अप्लाई कर सकती हैं। आप 15 दिन तक इस सीरम का इस्तेमाल कर सकती हैं। आप चाहें तो रोजाना रात में इसका इस्तेमाल कर सकती हैं या फिर सप्ताह में 3-4 बार भी इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। आप जब भी इसको फेस पर अप्लाई करें, तो पहले साफ पानी से चेहरे को धो लें और फिर फेस के सूखने के बाद इस सीरम को फेस पर लगाएं। इसको आप फेस के साथ-साथ गर्दन पर भी लगा सकती हैं।

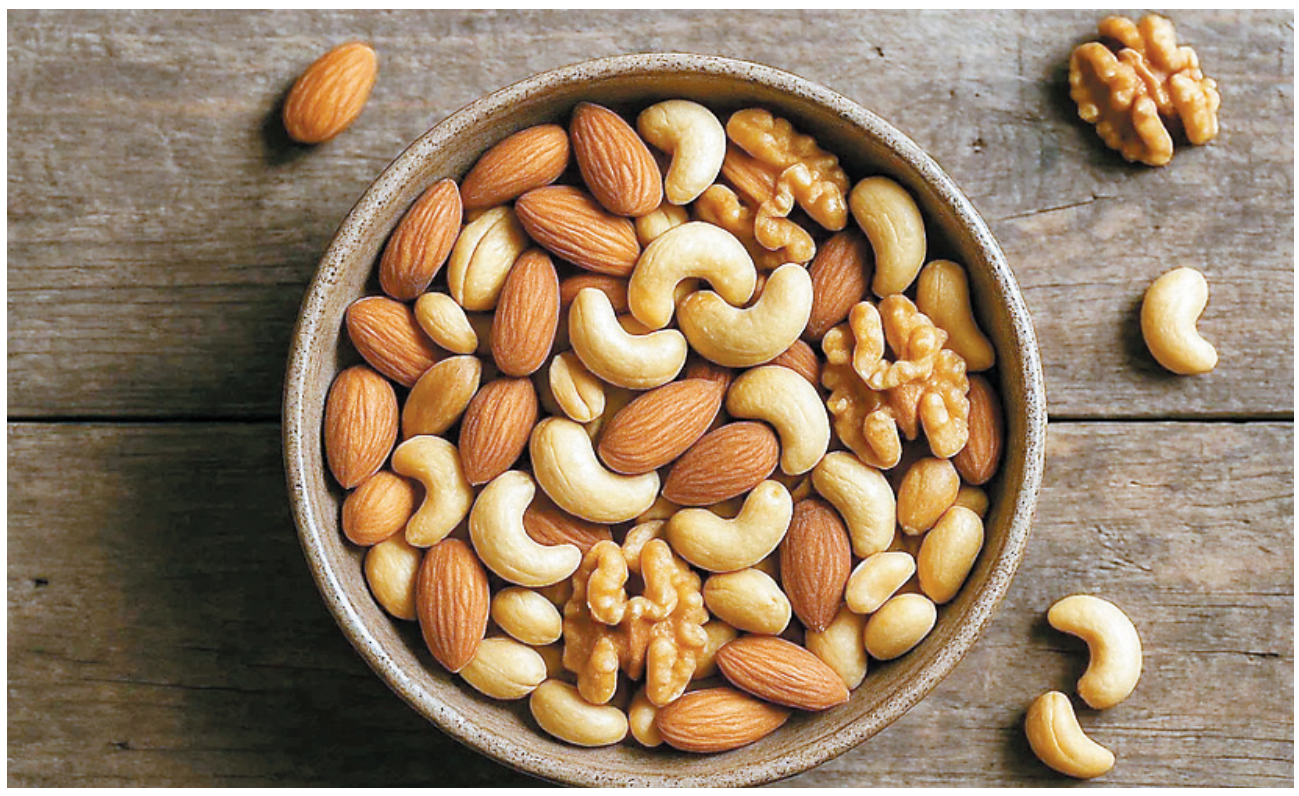

घर की सब्जी को दें शाही ट्विस्ट! बस काजू-बादाम, मूंगफली से बढ़ाएं ग्रेवी का जबरदस्त स्वाद

रेस्तरां स्टाइल में हम सभी टेस्टी सब्जी बनाना चाहते हैं, लेकिन कहीं न कहीं मिस्टेक जरुर हो जाती है। अपने खाने को टेस्टी बनाने के लिए छोटे-छोटे टिप्स एंड ट्रिक्स पर ध्यान देना काफी जरुरी है। घर में चाहे कितना भा टेस्टी खाना बना लें, लेकिन बच्चे फिर कमी निकाल देते हैं। ऐसे में हर महिलाओं को इन टिप्स का जरुर पता होना चाहिए। अगर आप मेवों की मदद से सब्जी में इस्तेमाल करके लाजवाब खाना बना सकते हैं। मेवे सब्जियों के स्वाद को दोगुना कर देते हैं। यह सब्जी में स्वाद तो बढ़ा ही देते हैं और यह काफी हेल्दी भी होती है। आइए आपको बताते हैं मेवे से सब्जी की क्रीम को गाढ़ा और क्रीमी से बनाएं।

मेवे से सब्जी को गाढ़ा और क्रीमी कैसे बनाएं

– इसके लिए आफ काजू या बादाम को गर्म पानी में 30 मिनट के लिए भिगोकर रख दें। अब इसे पानी से निकालकर थोड़ा दूध या पानी डालकर एक चिकना पेस्ट बना लें। फिर आप इसे सब्जी की ग्रेवी में डालें। इससे आपकी ग्रेवी गाढ़ी, क्रीमी और स्वादिष्ट बनेंगी। इसका यूज आप शाही पनीर, कोफ्ता और मलाई कोफ्ता जैसी सब्जियों में कर सकते हैं। आप बादाम, काजू या मूंगफली को हल्का भूनकर छोटे टुकड़ों में काट लीजिए। सब्जी तैयार होने के बाद ऊपर से इन टुकड़ों को डालें। सब्जी तैयार होने के बाद ऊपर से आप इन टुकड़ों को डालें। ऐसा करने से सब्जी में कुरकुरापन और स्वादिष्ट मेवों वाला फ्लेवर आएगा। सूखी सब्जियों के लिए भी यह तरीका बेस्ट है।

– भुनी हुई मूंगफली का पेस्ट बनाकर ग्रेवी में डाल सकते हैं। इससे आपकी ग्रेवी का स्वाद और भी बढ़ जाएगा। इसके साथ ही ग्रेवी गाढ़ी हो जाएगी। आप तिल को पीसकर उसका पेस्ट भी ग्रेवी में मिला सकती हैं। इससे ग्रेवी का स्वाद बढ़ जाता है।

– बादामा या काजू को पीसकर पाउडर बना लीजिए। इस पाउडर को आप मसाले की तरह किसी भी सब्जी की ग्रेवी में डाल दीजिए। प्याज की जगह दही और मूंगफली का पेस्ट बनाकर ग्रेवी का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे आपकी ग्रेवी गाढ़ी होने के साथ ही उसका स्वाद भी काफी कमाल लगेगा।

सर्दी-जुकाम से राहत के लिए अपनाएं दादी-नानी का नुस्खा, बेसन का शीरा देगा तुरंत आराम।



बदलते मौसम में बच्चों को सर्दी-जुकाम की शिकायत हो जाती है। बच्चों की इम्युनिटी कमजोर होने के कारण खांसी-जुकाम की समस्याएं बन जाती है। यदि आपके बच्चे को मौसम के बदलने से सर्दी-जुकाम से परेशान हो गए है, तो इसे दवाओं की जगह आप एक बार बेसन का शीरा बनाकर जरुर पिलएं। यह एक ट्रेडिशनल पंजाबी रेसिपी है, जो मौसम बदलने के बाद बच्चों की इम्यूनिटी को बूस्ट करती है। बीमारी से लड़ने में मदद करती है। बेसन शीरा स्वाद के साथ ही हेल्थ के लिए काफ बढ़िया है। इसके सेवन से सर्दी, खांसी और जुकाम की समस्या जल्द ठीक हो जाती है। आइए आपको बताते हैं कैसे बनाया जाता है टेस्टी और हेल्दी बेसन का शीरा।

बेसन का शीरा बनाने के लिए सामग्री

– 3 बड़े चम्मच बेसन
– 1 बड़ा चम्मच देसी घी
– 2 छोटी चम्मच चीनी/गुड़
– डेढ़ कप दूध
– कुटी हुई इलायची
– 1/4 छोटी चम्मच अजवाइन
– कटे हुए बादाम
– कुटी हुई काली मिर्च
– हरा धनिया
– 1 चुटकी हल्दी

बेसन का शीरा बनाने का तरीका

बेसन का शीरा बनाने के लिए सबसे पहले आप एक कड़ाही लें और गैस पर चढ़ाकर गर्म करें। अब इसमें घी डाले और बेसन को लो फ्लेम पर भूने जब तक इसका रंग हल्का भूरा ना हो जाए। बेसन को अच्छे से भून जाने के बाद इसमें खुशबू आने लगेगी। अब इसमें बेसन इलायची, गुड़, कटे हुए बादाम, कुटी हुई काली मिर्च, अजवाइन और हल्दी डालकर अच्छी तरह सभी चीजों को मिला लीजिए। इसके बाद आप इसमें दूध डालते हुए सभी चीजों को करछी से लगातार चलाते हुए मिलाएं, वरना पेसन में गांठें पड़ जाएगी। बेसन में पड़ी गांठे शीरा का स्वाद बिगड़ सकती हैं। इसके बाद आप दूध को 5 मिनट तक अच्छे से उबालें। इसके बाद बेसन के शीरे में कटा हुआ ताजा हरा धनिया डाल दें। यह लीजिए टेस्टी गर्मागर्म बेसन का शीरा तैयार है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चों को खुली हवा में बाहर ना भेंजे। क्योंकि ऐसा करने से इसका असर कम हो जाता है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चे सोने दें।

बासी पोहा हो गया सख्त तो अपनाइए ये आसान नुस्खा, मिलेगा वही पुराने जैसा स्वाद

नाश्ते में पोहा खाना आखिरकार किसे अच्छा नहीं लगता। सुबह अक्सर चाय के साथ पोहा खाने में एक अलग ही मजा आता है। लेकिन पोहा केवल तभी अच्छा लगता है, जब उसे बनाकर गरमा-गरम सर्व किया जाए। अगर उसे बाद में खाया जाता है तो वह थोड़ा सख्त और सूखा-सूखा महसूस होता है। इतना ही नहीं, उसका वो टेक्सचर भी गायब हो जाता है, जिसकी वजह से उसे खाने का मन ही नहीं करता है। हालांकि, अगर आप ऐसे में उसे फेंकने की सोच रहे हैं तो जरा ठहरिए। अगर आप चाहें तो थोड़ा सा जादू करने पर बासी पोहा को फिर से नरम, टेस्टी और फ्रेश बना सकते हैं।

वास्तव में, पोहा उन आसान डिशेज में से है, जिसे अगर सही ट्रिक से दोबारा गरम किया जाए तो उसका स्वाद और टेक्सचर दोनों ही पहले जैसा हो जाता है। तब आपको उसे खाते समय ऐसा महसूस होता है, जैसा कि इसे अभी-अभी गरमागरम बनाया गया हो। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसे ही आसान टिप्स के बारे में बताने वाले हैं, जो आपके बासी पोहे को फिर से टेस्टी बनाने में मदद करेंगे-

थोड़ा पानी छिड़कें



यह एक आसान तरीका है बासी पोहा को फिर से फ्रेश करने का। इसके लिए सबसे पहले पोहे को एक कटोरे या कड़ाही में डालिए और उस पर 2-3 चम्मच पानी हल्के से छिड़किए। अब इसे ढककर 2-3 मिनट के लिए रख दीजिए। दरअसल, पोहा इसलिए सूख जाता है क्योंकि उसमें से नमी निकल जाती है। थोड़ा पानी और भाप उसे चिपचिपा किए बिना दोबारा नरम बना देते हैं।

थोड़ा तेल या घी डालकर दोबारा गरम करें

एक पैन में 1 चम्मच तेल या घी गरम करें। चाहें तो उसमें थोड़े राई के दाने, करी पत्ता या एक चुटकी हल्दी डालें। अब उसमें बासी पोहा डालकर 1-2 मिनट तक चलाइए। जब आप पोहे को हल्का सा भूनते हैं तो इससे पोहे की खुशबू और स्वाद दोनों ताजा हो जाते हैं। तेल हर दाने को कोट कर देता है जिससे पोहा दोबारा चिपकता नहीं है।

आजमाएं माइक्रोवेव ट्रिक

अगर आपके पास समय कम हो तो माइक्रोवेव की इस ट्रिक को भी आजमाया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले पोहे पर थोड़ा पानी छिड़कें, फिर उस पर गीला टिशू पेपर या माइक्रोवेव ढक्कन रखकर 30-40 सेकंड के लिए गरम करें। गीला टिशू भाप को अंदर रोकता है, जिससे पोहा बराबर गरम होता है और सूखता नहीं है।



किचन के इन 3 मसालों से पाएं मुंह की बदबू से छुटकारा, बनाएं नेचुरल माउथवॉश!

हर भारतीय के किचन में पाए जाने वाले ये मसाले केवल खाना का स्वाद ही नहीं, मुंह की दुर्गंध और बैक्टीरिया को दूर भागा देते हैं। आपकी रसोई में रखें इन 3 मसालों से तैयार करें नैचुरल माउथवॉश। मुंह की दुर्गंध, मसूड़ों की सूजन और बैक्टीरिया संक्रमण की समस्या से परेशान हो गए हैं, तो यह लेख आपके लिए है। वैसे तो बाजार में कई सारे माउथवॉश मिलते हैं लेकिन इनमें केमिकल और अल्कोहल की मात्रा होती है। यह अस्थायी ताजदी तो पहुंचता हैं लेकिन लंबे समय तक दातों और मसूड़ों को नुकसान भी पहुंचता है। इसी कारण आप अपने घर पर ही इन 3 मसालों से नैचुरल माउथवॉश बना सकते हैं। लौंग, चक्र फूल और दालचीनी से बना यह घरेलू माउथवॉश आपके लिए बेहद ही फायदेमंद होगा। यह माउथवॉश आपके मुंह के बैक्टीरिया को खत्म करता है। आइए आपको बताते है इसे कैसे बनाएं।

माउथवॉश बनाने की विधि

सामग्री

– 4-5 लौंग
– 2 चक्र फूल
– 1 दालचीनी का टुकड़ा
– 1 कप पानी

इसे बनाने का तरीका

– सबसे पहले आप एक पैन में पानी डालें। फिर इसमें लौंग, दालचीनी और चक्र फूल को डालें।

– फिर आप इसे 7-8 मिनट तक उबालें। इसे तब तक उबालें जब तक इसका रंग हल्का भूरा न लग जाएं।

– जब यह पानी ठंडा हो जाए, तो इसे कांच की बोतल में भरकर रख दें।

– इसे घरेलू माउथवॉश से आप दिन में 1 या 2 बार कुल्ला जरुर करें।

घरेलू माउथवॉश इस्तेमाल करने के फायदे

– मुंह की दुर्गंध दूर करता है और सांसों को लंबे समय तक तरोताजा रखता है।

– इसमें एंटीबैक्टीरियल के गुण होते हैं, जो कि मुंह में बैक्टीरिया को खत्म करते हैं।

– मसूड़ों की सूजन को कम करता है और ओरल हेल्थ को बेहतर बनाता है।

– यह एक प्रकार से 100% प्राकृतिक और केमिकल-फ्री जो दांतों के एनामेल को नुकसान नहीं पहुंचाता है।



314 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत 265 पर सिमटा

तिलक का शतक बेकार, पाकिस्तान से हारी इंडिया-ए

मध्यक्रम का साथ नहीं मिलने से टीम को 48 रन से मिली हार

नई दिल्ली। रविवार को एशिया कप राइजिंग स्टार्स टूर्नामेंट में पाकिस्तान ए से 48 रन से हार के बाद भारतीय टीम के कप्तान तिलक वर्मा ने मध्य क्रम में साझेदारियों की कमी पर अफसोस जताया। 314 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए, भारतीय टीम 129 रन पर छह विकेट खोकर मुश्किल में थी, लेकिन तिलक और शाहबाज अहमद ने सातवें विकेट के लिए 112 रनों की साझेदारी की। शाहबाज ने 41 गेंदों पर 56 रन बनाए, जबकि तिलक 149 गेंदों पर 100 रन बनाकर नाबाद रहे। हालांकि, उनका प्रयास काफी नहीं था और भारत 265 रनों पर ऑल आउट हो गया। तिलक का माननाथा कि शाहबाज का आउट होना गलत समय पर हुआ, ठीक उसी समय जब दोनों बल्लेबाज स्कोर बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। उनका मानना था कि ऑलराउंडर द्वारा फेंके गए कुछ और ओवरों से मैच का रुख बदल सकता था। 'अभिषेक ने जिस तरह से शुरुआत की और बीच में शाहबाज ने जिस तरह से मेरे साथ साझेदारी की, वह निर्णायक साबित हुई। दुर्भाग्य से, जब हम तेजी से रन बनाना चाहते थे, तब शाहबाज आउट हो गए। वरना, अगर वह दो ओवर और टिक जाते, तो मैं मैच खत्म कर सकता था,' तिलक ने मैच के बाद कहा। उन्होंने कहा, 'दूसरे ओवर के पहले 10 ओवरों में थोड़ी स्विंग देखने को मिली। उन दोनों तेज गेंदबाजों को श्रेय जाता है जिन्होंने बेहतरीन लाइन और लेंथ से गेंदबाजी की। लेकिन साथ ही, बीच में हमने लगातार दो विकेट गंवा दिए। नहीं तो हम 47वें या 48वें ओवर में ही मैच जीत सकते थे।

भारत ए बनाम पाकिस्तान ए, राइजिंग स्टार्स एशिया कप के मुख्य अंश

अभिषेक शर्मा ने 42 गेंदों में 70 रन बनाकर भारत को शानदार शुरुआत दी, लेकिन उनके आउट होने के बाद मध्य क्रम के बल्लेबाजों पर काफी दबाव आ गया। भारतीय बल्लेबाज रन रेट बनाए रखने के लिए संघर्ष करते रहे, और पाकिस्तान के गेंदबाजों ने नियमित अंतराल पर विकेट लिए। तिलक ने पाकिस्तान के तेज गेंदबाजों के अनुशासित प्रयास की भी सराहना की, लेकिन उन्हें लगा कि भारत ने लगातार विकेट खोकर मैच को हाथ से जाने दिया।

'शतक बनाने के बावजूद, तिलक इसे अपने सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी प्रदर्शनों में से एक मानने को उत्सुक नहीं थे। भारतीय टीम के कप्तान के लिए, व्यक्तिगत प्रयास से कहीं अधिक परिणाम मायने रखता था। 'मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है मैच जीतना। अगर मैं मैच नहीं जीतता, तो यह मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन मैं हमेशा जितना हो सके उतना आगे तक जाना चाहता हूं। आज मैं उसी की तलाश में था। अगर कोई और बल्लेबाज मेरा साथ दे पाता, तो मैं मैच खत्म कर सकता था,' उन्होंने कहा। तिलक ने टीम की कप्तानी करने के साथ आने वाली जिम्मेदारी के बारे में भी बात की और कहा कि उन्हें टीम को कठिन परिस्थितियों से बाहर निकालने में मजा आता है। 'अगर आप टीम के कप्तान हैं, तो आपको वह जिम्मेदारी और भार उठाना ही चाहिए। तो हां, मुझे ईमानदारी से यह करना अच्छा लगता है। आखिरकार, भगवान दयालु हैं और उन्होंने ही मुझे ये रन दिए हैं,' उन्होंने आगे कहा।

हसन नवाज़ का सर्वोच्च स्कोर

इससे पहले, हसन नवाज़ ने पाकिस्तान ए के लिए 79 रन बनाकर सर्वोच्च स्कोर किया, जबकि माज़ सदाकत (59) और फरहान यूसुफ (56) ने महत्वपूर्ण अर्धशतक बनाकर अपनी टीम को 313 रन पर ऑल आउट होने तक पहुंचाया। इसके बाद पाकिस्तान के गेंदबाजों ने मैच का समापन करते हुए तिलक के शतक के बावजूद भारत ए को 48 रन से हरा दिया।

सिराज को बाहर रखना मेरे लिए भी मुश्किल फैसला था

मैच से पहले उनसे बात की थी: शुभमन गिल

वेलिंगटन। भारत और न्यूजीलैंड के बीच बेसिन रिजर्व में खेला गया पहला टेस्ट मैच ड्रॉ रहा। डेरिल मिचेल और ग्लेन फिलिप्स की जुझारू पारियों के दम पर न्यूजीलैंड पहले टेस्ट में हार को टालने में सफल रहा। मैच के बाद भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल ने मोहम्मद सिराज को प्लेइंग इलेवन से बाहर रखने का कारण बताया। गिल ने कहा, 'हमने इस मैच के लिए सबसे बेहतरीन गेंदबाजी आक्रमण को मैदान में उतारा। सिराज एक शानदार खिलाड़ी और बेहतरीन गेंदबाज हैं, जिन्होंने भारत के लिए बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। मगर इन सबसे बढ़कर, वह मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं। हमने एक साथ अपने करियर की शुरुआत की थी, भारत के लिए खेलने से पहले से ही हम बहुत अच्छे दोस्त रहे हैं। इसलिए उन्हें बाहर रखना मेरे लिए भी एक बहुत मुश्किल फैसला था। हालांकि, कभी-कभी आपको यह देखना पड़ता है कि कौन से गेंदबाज फॉर्म में हैं और कौन सबसे अच्छी गेंदबाजी कर रहा है। ' दरअसल, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) की मौजूदा चक्र में मोहम्मद सिराज भारत की ओर से सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे हैं। यही वजह है कि जब पहले टेस्ट के लिए उन्हें प्लेइंग इलेवन में जगह नहीं दी गई, तो टीम मैनेजमेंट के इस फैसले की जमकर आलोचना हुई। गिल ने वेलिंगटन टेस्ट के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में सिराज को अंतिम ग्यारह में जगह न देने को लेकर सफाई दी। भारतीय कप्तान ने आगे कहा, 'मेरी उनसे (सिराज) बात हुई थी। मैंने मैच से पहले ही उन्हें बता दिया था कि वह इस मैच में नहीं खेल रहे हैं। मुझे नहीं पता कि वह इससे पूरी तरह सहमत थे या नहीं, लेकिन उन्होंने बात को समझा और इसके पीछे का तर्क भी समझ गए। उन्हें समझ आ गया कि हमने उनकी जगह किसी और को क्यों चुना। मुझे लगता है कि हर खिलाड़ी के करियर या जीवन में एक ऐसा दौर आता है जब वह हमेशा अपने करियर के शिखर पर नहीं होता। मेरे हिसाब से वह इस बात को समझते हैं।



मैनचेस्टर यूनाइटेड के कार्यकाल की भयावह शुरुआत के बाद पोचेटिनो ने योरो को मिले रेड कार्ड पर सवाल उठाए



नई दिल्ली। मैनचेस्टर यूनाइटेड के मैनेजर के रूप में मॉरीसियो पोचेटिनो के लिए इससे मुश्किल शुरुआत शायद ही हो सकती थी। लेनी योरो को शुरुआती ही रेड कार्ड मिलने से लिवरपूल के खिलाफ 4-0 की करारी हार का रास्ता साफ हो गया। अर्जेंटीना के इस कोच का मानना ??था कि इस रेड कार्ड ने पूरे मैच का रुख बदल दिया, और उनका तर्क था कि दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम भी ऐसी परिस्थितियों में इसी तरह की हार का सामना कर सकती थी। आठवें मिनट में ही योरो को एलेक्जेंडर इसाक पर किए गए फाउल के लिए रेड कार्ड दिखाए जाने के बाद यूनाइटेड की टीम 10 खिलाड़ियों तक सीमित हो गई और इसके ठीक पांच मिनट बाद ही लिवरपूल ने 2-0 की बढ़त बना ली। मैच के बाद पोचेटीनो ने इस फैसले पर निराशा व्यक्त की और सवाल उठाया कि क्या रेड कार्ड दिखाना उचित था। 'यह बहुत दुखद है, मैं बहुत निराश महसूस कर रहा हूँ। यह अविश्वसनीय है कि प्रीमियर लीग में मेरी यात्रा की शुरुआत ऐसे हालातों में हो रही है। एकमात्र समस्या यह है कि मैच छह मिनट बाद पूरी तरह से बदल गया, और अब हम बात कर सकते हैं और सब कुछ समझा सकते हैं, लेकिन नुकसान तो हो ही चुका है। ' 'यह बेहद दर्दनाक है। खिलाड़ी इस तरह की स्थिति का दर्द महसूस करते हैं। मैंने उनसे कहा कि उन्हें शांत रहना होगा, और जो कुछ हुआ वह पूरी तरह से अन्यायपूर्ण स्थिति थी।

पोचेटीनो ने योरो की बर्खास्तगी पर सवाल उठाए

पोचेटीनो ने तर्क दिया कि इसाक को गोल करने के स्पष्ट अवसर से वंचित नहीं किया गया था, उन्होंने जोर देकर कहा कि गेंद पहले से ही गोलकीपर की ओर जा रही थी और योरो का स्ट्राइकर को गिराने का कोई इरादा नहीं था। 'गेंद गोलकीपर की ओर जा रही थी। मुझे लगता है कि उस स्थिति में, अगर आप वीएआर चेक करेंगे, तो आप देखेंगे, जैसा कि हम अब कैमरों में देख सकते हैं, कि लेनी योरो का इरादा कभी भी अलेक्जेंडर इसाक को गिराने का नहीं था। ' उन्होंने आगे कहा कि इसाक गिरने से पहले धीमे हो गए थे, और उनका मानना था कि इस घटना के लिए रेड कार्ड देना उचित नहीं था। पोचेटिनो ने कहा कि वह अधिकारियों का सम्मान करते हैं, लेकिन अपनी टीम का बचाव करना और अपने विचार

'सर्वश्रेष्ठ टीम भी 4-0 से हार सकती है'

मैच के बाद उनकी प्रतिक्रिया में रेड कार्ड का मुद्दा हावी रहा, लेकिन पोचेटीनो ने यह भी स्वीकार किया कि यूनाइटेड को अपने प्रदर्शन की जिम्मेदारी लेनी होगी। उन्होंने खिलाड़ियों से बेहतर एकाग्रता और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने का आह्वान किया और माना कि उनके खिलाड़ियों को कुछ क्षेत्रों में सुधार करने की आवश्यकता है। लेकिन उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि इतनी जल्दी मिली हार से उबरना कितना मुश्किल होता है, यहां तक कि उच्चतम स्तर की टीम के लिए भी। 'अगर दुनिया की सबसे अच्छी टीम भी इस तरह से, हमारी परिस्थितियों में खेलती, तो शायद चार गोल या उससे भी ज्यादा गोल खा लेती। और अब हम क्या कहेंगे? ' पोचेटीनो ने जोर देकर कहा कि उनके खिलाड़ियों ने मुश्किल परिस्थितियों के बावजूद संघर्ष जारी रखा, लेकिन इस हार ने उनके सामने एक तत्काल चुनौती खड़ी कर दी है। यूनाइटेड के पास परिणाम पर विचार करने के लिए ज्यादा समय नहीं है, क्योंकि बुधवार को चैंपियंस लीग में स्पोर्टिंग के खिलाफ मैच है, जिसके बाद शनिवार को ओल्ड ट्रैफर्ड में ब्रेंटफोर्ड के खिलाफ प्रीमियर लीग का मुकाबला है। 2 दिसंबर को न्यूकैसल का दौरा भी है, जिससे एक ऐसी टीम के लिए मैचों का यह दौर काफी चुनौतीपूर्ण हो जाता है जो अपने सीजन को पलटने के लिए बेताब है।

'नो हैंडशेक' के पीछे बड़े मुद्दे हैं

एमसीसी हेड ऑफ क्रिकेट बोले इन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं



शारजाह। मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) ने माना है कि जब राजनीति शामिल हो, तो खिलाड़ियों को हैंडशेक (हाथ मिलाने) से बचने से रोकना उनके बस में नहीं है, भले ही वे 'स्पिरिट ऑफ क्रिकेट' (खेल की भावना) को बचाए रखना चाहते हों। क्रिकेट में हैंडशेक न करने का मुद्दा मुख्य रूप से भारत-पाकिस्तान मैचों से जुड़ा है। अप्रैल 2025 में हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद से टॉस के समय या मैच के बाद पारंपरिक रूप से हाथ मिलाने की प्रक्रिया को छोड़ देना एक आम बात हो गई है। हालांकि हैंडशेक खेल भावना का एक पारंपरिक प्रतीक है, लेकिन आईसीसी के नियमों के अनुसार यह अनिवार्य नहीं है। भारत और पाकिस्तान की टीमों के बीच हैंडशेक न करने के मामले पुरुषों, महिलाओं और विभिन्न आयु वर्गों के मैचों में देखी गई हैं। इसमें रविवार को दोहा में भारत-ए और पाकिस्तान-ए के बीच खेला गया एसीसी मेंस एशिया कप राइजिंग स्टार्स मैच भी शामिल है। जब एमसीसी के हेड ऑफ क्रिकेट फ्रेजर स्टीवर्ट से पूछा गया कि क्या खिलाड़ियों के हाथ मिलाने से इनकार करने पर खेल भावना को बनाए रखना मुश्किल होता जा रहा है, तो उन्होंने जवाब दिया कि बड़े राजनीतिक मुद्दे कहीं अधिक अहम होते हैं और वे उनके नियंत्रण से बाहर हैं। शारजाह में आईएलटी20 के दौरान स्टीवर्ट ने कहा, 'मुझे लगता है कि कुछ ऐसी स्थितियां होती हैं जो क्रिकेट से परे होती हैं। ये ऐसे स्तर से आती हैं, जहां भू-राजनीतिक मुद्दों पर बात करना मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। ' उन्होंने बताया कि एमसीसी तो यही चाहेगा कि खिलाड़ी आपस में हाथ मिलाएं, लेकिन उसका अधिकार क्षेत्र केवल खेल के दौरान खिलाड़ियों के व्यवहार तक ही सीमित है। उन्होंने आगे कहा, 'हम केवल मैदान पर होने वाली चीजों को नियंत्रित कर सकते हैं, जैसे खिलाड़ी एक-दूसरे का सम्मान करें, अंपायरों और उनके फैसलों का सम्मान करें, और खेल का सम्मान करें। बस इतना ही हमारे नियंत्रण में है। ' स्टीवर्ट ने आगे कहा कि अगर नेताओं या उच्च स्तर से खिलाड़ियों को हाथ न मिलाने का आदेश दिया जाता है, तो एमसीसी इसमें दखल देकर उसे बदल नहीं सकता। उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, 'अगर ऊपर से हैंडशेक न करने के आदेश आते हैं, तो एमसीसी उसे नियंत्रित नहीं कर सकता। हम तो यही चाहेंगे कि खिलाड़ी हाथ मिलाएं, लेकिन हम समझते हैं कि इसके पीछे बड़े मुद्दे हैं, जो हमारे नियंत्रण से पूरी तरह बाहर हैं। '

'इस ट्रॉफी को पाने के लिए मैंने बहुत मेहनत की थी'

एटीपी फाइनल्स का खिताब जीतने के बाद बोले अल्काराज

ट्यूरिन। कार्लोस अल्काराज ने अपनी पहली एटीपी फाइनल्स जीत को एक बेहद निजी उपलब्धि बताया। रविवार को ट्यूरिन में हुए चैंपियनशिप मैच में अलेक्जेंडर ज्वेरेव को 6-2, 7-6(6) से हराने वाले अल्काराज ने इस मुश्किल सीजन में अपनी मदद के लिए अपने परिवार और सपोर्ट स्टाफ को श्रेय दिया। 23 वर्षीय स्पेनिश खिलाड़ी ने बिना कोई मैच हारे अपनी पहली 'ईयर-एंड चैंपियनशिप' (साल के अंत की चैंपियनशिप) जीती। उन्होंने कहा कि यह जीत सिर्फ एक खिताब जीतने से कहीं बढ़कर है, खासकर तब जब इस ट्रॉफी को पाने के सफर में उन्हें शारीरिक परेशानियों और मानसिक दबावों का सामना करना पड़ा था। उन्होंने कहा, 'यह जीत बहुत खास है। यह जीत मेरे लिए, मेरी टीम और मेरे परिवार के लिए सब कुछ है। वे जानते हैं कि मैंने इस पल, इस ट्रॉफी और इस टूर्नामेंट के लिए कितनी मेहनत की है। मैंने इस ट्रॉफी को उठाने के लिए कितनी कड़ी मेहनत की है। इसलिए, आखिरकार यहां इस ट्रॉफी को उठा पाना, एक अद्भुत एहसास है जो मैं अभी महसूस कर रहा हूं। ' एटीपी के अनुसार, मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में अल्काराज ने कहा, 'सच कहूं तो, इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि मैंने, मेरी टीम और मेरे करीबी लोगों ने इस हफ्ते क्या कुछ हासिल किया है। उनके बिना, इस ट्रॉफी को उठाना मुमकिन नहीं होता। ' मैच के आखिरी पॉइंट के बाद ही अल्काराज की भावनाएं साफ



झलक रही थीं। वह कोर्ट पर ही गिर पड़े और फिर अपनी टीम के सदस्यों को गले लगाया। अल्काराज के लिए यह जश्न और भी खास था, क्योंकि उन्होंने बताया कि इस उपलब्धि पर अपने परिवार की प्रतिक्रिया देखकर यह पल और भी यादगार बन गया। अप्रैल में बार्सिलोना एटीपी 500 टूर्नामेंट के दौरान कलाई में चोट लगने के कारण स्पेन के इस खिलाड़ी को चार महीने से ज्यादा समय तक खेल से दूर रहना पड़ा। चोट से उबरने और वापस टूर पर लौटने के लिए उन्हें कोर्ट के बाहर काफी सपोर्ट की जरूरत थी। अल्काराज का मानना है कि इसी सपोर्ट ने उनका आत्मविश्वास वापस लाने और उनमें फिर से प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता जगाने में अहम भूमिका निभाई।

अल्काराज का इंतजार खत्म

अल्काराज ने कहा, 'यह एक ऐसा टूर्नामेंट है जिसे मैं हमेशा से जीतना चाहता था। मैं लंबे समय से इस पल का इंतजार कर रहा था। जब मैंने इसे हासिल किया, तो मुझमें और मेरी टीम में भावनाओं का सैलाब आ गया। मैं उन्हें देख रहा था—वे चिल्ला रहे थे, जश्न मना रहे थे, वे सब कुछ थे। मेरी मां रो रही थीं। वह काफी भावुक इंसान हैं। ' 'उन्हें वहां देखकर, उनके साथ जश्न मनाना और उन्हें गले लगाना- यह सब बहुत शानदार था। मेरे लिए पिछले दो हफ्ते बहुत मुश्किल रहे—दबाव को संभालना, शारीरिक समस्याओं से निपटना, टीम मीटिंग करना, बहुत कठिन फैसले लेना, और कोर्ट के अंदर व बाहर खुद पर काबू रखना।'



थिएटर और ओटीटी, दोनों की अपनी खूबी

दिव्या इन दिनों अपनी फिल्म 'लास्ट मैन इन टावर' को लेकर चर्चा में हैं। इसी सिलसिले में बातचीत में दिव्या ने फिल्म की रिलीज, थिएटर और ओटीटी के अनुभव और अपने करियर से जुड़े कई पहलुओं पर बात की।

ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुंचना ही उद्देश्य
थिएटर में फिल्म रिलीज होने के बाद जब वही फिल्म ओटीटी पर आती है तो उसे नए दर्शक मिलते हैं। क्या दिव्या के लिए भी दोनों माध्यमों का अनुभव अलग है? वह कहती हैं, 'देखिए, असल बात यह है कि आप जितनी ज्यादा ऑडियंस तक पहुंच सकें, वही आपका मुख्य उद्देश्य होता है। आपने एक फिल्म बनाई है और चाहते हैं कि उसे ज्यादा से ज्यादा लोग देखें। पहले उसकी लिमिटेड थिएटर रिलीज हुई, लेकिन अब वह ओटीटी पर आ रही है। ऐसे में बहुत सारे लोग अपने समय और अपनी सुविधा के हिसाब से उसे देखेंगे। वे जिसके साथ देखना चाहते हैं, उसके साथ घर पर आराम से बैठकर फिल्म देखेंगे और अपनी प्रतिक्रिया देंगे। ज्यादा से ज्यादा लोगों को आपका काम देखना चाहिए, यह बहुत जरूरी है। बेशक बड़े पर्दे का अपना जादू है और ओटीटी का अपना। लेकिन मेरे लिए इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। जरूरी यह है कि आपका काम और आपकी कहानी लोगों तक पहुंचे।'

क्या दिव्या भी किसी फिल्म को थिएटर में देखने से चूक जाएं तो उसके ओटीटी पर आने का इंतजार करती हैं?। इस पर वह कहती हैं, 'ऐसा कोई नियम नहीं है। अगर कोई फिल्म मिस हो गई तो बेशक ओटीटी पर आने का इंतजार करते हैं। लेकिन लाइव सिनेमा को कम नहीं आंक सकते। उसका अपना महत्व है। हर कोई उसका इंतजार करता है। वह चाहे बड़ी फिल्म हो, सुपरहिट फिल्म हो या किसी भी तरह की फिल्म हो, जब वह ओटीटी पर आती है तो लोग उसे दोबारा देखते हैं या पहली बार देखते हैं। थिएटर और ओटीटी का यह मेल बहुत खूबसूरत है।'

'चिरैया' के बाद महिलाओं की प्रतिक्रियाएं खास

इस साल दिव्या दत्ता की फिल्म 'लास्ट मैन इन टावर' और 'गजब रात' के साथ वेब सीरीज 'चिरैया' को भी दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। खासकर 'चिरैया' देखने के बाद महिलाओं ने उनसे अपने अनुभव साझा किए। वह कहती हैं, 'यह साल टचवुड बहुत अच्छा रहा है। इन तीनों प्रोजेक्ट के लिए। थिएटर में फिल्में देखने के बाद कई लोग मुझे कहीं भी मिल जाते हैं और अपने अनुभव बताते हैं। 'चिरैया' देखने के बाद लड़कियां जिस तरह मुझसे बात करती हैं, यह बताती हैं कि फिल्म की कहानी ने उन्हें छुआ है और वे उससे खुद को जोड़ पाई हैं, वह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। इस साल मुझे बहुत अच्छी प्रतिक्रियाएं मिली हैं।'

क्या उन्हें कॉमेडी किरदार निभाने का मौका मिलता है? इस सवाल पर हंसते हुए वह कहती हैं, ''यार, कॉमेडी करना मुझे पसंद है, लेकिन मुझे कोई ऑफर ही नहीं करता।'

हालांकि, दिव्या ने कुछ फिल्मों में कॉमेडी की है। वह बताती हैं, 'मैंने 'चिरैया' में भी थोड़ा कॉमेडी किया है। 'शर्माजी की बेटी' में भी किया है। लेकिन फुल फ्लेज्ड कॉमेडी करने में बड़ा मजा आएगा। मुझे वह पसंद है। अभिनय का मजा ही यही है कि आप अलग-अलग तरह की कहानियां कह रहे हैं और अलग-अलग किरदार निभा रहे हैं। कई बार लगातार इंटेंस सीन करके आते हैं तो मन हल्का करने के लिए एक लाफ्टर बहुत अच्छा लगता है।'

महिलाओं के लिए कॉमेडी के मौके कम हैं

क्या महिला कलाकारों को केंद्र में रखकर कॉमेडी फिल्में कम बनती हैं? इस पर दिव्या कहती हैं, 'मुझे नहीं लगता कि फिल्म निर्माता ऐसा कुछ सोचकर डरते हैं। लेकिन हमारे यहां फीमेल सेंट्रिक कॉमेडी ज्यादा लिखी नहीं जाती है। यह बात तो फैक्ट है। मैं चाहूंगी कि महिलाओं को केंद्र में रखकर भी ऐसी कॉमेडी फिल्में बनें, जिनमें वे खुलकर हंसें और दर्शकों को भी हंसाएं।'





बेला के किरदार में फिर दिखेंगी अनन्या पांडे

मशहूर निर्देशक करण जौहर आगामी वेब सीरीज 'कॉल मी बे' के दूसरे सीजन की वापसी के लिए तैयार हैं। मंगलवार को मेकर्स ने सोशल मीडिया पर सीरीज की रिलीज डेट का ऐलान कर दिया है। मेकर्स ने अपने इंस्टाग्राम पर सीरीज की मुख्य अभिनेत्री अनन्या पांडे का वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वह बेला (बे) के किरदार में नजर आ रही हैं। वीडियो पोस्ट कर उन्होंने लिखा, 'दिन को जी भरकर जियो, क्योंकि वह फिर से धमाका करने आ गई है। वेब सीरीज 'कॉल मी बे' का नया सीजन 17 दिसंबर से स्ट्रीम होगा।'

करण जौहर ने वेब सीरीज के दूसरे सीजन को वापस लाने को लेकर बात की। उन्होंने बताया कि नए सीजन में बे (अनन्या के किरदार का नाम) की जिंदगी के अलग-अलग पहलुओं को दिखाया जाएगा, लेकिन पहले सीजन वाला ह्यूमर, इमोशन और मस्ती वाला अंदाज बरकरार रहेगा। उन्होंने प्राइम वीडियो के साथ दोबारा जुड़ने पर खुशी जताई और कहा कि 'बे' (अनन्या के किरदार का नाम) और उसके दोस्तों को एक बार फिर हंसी, इमोशन और धमाल से भरे सफर पर ले जाने के लिए वह काफी उत्साहित हैं।

नए सीजन के बारे में बात करते हुए करण जौहर ने कहा, 'सीजन-1 को मिला प्यार और रिस्पॉन्स इस बात का सबूत है कि दर्शकों ने 'बे' (अनन्या के किरदार का नाम) के उतार-चढ़ाव



भरे सफर और उसकी बेबाक जिंदगी से गहरा जुड़ाव महसूस किया। सीजन 2 के साथ हम उस दुनिया को और आगे ले जाना चाहते थे, 'बे' के नए पहलुओं को दिखाना चाहते थे, लेकिन वो ह्यूमर, दिल और बिंदास अंदाज बरकरार रखना चाहते थे, जिसे सबने खूब पसंद किया था।'

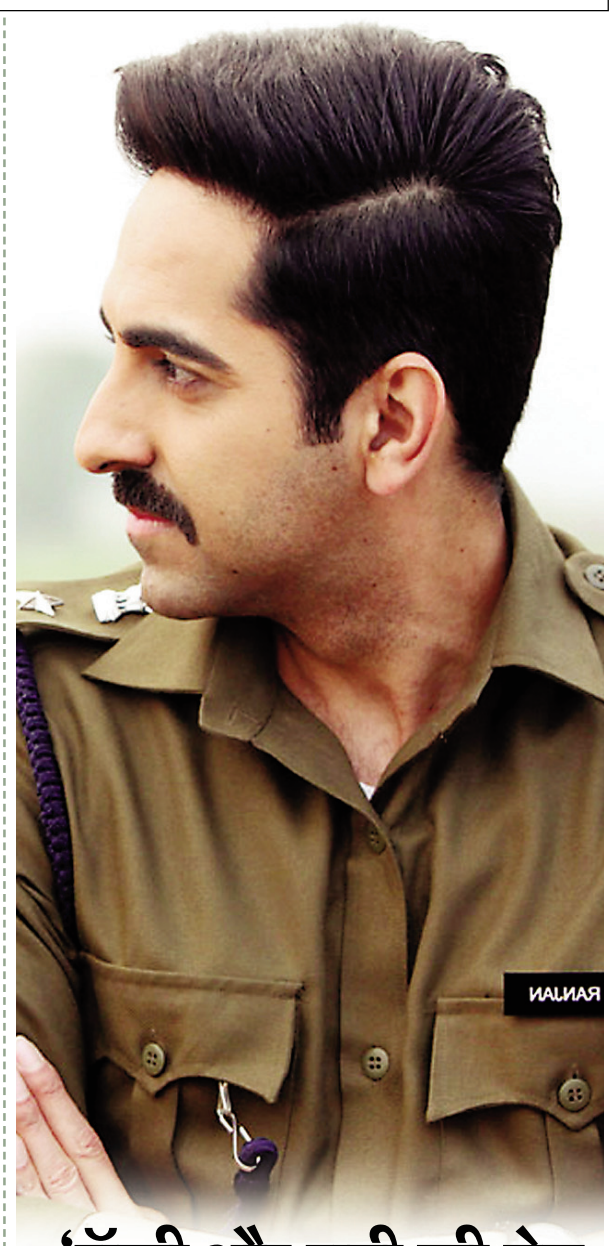

'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' और 'यह प्रेम मोल लिया' की तुलना पर बोले आयुष्मान खुराना

हाल ही में फिल्म 'यह प्रेम मोल लिया' का ट्रेलर लॉन्च हुआ है। इसके बाद से ही फिल्म की तुलना 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' से हो रही थी। मगर इस पर फिल्म के अभिनेता आयुष्मान खुराना ने अपना पक्ष रखा है। उन्होंने बताया कि यह फिल्म करण जौहर की फिल्म से काफी अलग है। मुंबई ने हुए ट्रेलर लॉन्च इवेंट में आयुष्मान खुराना ने दोनों फिल्मों के बीच का फर्क बताया। उन्होंने कहा, 'यह सूरज बड़जात्या की फिल्म है, और प्रेम एक हरी झंडी है। इस फिल्म (ये प्रेम मोल लिया) में, वह अपनी पत्नी के परिवार के लिए खड़ा होता है। रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में रॉकी का किरदार अलग है। प्रेम उससे बहुत अलग है। आप दोनों की तुलना भी नहीं कर सकते।'

फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' का बुधवार को ट्रेलर सामने आया। इसमें दिखाया गया कि प्रेम (आयुष्मान खुराना) अपनी परिवार सहित अपनी पत्नी 'पूर्वा' (शरवरी) के घर जाने का फैसला करता है। वहीं 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में भी कपल शादी से पहले 6 महीने एक दूसरे के घर जाकर रहते हैं। हाल ही में इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया था। इस पौने चार मिनट के ट्रेलर में दिखाया गया है कि आयुष्मान खुराना शरवरी वाघ से शादी करना चाहते हैं। मगर शादी में एक दिक्कत है। शरवरी अपना घर छोड़कर अपने ससुराल नहीं जाना चाहती हैं। उनके मुताबिक उनके घर में सिर्फ महिलाएं ही रहती हैं। सभी की जिम्मेदारी शरवरी पर है। फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' का निर्देशन सूरज बड़जात्या ने किया है। इस फिल्म में आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ मुख्य भूमिकाओं में हैं। शरवरी पहली बार आयुष्मान के साथ स्क्रीन शेयर कर रही हैं। यह फिल्म 27 नवंबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। यह फिल्म राजश्री प्रोडक्शन्स और महावीर जैन फिल्म्स के बैनर तले बनी है।



यशराज बैनर की हॉरर फिल्म में नजर आएंगे वरुण धवन

अभिनेता वरुण धवन को ज्यादातर कॉमेडी और रोमांटिक फिल्मों में देखा गया है। मगर अब वह जल्द हॉरर फिल्म में नजर आएंगे। इस फिल्म से यशराज बैनर जल्द हॉरर वर्ल्ड में एंट्री लेने वाला है। वहीं मेकर्स ने अब तक इस फिल्म के टाइटल से पर्दा नहीं उठाया। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस आगामी हॉरर फिल्म में वरुण धवन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म साल 31 मार्च 2028 में रिलीज होगी। हालांकि अभी फिल्म की कहानी, पोस्टर, और बाकी की कास्ट की कोई जानकारी मेकर्स द्वारा आधिकारिक रूप से साझा नहीं की गई है। इस फिल्म का निर्देशन अभय पन्नू करेंगे। उन्होंने ही इस फिल्म की कहानी भी लिखी है। अभय पन्नू इससे पहले मशहूर सीरीज 'रॉकेट बॉयज' का भी निर्देशन कर चुके हैं। 'रॉकेट बॉयज' के बाद यह अभय का दूसरा बड़ा प्रोजेक्ट होगा। वहीं दूसरी तरफ यशराज बैनर भी लगातार नए निर्देशकों के साथ बड़े बजट की फिल्मों का निर्माण कर रहा है।

पहली बार बैनर लेगा हॉरर एंट्री
फिल्म की सबसे खास बात यह है कि इसके जरिए यशराज पहली बार हॉरर जोनर में कदम रखेगा। इससे पहले बैनर ने स्पाई समेत लगभग हर जॉनर में फिल्म बनाई हैं। बताते चलें कि वरुण की यशराज के साथ यह दूसरी फिल्म है। इससे पहले वह बैनर के साथ 'सुई धागा' में काम कर चुके हैं।

पिता शाहरुख से तुलना होने पर बोले आर्यन खान

फिल्ममेकर आर्यन खान को 'टाइम 100 नेक्ट इंडिया' के कवर पेज पर जगह मिली है। हाल ही में हुए एक इंटरव्यू के दौरान आर्यन से पिता शाहरुख खान के बारे में सवाल किये गए। उनसे पूछा गया कि पिता सुपरस्टार शाहरुख खान से तुलना पर वह क्या राय रखते हैं?

आर्यन खान ने पिता से उनकी तुलना होने पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा, 'हर किसी की उनसे तुलना की गई है। अगर मैं भी उन लोगों में से एक हूं, तो इसमें कोई परेशानी नहीं है। नंबर-1 इंसान से तुलना होना मेरे लिए तारीफ की बात है। वह एक अलग ही शख्सियत हैं।'

अपनी बातचीत में आगे आर्यन खान ने सलमान खान से जुड़ा एक खास किस्सा सुनाया। सलमान खान ने आर्यन की सीरीज 'बैड्स ऑफ बॉलीवुड' में कैमियो किया था। इस पर आर्यन ने बताया कि सीरीज की शूटिंग के दौरान उन्हें पता चला कि सलमान भी उसी लोकेशन पर मौजूद हैं। उन्होंने सलमान की टीम को मैसेज भेजकर पूछा कि क्या आर्यन उनसे मिलने आ सकते हैं, लेकिन सलमान ने खुद आर्यन के सेट पर आने की बात कह दी। इसके बाद उन्होंने अपने



सिनेमैटोग्राफर को तैयार रहने कह दिया। जब सलमान आए तब उन्हें वहीं डायलॉग देकर उनका कैमियो शूट कर लिया गया। आर्यन खान के अलावा एक्ट्रेस आलिया भट्ट, पायल कपाड़िया और थेजा रियो इस मैग्जीन के कवर का हिस्सा हैं। वहीं दिलजीत दोसांझ, अनिरुद्ध रविचंदर, सामंथा रुथ प्रभु, साई पल्लवी, विक्की कौशल और वैभव सूर्यवंशी जैसे नाम भी शामिल हैं।

बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रहीं हैं कोमल पावस्कर

मुंबई बॉलीवुड में कदम रखने से पहले ही कोमल पावस्कर ने परफॉर्मिंग आर्ट्स की दुनिया में अपनी एक मजबूत नींव तैयार कर ली है। न्यूयॉर्क फिल्म अकादमी से एक्टिंग और फिल्ममेकिंग की औपचारिक शिक्षा हासिल करने से लेकर डांस के छह अलग-अलग फॉर्म्स में महारत हासिल करने और पारंपरिक परफॉर्मिंग आर्ट्स से आगे बढ़कर कई अन्य कौशल सीखने तक, कोमल का सफर उनके जुनून, बहुमुखी प्रतिभा और अपने काम के प्रति समर्पण को दर्शाता है। गौरतलब है कि थिएटर से उनका जुड़ाव काफी कम उम्र में ही हो गया था। इस अनुभव ने उन्हें अपनी पढ़ाई के साथ-साथ लाइव परफॉर्मेंस की बारीकियों, अनुशासन और चुनौतियों को समझने का अवसर दिया। एक्टिंग के साथ-साथ कोमल ने छह अलग-अलग डांस फॉर्म्स में ट्रेनिंग ली है, जिनमें जैज़ फंक, कमर्शियल हिप-हॉप, बेली डांस, कथक, साल्सा और बॉलीवुड डांस शामिल हैं। डांस की इन विविध शैलियों में प्रशिक्षण ने उन्हें मूवमेंट, रिदम और एक्सप्रेशन की बेहतर समझ दी है, जिससे एक परफॉर्मर के तौर पर उनकी नींव और मजबूत हुई है।

कोमल को खास बनाने वाली बात सिर्फ एक्टिंग और डांस तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने इसके अलावा भी कई दिलचस्प क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को निखारा है। वह राइफल शूटिंग और घुड़सवारी में भी प्रशिक्षित हैं। शूटिंग में जरूरी सटीकता से लेकर घुड़सवारी के लिए आवश्यक शारीरिक अनुशासन तक, उनके ये हुनर अलग-अलग विधाओं को सीखने और खुद को लगातार चुनौती देने की उनकी इच्छा को दर्शाते हैं। जहां कई नए कलाकार अपनी डेब्यू फिल्मों के जरिए दर्शकों के सामने आते हैं, वहीं कोमल का सफर उस लंबे अभ्यास और तैयारी की झलक देता है, जो किसी बड़े मौके से पहले की जाती है। कोमल अब फिल्ममेकर विकास बहल की आगामी रोमांटिक थ्रिलर इकाई से बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही हैं, जिसमें वह राघव जुयाल के अपोजिट नजर आएंगी।

रेत चोरी की जांच के बीच भाजपा विधायक शैलेष मेहता का कथित बयान विवादों में, बोले– 'पार्टी का आदमी होगा तो बचा लेंगे! '

महानगर मेट्रो ब्यूरो

वडोदरा। गुजरात में अवैध रेत खनन और खनिज चोरी का मुद्दा एक बार फिर राजनीतिक चर्चा के केंद्र में आ गया है। वडोदरा के भाजपा विधायक शैलेष मेहता (बूटाभाई) का एक कथित बयान सोशल मीडिया पर प्रसारित होने के बाद विवाद खड़ा हो गया है। प्रसारित वीडियो में उन्हें कथित तौर पर यह कहते हुए सुना जा रहा है कि रेत चोरी की जांच चल रही है और यदि इसमें भाजपा का कोई व्यक्ति शामिल पाया जाता है, तो उसे बचा लिया जाएगा। इस कथित टिप्पणी को लेकर विपक्षी दलों और स्थानीय स्तर पर सवाल उठाए जा रहे हैं। यह मामला इसलिए भी चर्चा में है, क्योंकि वडोदरा और आसपास के क्षेत्रों में रेत खनन, उसके परिवहन और खनिज विभाग की कार्रवाई को लेकर पहले से ही विवाद सामने आते रहे हैं। ऐसे माहौल में सत्तारूढ़ दल के एक विधायक के नाम से प्रसारित इस बयान ने जांच की निष्पक्षता, राजनीतिक हस्तक्षेप और प्रशासनिक जवाबदेही से जुड़े सवालों को फिर से सामने ला दिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, वडोदरा और आसपास के क्षेत्रों में अवैध रेत खनन तथा रेत के परिवहन को लेकर पिछले कुछ समय से विवाद और शिकायतें सामने आती



रही हैं। खनिज विभाग की ओर से इस मामले में जांच किए जाने की बात भी सामने आई है। इसी बीच विधायक शैलेष मेहता का कथित बयान सामने आने से राजनीतिक बहस तेज हो गई है। प्रसारित वीडियो में विधायक की टिप्पणी को लेकर यह सवाल उठ रहा है कि क्या किसी राजनीतिक दल से जुड़े व्यक्ति के मामले में जांच के दौरान अलग रवैया अपनाया जाएगा? विपक्षी नेताओं और जागरूक नागरिकों का कहना है कि खनिज चोरी जैसे मामलों में कार्रवाई का आधार व्यक्ति की राजनीतिक पहचान नहीं, बल्कि उपलब्ध साक्ष्य और कानून होना चाहिए।

हालांकि, किसी भी बयान का सही अर्थ समझने के लिए उसका पूरा संदर्भ, उससे पहले और बाद में कही गई बातें तथा संबंधित घटनाक्रम जानना जरूरी है। फिलहाल उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह स्पष्ट नहीं है कि विधायक ने यह टिप्पणी किस परिस्थिति में और किस संदर्भ में की थी। इसलिए प्रसारित अंश को ही पूरे बयान का अंतिम आधार नहीं माना जा सकता।

विपक्ष ने उठाए निष्पक्ष जांच और राजनीतिक संरक्षण के सवाल

कथित बयान सामने आने के बाद विपक्षी नेताओं ने भाजपा और राज्य सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि यदि किसी जनप्रतिनिधि की ओर से जांच के दायरे में आने वाले व्यक्ति को राजनीतिक आधार पर बचाने जैसी बात कही जाती है, तो इससे प्रशासनिक कार्रवाई की निष्पक्षता को लेकर संदेह पैदा हो सकता है। विपक्ष का कहना है कि रेत खनन से जुड़े मामलों में खनिज विभाग, पुलिस और स्थानीय प्रशासन को बिना किसी राजनीतिक दबाव के काम करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के खिलाफ अवैध खनन, रेत चोरी या नियमों के उल्लंघन के प्रमाण मिलते हैं, तो उसके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए। इसमें यह नहीं देखा जाना चाहिए कि संबंधित व्यक्ति किस दल से जुड़ा है या उसका किसी जनप्रतिनिधि से क्या संबंध है। दूसरी ओर, इस पूरे मामले में विधायक का आधिकारिक पक्ष और वीडियो का पूरा संदर्भ सामने आना भी जरूरी है, ताकि आरोपों और वास्तविक स्थिति के बीच अंतर स्पष्ट हो सके।

जनता के सामने उठ रहे हैं कई अहम सवाल

इस घटनाक्रम के बाद स्थानीय स्तर पर कई सवाल चर्चा में हैं। क्या रेत चोरी की जांच सभी संबंधित लोगों के खिलाफ समान रूप से हो रही है? क्या खनिज विभाग को जांच के दौरान किसी प्रकार का राजनीतिक दबाव झेलना पड़ रहा है? यदि किसी प्रभावशाली व्यक्ति का नाम जांच में सामने आता है, तो क्या उसके खिलाफ भी सामान्य प्रक्रिया के तहत कार्रवाई होगी? और क्या प्रशासन इस पूरे मामले में अपनी कार्यवाही तथा जांच की स्थिति सार्वजनिक करेगा? ये सवाल केवल एक विधायक के कथित बयान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, सरकारी राजस्व और कानून के समान अनुपालन से भी जुड़े हैं।

बोरसद में खनिज माफियाओं के जासूसी नेटवर्क का खुलासा, अधिकारियों की निगरानी करते दो युवक पकड़े गए

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बोरसद (आणंद)। आणंद जिले के बोरसद क्षेत्र में कथित अवैध रेत खनन और अधिक भार वाले वाहनों के संचालन से जुड़े एक संगठित नेटवर्क का मामला सामने आया है। आरोप है कि खनिज माफिया खनन विभाग और पुलिस की कार्रवाई से बचने के लिए सरकारी अधिकारियों की गतिविधियों पर लगातार नजर रख रहे थे। अधिकारियों की निगरानी करने और उनकी आवाजाही की जानकारी संबंधित लोगों तक पहुंचाने के आरोप में दो युवकों को पकड़े जाने के बाद इस पूरे मामले में हलचल मच गई है। पकड़े गए युवकों के मोबाइल फोन से एक विशेष व्हाट्सऐप समूह की जानकारी मिलने के बाद पुलिस अब इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की भूमिका की जांच कर रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, बोरसद क्षेत्र में महीसागर नदी के तल से कथित रूप से अवैध रेत खनन किया जा रहा था। इसके बाद रेत से भरे अधिक भार वाले डंपरों के माध्यम से परिवहन किए जाने का आरोप है। इस गतिविधि पर अंकुश लगाने के लिए जब भी खनिज विभाग या पुलिस की टीम जांच और कार्रवाई के लिए निकलती थी, तो कथित तौर पर इसकी सूचना पहले ही संबंधित लोगों तक पहुंच जाती थी। परिणामस्वरूप, जांच दल के मौके पर पहुंचने से पहले ही डंपरों को वहां से हटा दिया जाता था या उनके रास्ते बदल दिए जाते थे। लगातार इस तरह की घटनाएं सामने आने के बाद अधिकारियों को संदेह हुआ कि उनकी गतिविधियों पर किसी तरह से नजर रखी जा रही है। इसी संदेह के आधार पर निगरानी की गई। इस दौरान दो युवकों पर सरकारी अधिकारियों के वाहनों का पीछा करने और उनकी आवाजाही पर नजर रखने का आरोप सामने आया। बताया जा रहा है कि ये युवक अधिकारियों के कार्यालय से निकलने, जांच के लिए जाने और उनके संभावित गंतव्य तक पहुंचने की जानकारी जुटा रहे थे। बाद में यह जानकारी कथित रूप से अवैध रेत परिवहन से जुड़े लोगों तक पहुंचाई जाती थी। दोनों युवकों को पकड़े जाने के बाद पुलिस ने उनके मोबाइल फोन की जांच शुरू की, जिसमें एक विशेष व्हाट्सऐप समूह का पता चला।

मोबाइल में मिले व्हाट्सऐप समूह से सामने आया कथित नेटवर्क

पुलिस की प्रारंभिक जांच में मोबाइल फोन पर मिले व्हाट्सऐप समूह को इस पूरे मामले की महत्वपूर्ण कड़ी माना जा रहा है। आरोप है कि इस समूह का इस्तेमाल सरकारी अधिकारियों की गतिविधियों और उनके वर्तमान स्थान की जानकारी साझा करने के लिए किया जाता था। बताया जा रहा है कि इसमें कथित खनिज माफिया से जुड़े लोग, डंपर चालक और निगरानी करने वाले व्यक्ति शामिल थे। खनिज विभाग के अधिकारी या पुलिस की टीम जैसे ही कार्यालय से जांच के लिए रवाना होती, उनकी गतिविधियों से जुड़ी जानकारी समूह में साझा कर दी जाती थी। इस सूचना के आधार पर कथित रूप से रेत से भरे डंपरों के चालकों को सतर्क कर दिया जाता था। इसके बाद वाहन चालकों को रास्ता बदलने, वाहन को किसी दूसरे स्थान पर खड़ा करने या जांच दल के गुजरने तक इंतजार करने की सूचना मिलने का आरोप है। इस तरह अधिकारियों की कार्रवाई से पहले ही परिवहन से जुड़े लोगों को सतर्क कर दिया जाता था। यदि जांच में इन आरोपों की पुष्टि होती है, तो यह मामला केवल अवैध खनन और रेत परिवहन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सरकारी कार्रवाई की जानकारी जुटाकर उसे विफल करने के कथित संगठित प्रयास के रूप में भी देखा जाएगा।

करजण में अवैध रेत खनन के आरोपों से मचा घमासान, लीज रद्द होने के बावजूद नर्मदा नदी में मशीनों के इस्तेमाल का दावा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

वडोदरा/करजण। वडोदरा जिले के करजण क्षेत्र में नर्मदा नदी के तट पर कथित अवैध रेत और मिट्टी खनन का मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का आरोप है कि राज्य सरकार की ओर से क्षेत्र में रेत और मिट्टी की कई खनन पट्टियां रद्द किए जाने के बावजूद खनन गतिविधियां बिना किसी रोक-टोक के जारी हैं। इस मामले में स्थानीय स्तर पर कथित राजनीतिक संरक्षण और प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, नदी के पात्र में खनन के लिए प्रतिबंधित बताई जा रही बजरेनुमा मशीनों और भारी जलचालित मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। आरोप है कि इन मशीनों के जरिए दिन-रात रेत निकाली जा रही है। इसके साथ ही परिवहन नियमों के उल्लंघन का भी आरोप लगाया गया है। बताया जा रहा है कि 23 टन क्षमता वाले राजस्व शुल्क पास पर 54 टन से अधिक रेत भरकर वाहन चलाए जा रहे हैं। यह भी आरोप है कि एक ही पास का उपयोग कई वाहनों के संचालन के लिए किया जा रहा है, जिससे सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंच सकता है। इस कथित खनन तंत्र को लेकर क्षेत्र में कई तरह की चर्चाएं हैं। स्थानीय सूत्रों ने घुघो भरवाड़ और गोकुल भरवाड़ नामक व्यक्तियों पर इस नेटवर्क के संचालन का आरोप लगाया है। स्थानीय लोगों और वाहन संचालकों के बीच यह भी चर्चा है कि जिन वाहनों पर 'बापजी' लिखा होता है, उन्हें जांच के दौरान कथित रूप से विशेष छूट मिलती है। आरोप यह भी है कि करजण के विधायक अक्षय पटेल के नाम का हवाला देकर तथा वाहनों पर इस विशेष पहचान का उपयोग करने के बदले अन्य वाहन मालिकों से कथित तौर पर प्रतिमाह 60 हजार रुपये तक की वसूली की जाती है। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। मामले में सबसे अधिक सवाल वडोदरा के खान एवं खनिज विभाग की कार्यप्रणाली पर उठ रहे हैं। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि विभाग के अधिकारी श्री गामित को अवैध खनन और क्षमता से अधिक रेत परिवहन के संबंध में कई बार लिखित और मौखिक शिकायतें दी गईं, लेकिन इसके बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई दिखाई नहीं दी है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि कथित आर्थिक लेन-देन के जरिए खनन से जुड़े लोगों ने प्रशासनिक तंत्र को प्रभावित कर रखा है। इसी कारण जिलाधिकारी कार्यालय, उपखंड अधिकारी, स्थानीय पुलिस, भूविज्ञान एवं खनन विभाग के आयुक्त धवल पटेल और गांधीनगर की उड़नदस्ता टीम की ओर से भी अब तक कोई बड़ी कार्रवाई सामने नहीं आई है। हालांकि, इन आरोपों की पुष्टि संबंधित विभागों की जांच और आधिकारिक पक्ष सामने आने के बाद ही हो सकेगी।

एसजी हाईवे के पुल पर 15 दिन में ही मरम्मत की नौबत, महापौर के 50 साल तक मजबूत रहने के दावे पर उठे सवाल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। अहमदाबाद की पहचान माने जाने वाले एसजी हाईवे पर बुनियादी ढांचे के विकास और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। कुछ दिन पहले ही शहर के महापौर ने दावा किया था कि एसजी हाईवे पर नवनिर्मित पुल इतना मजबूत है कि अगले 50 वर्षों तक उसे कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन इस दावे के महज 15 दिन के भीतर ही पुल पर खामियां सामने आने और मरम्मत की आवश्यकता पड़ने से निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठने लगे हैं। जानकारी के अनुसार, एसजी हाईवे पर हाल ही में तैयार हुए पुल के लोकार्पण के दौरान जनप्रतिनिधियों और संबंधित अधिकारियों ने इसकी मजबूती और गुणवत्ता को लेकर बड़े-बड़े दावे किए थे। महापौर ने भी कहा था कि यह पुल अगले 50 वर्षों तक मजबूती से खड़ा रहेगा। हालांकि, निर्माण के महज 15 दिन बाद ही पुल की सतह पर खामियां सामने आने के



बाद संबंधित तंत्र को तत्काल मरम्मत का काम शुरू करना पड़ा। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि यदि किसी पुल के निर्माण के केवल 15 दिन बाद ही मरम्मत की आवश्यकता पड़ जाए, तो उसकी निर्माण सामग्री और तकनीकी गुणवत्ता कैसी रही होगी? क्या निर्माण कार्य की जांच और गुणवत्ता परीक्षण सही तरीके से किया गया था? साथ ही, पुल को मजबूत और सुरक्षित घोषित करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी भी तय होनी चाहिए। प्रदेश में सड़कों, पुलों और अन्य विकास परियोजनाओं पर जनता की गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। इसके बावजूद यदि निर्माण के कुछ ही दिनों में मरम्मत की नौबत आ जाए, तो यह संबंधित विभागों की कार्यप्रणाली और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करता है। इस पुल से प्रतिदिन बड़ी संख्या में वाहन गुजरते हैं। ऐसे में निर्माण संबंधी खामियां सामने आने पर वाहन चालकों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। यदि भविष्य में कोई दुर्घटना होती है, तो इसकी जिम्मेदारी किसकी होगी, यह भी बड़ा सवाल है। इस मामले में संबंधित तंत्र से उच्चस्तरीय तकनीकी जांच कराने की मांग उठ रही है। जांच में यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि पुल की सतह पर खामियां किन कारणों से सामने आईं और निर्माण के दौरान गुणवत्ता के निर्धारित मानकों का पालन हुआ था या नहीं। साथ ही, निर्माण कार्य की गुणवत्ता प्रमाणित करने वाले अभियंताओं की भूमिका की भी जांच होनी चाहिए। यदि जांच में ठेकेदार की लापरवाही या घटिया निर्माण की पुष्टि होती है, तो उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

करजण को 8.61 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक बस डिपो की सौगात, मालसर और शिनोर रेलमार्ग के लंबित सवालों पर सांसद मनसुख वसावा से जवाब-तलब

महानगर मेट्रो ब्यूरो

करजण। वडोदरा जिले के करजण क्षेत्र के विकास को लेकर एक बड़ी खबर सामने आई है। यहां 8.61 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक सुविधाओं से युक्त नए राज्य परिवहन बस डिपो के निर्माण की तैयारी तेज हो गई है। इस आधुनिक बस अड्डे के बनने से यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलने की उम्मीद है। हालांकि, इस विकास कार्य के बीच मालसर और शिनोर रेलवे लाइन की वर्षों से लंबित मांग को लेकर राजनीतिक सरगर्मी भी बढ़ गई है। स्थानीय नागरिकों और जनप्रतिनिधियों ने सांसद मनसुख वसावा के सामने इन परियोजनाओं में हो रही देरी का मुद्दा उठाया।

8.61 करोड़ रुपये से बनेगा आधुनिक बस डिपो

करजण के यात्रियों और नागरिकों को बेहतर परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार की ओर से आधुनिक बस डिपो की सौगात दी जा रही है। इस परियोजना के अंतर्गत यात्रियों के लिए विशाल प्रतीक्षालय, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था, महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग शौचालय, डिजिटल सूचना पट्ट तथा बसों के आवागमन के लिए विस्तृत मंच



तैयार किए जाएंगे। पुराने और जर्जर बस डिपो के कारण यात्रियों को लंबे समय से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में नए बस डिपो के निर्माण से यात्रियों को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक परिवहन व्यवस्था मिलने की उम्मीद है।

मालसर और शिनोर रेलव ` परियोजनाओं पर उठे सवाल

एक ओर नए बस डिपो को विकास की बड़ी उपलब्धि बताया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर मालसर और शिनोर रेलवे लाइन की लंबित मांग को लेकर स्थानीय लोगों की नाराजगी भी सामने आ रही है। स्थानीय नागरिकों और क्षेत्र के प्रमुख लोगों ने सांसद मनसुख वसावा से सवाल किया कि इन रेलवे परियोजनाओं को पूरा होने में आखिर इतना समय क्यों लग रहा है। क्षेत्रवासियों की लंबे समय से मांग है कि मालसर और शिनोर को रेलवे नेटवर्क से जोड़ा जाए, ताकि स्थानीय व्यापार, उद्योग और आम नागरिकों की आवाजाही को सुविधा मिल सके। इन परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति और देरी के कारणों को लेकर सवाल उठने पर सांसद मनसुख वसावा ने भी अपना पक्ष रखा। उन्होंने अपने अंदाज में स्थिति स्पष्ट करते हुए रेलवे विभाग और सरकार की ओर से चल रही कार्यवाही की जानकारी दी।

विकास के साथ लंबित मांगें पूरी होने की उम्मीद

करजण में नए बस डिपो का निर्माण निश्चित रूप से यात्रियों की सुविधा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। लेकिन क्षेत्र के समग्र विकास के लिए मालसर और शिनोर रेलवे परियोजनाओं का पूरा होना भी उतना ही आवश्यक है। स्थानीय लोगों की अपेक्षा है कि बस डिपो के निर्माण के साथ-साथ रेलवे से जुड़ी वर्षों पुरानी मांगों पर भी ठोस प्रगति हो। देखना होगा कि नए बस डिपो शिलान्यास के साथ मालसर रेलवे को लेकर कब तक कोई ठोस निर्णय सामने आता है।

CATC-144 एनसीसी शिविर में रस्साकशी प्रतियोगिता आयोजित, चार्ली कंपनी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। 38 छत्तीसगढ़ बटालियन एनसीसी, राजनांदगांव के तत्वावधान में 16 नवंबर से 25 नवंबर 2026 तक संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर CATC-144 का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में लगभग 350 एनसीसी कैडेट प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। शिविर का संचालन कमान अधिकारी कर्नल प्रवल, लेफ्टिनेंट कर्नल संजेश कुमार भवानी तथा सूबेदार मेजर सतवर्ग सिंह के नेतृत्व, मार्गदर्शन और निर्देशन में किया जा रहा है। शिविर में सभी कैडेटों को अल्फा, ब्रावो, चार्ली और डेल्टा नाम की चार कंपनियों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक कंपनी में सूबेदार, पीआई स्टाफ, हवलदार और एएनओ को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। सभी अधिकारी और कर्मचारी अपनी-अपनी कंपनियों के कैडेटों का मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। इस व्यवस्था का उद्देश्य कैडेटों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आपसी सहयोग, प्रतिस्पर्धा की भावना और सामूहिक कार्यशैली का विकास करना है। शिविर के चौथे दिन चारों कंपनियों के बीच रस्साकशी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इसमें सभी कंपनियों के कैडेटों ने उत्साह और खेल भावना के साथ हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में सूबेदार दलजीत सिंह के नेतृत्व में चार्ली कंपनी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं, सूबेदार जसविंदर सिंह के नेतृत्व में अल्फा कंपनी द्वितीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता के दौरान दोनों कंपनियों के कैडेटों ने बेहतर तालमेल, सामूहिक शक्ति, धैर्य और एकजुटता का परिचय दिया। संबंधित कंपनियों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने कैडेटों का उत्साहवर्धन कर उनका मनोबल बढ़ाया। शिविर में आयोजित इस प्रकार की प्रतियोगिताएं कैडेटों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामूहिक भावना को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अहमदाबाद में गुरु नानक जयंती पर निकली भव्य नगर शोभायात्रा, सिख युवाओं के गतका प्रदर्शन ने मोहा लोगों का मन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। सिख धर्म के प्रथम गुरु और मानवता, प्रेम तथा भाईचारे का संदेश देने वाले श्री गुरु नानक देव जी के 557वें प्रकाश पर्व (गुरु नानक जयंती) के पावन अवसर पर अहमदाबाद शहर में श्रद्धा, उत्साह और भक्ति का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। इस अवसर पर शहर में भव्य नगर शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में सिख समाज के श्रद्धालुओं सहित शहर के नागरिकों ने भाग लिया। शोभायात्रा के दौरान 'वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह' के जयकारों से पूरा वातावरण गूंज उठा। इस आयोजन में सबसे बड़ा आकर्षण सिख युवाओं द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक युद्धकला 'गतका' का प्रदर्शन रहा। युवाओं के शानदार कौशल और अनुशासित प्रस्तुतियों को देखकर मार्ग के दोनों ओर मौजूद लोग मंत्रमुग्ध हो गए।



सिख युवाओं के गतका प्रदर्शन ने बढ़ाया उत्साह

नगर शोभायात्रा के दौरान जब सिख युवाओं ने अपनी पारंपरिक युद्धकला गतका का प्रदर्शन शुरू किया, तो पूरे वातावरण में उत्साह और जोश का संचार हो गया। ढोल-नगाड़ों की गूंज और वीरता से जुड़े जयकारों के बीच युवाओं ने तलवारबाजी, लाठी संचालन तथा शारीरिक कौशल से जुड़े विभिन्न करतब प्रस्तुत किए। उनके बीच बेहतर तालमेल, अनुशासन और आत्मविश्वास देखने को मिला। सिख परंपरा में गतका को केवल युद्धकला ही नहीं, बल्कि आत्मरक्षा, अनुशासन और साहस से जुड़ी कला के रूप में भी महत्व दिया जाता है। सिख गुरुओं की शिक्षाओं में धर्म, न्याय और जरूरतमंदों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने का संदेश मिलता है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए युवाओं ने गतका के विभिन्न दांव-पेंच प्रस्तुत किए। तलवारों के कौशलपूर्ण प्रदर्शन और युवाओं की फुर्ती ने दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। उपस्थित लोगों ने तालियां बजाकर युवाओं का उत्साहवर्धन किया।

गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र पालकी के साथ निकली शोभायात्रा

इस भव्य नगर शोभायात्रा में सिख समाज की धार्मिक आस्था और पंजाबी संस्कृति की सुंदर झलक देखने को मिली। गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र पालकी को विशेष रूप से सजाया गया था। शोभायात्रा में पारंपरिक वेशभूषा में शामिल श्रद्धालु, महिलाएं और बच्चे धार्मिक उत्साह के साथ आगे बढ़ रहे थे। इस दौरान श्रद्धालुओं ने शब्द कीर्तन प्रस्तुत किए और गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का स्मरण किया।

गुजरात की राजनीति में हलचल के संकेत? अल्पेश ठाकोर की खामोशी के पीछे क्या है राज?



महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात की राजनीति में जब भी बड़े बदलाव और नए राजनीतिक समीकरणों की चर्चा होती है, तब अल्पेश ठाकोर का नाम भी सुर्खियों में आ जाता है। आंदोलन के रास्ते राजनीति की मुख्यधारा में आए और अपने आक्रामक अंदाज के लिए पहचाने जाने वाले अल्पेश ठाकोर इन दिनों जिस तरह सार्वजनिक रूप से कम सक्रिय दिखाई दे रहे हैं, उससे राजनीतिक गलियारों में कई तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। आमतौर पर विभिन्न मुद्दों पर बेबाकी से अपनी बात रखने वाले अल्पेश ठाकोर की मौजूदा चुप्पी को लेकर सवाल उठ रहे हैं। राजनीतिक हलकों में यह चर्चा है कि क्या उनकी खामोशी किसी नई रणनीति का हिस्सा है या फिर इसके पीछे संगठन से जुड़ी कोई नाराजगी अथवा राजनीतिक परिस्थिति है? हालांकि, इन चर्चाओं की अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। अल्पेश ठाकोर का राजनीतिक सफर कई उतार-चढ़ाव और अप्रत्याशित मोड़ों से गुजरा है। क्षत्रिय-ठाकोर सेना के माध्यम से उन्होंने गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों और ओबीसी वर्ग में अपनी पहचान बनाई। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस का दामन थामा और विधायक बने। बाद में राजनीतिक परिस्थितियों में बदलाव के बीच उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का रुख किया। भाजपा में शामिल होने के बाद भी वे राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय दिखाई देते रहे। हालांकि, पिछले कुछ समय से सार्वजनिक मंचों पर उनकी कम मौजूदगी और बड़े राजनीतिक मुद्दों पर सीमित प्रतिक्रिया को लेकर चर्चाएं तेज हुई हैं।

खामोशी के पीछे संभावित राजनीतिक कारण

राजनीतिक विश्लेषकों और गांधीनगर के राजनीतिक गलियारों में चल रही चर्चाओं के आधार पर उनकी चुप्पी के पीछे कुछ संभावनाएं जताई जा रही हैं। पहली संभावना सरकार या संगठन में किसी बड़ी जिम्मेदारी से जुड़ी है। जब भी मंत्रिमंडल विस्तार या संगठन में बदलाव की चर्चा होती है, तब ओबीसी वर्ग के प्रमुख चेहरों में अल्पेश ठाकोर का नाम भी लिया जाता है। ऐसे में कुछ लोग इसे नई जिम्मेदारी की संभावित प्रतीक्षा से जोड़कर देख रहे हैं। हालांकि, इस संबंध में कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। दूसरी संभावना उत्तर गुजरात की राजनीति में स्थानीय स्तर पर चलने वाली राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और संगठनात्मक समीकरणों से जुड़ी मानी जा रही है। चर्चा है कि वे किसी विवाद में उलझने के बजाय पार्टी की संगठनात्मक मर्यादा के भीतर रहकर काम करने की रणनीति अपना रहे हों। तीसरी संभावना अपने सामाजिक आधार और संगठन को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करने की है। माना जा रहा है कि वे सार्वजनिक बयानबाजी से दूरी बनाकर ठाकोर समाज और अपने संगठनात्मक संपर्कों पर अधिक ध्यान दे रहे हों। हालांकि, यह भी फिलहाल राजनीतिक अटकलों का हिस्सा है।

नई भूमिका या सामान्य राजनीतिक विराम?

गुजरात की राजनीति में अल्पेश ठाकोर की पहचान एक ऐसे नेता के रूप में रही है, जिन्होंने आंदोलन के माध्यम से अपनी राजनीतिक जमीन तैयार की। ऐसे में उनकी मौजूदा सक्रियता को लेकर समर्थकों और राजनीतिक विरोधियों के बीच चर्चा होना स्वाभाविक है। सामाजिक माध्यमों पर भी उनकी भूमिका और भविष्य की राजनीतिक दिशा को लेकर अलग-अलग विचार सामने आ रहे हैं। अब सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि अल्पेश ठाकोर आने वाले दिनों में सार्वजनिक रूप से कितने सक्रिय होते हैं और पार्टी तथा समाज के बीच अपनी भूमिका को किस तरह आगे बढ़ाते हैं। फिलहाल उनकी चुप्पी के पीछे किसी बड़ी राजनीतिक रणनीति या नाराजगी का निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी। आने वाले घटनाक्रम ही स्पष्ट कर पाएंगे कि यह महज एक राजनीतिक विराम है या किसी नई भूमिका की तैयारी।

printed, Published and Owned by SARABJIT MAKAN and Printed by ILEVAN HASMUKHRAI THAKAR Printed at Jay Graphics & Printers, C/15, Vikram Chambers, Ashram Road, Ahmedabd - 380009. and published from F/1 first floor, rajas apartment, near old railway crossing, maninagar east maninagar, Ahmedabad, Gujarat-380008. Editor SARABJIT MAKAN, Mo.: 9638877700, 9662420070.